हिन्दी दैनिक

प्रत्यूष नवबिहार

जोहार

रांची संस्करण

www.tezraftarlive.com
Email-navbiharjh@gmail.com

रांची, पटना और दिल्ली से प्रकाशित

रांची • शुक्रवार • 07.02.2025 • वर्ष : 15 • अंक : 196 • पृष्ठ : 12 • आमंत्रण मूल्य : ~~3 रुपये~~ 2 रुपये

कांग्रेस के पंजे से मुक्त होकर आज देश चैन की सांस ले रहा है : प्रधानमंत्री

एजेंसी

नयी दिल्ली : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरुवार को राज्यसभा में राष्ट्रपति के अभिभाषण पर हुई चर्चा का जवाब दिया। इस दौरान पीएम मोदी ने कांग्रेस को निशाने पर रखा। उन्होंने बाबा साहेब आंबेडकर, आरक्षण और ओबीसी आयोग के बहाने कांग्रेस पर जमकर हमला बोला। उन्होंने अपने भाषण के जरिए अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और ओबीसी को साधने का भी प्रयास किया। उन्होंने कांग्रेस पर जातिवाद के नाम पर समाज में जहर फैलाने का आरोप लगाया। कांग्रेस नेता राहुल गांधी पिछले कुछ सालों से जातिगत जनगणना की मांग का समर्थन कर रहे हैं। इसके अलावा वो केंद्र सरकार को चलाने वाले अधिकारियों की नियुक्ति में भी ओबीसी और अन्य वंचित जातियों के अधिकारियों की अनदेखी करने का आरोप लगा रहे हैं।

पीएम मोदी अपने भाषण डॉक्टर आंबेडकर का जिक्र क्यों करते हैं पीएम नरेंद्र मोदी ने अपने भाषण में कहा कि बाबा साहेब अंबेडकर से कांग्रेस को कितनी नफरत थी, उनके प्रति कांग्रेस में इतना गुस्सा था कि उनकी हर बात से कांग्रेस चिढ़ जाती थी।उन्होंने कहा कि इसके सारे दस्तावेज मौजूद हैं। इसी गुस्से के कारण दो-दो बार बाबा साहेब को चुनाव में हराने के लिए क्या कुछ नहीं किया गया। उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस ने बाबा साहेब को कभी भी 'भारत रत्न' के योग्य नहीं समझा।उन्होंने कहा कि जब देशवासियों और सर्व-समाज ने बाबा साहेब की भावना का आदर किया। तब जाकर आज कांग्रेस को मजबूरन 'जय भीम' बोलना पड़ रहा है। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि हमारी सरकार ने एससी-एसटी एक्ट को मजबूत बनाकर दलित और आदिवासी समाज के सम्मान और सुरक्षा के संबंध में अपनी प्रतिबद्धता भी दिखाई है और उसे आगे भी

बढ़ाया है। पीएम मोदी ने कहा कि आज जातिवाद का जहर फैलाने का प्रयास हो रहा है। लेकिन तीन दशक तक, दोनों सदनों में सभी दलों के ओबीसी सासंद सरकारों से मांग करते रहे थे कि अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) आयोग को संवैधानिक दर्जा दिया जाए, लेकिन उनकी मांग को ठुकरा दिया गया। क्योंकि शायद उस समय उनकी (कांग्रेस) राजनीति को ये सूट नहीं करता होगा। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने राजनीति का एक ऐसा मॉडल तैयार किया था, जिसमें झूठ, फरेब, भ्रष्टाचार परिवारवाद, तुष्टिकरण आदि का घालमेल था। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के मॉडल में 'परिवार पहले' ही सर्वोपरि है। इसलिए, उनकी नीति-रीति, वाणी-वर्तन उस एक चीज को संभालने में ही खपता रहा है। उन्होंने कहा कि मेरे लिए यह सौभाग्य की बात है कि हमने ओबीसी आयोग को संवैधानिक दर्जा दिया है।उन्होंने कहा कि उनकी सरकार ने न सिर्फ उनकी मांगों को पूरा किया है, बल्कि उनका मान सम्मान भी बढ़ाया है। हम जनता जनार्दन को पूजने वाले देश हैं।

पीएम मोदी ने कहा कि कांग्रेस के कालखंड में तुष्टीकरण हर चीज में होता था। यही उनका एक प्रकार से राजनीति की औषधि थी। स्वार्थनीति, राजनीति, देशनीति सबका एक घोटाला करके रखा था। तरीका यह होता था कि छोटे तबके को कुछ दे देना और बाकियों को तरसा कर रखना। जब चुनाव आए तब यह कहना कि देखो उनको मिला है, आपको भी मिल जाएगा। इस प्रकार से झुनझुना बांटा जाता था। चुनाव के समय वोट की खेती होते रहे, यही काम चलता रहता था। इस असवर पर पीएम मोदी ने एससी-एसटी, ओबीसी के साथ-साथ सामान्य वर्ग और मीडिल क्लास को साधने की कोशिश की। इसके लिए उन्होंने सामान्य वर्ग के लोगों को दिए गए 10 फीसदी आरक्षण का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि पहली बार हमारी सरकार ने 'सबका साथ-सबका विकास' के मंत्र की प्रेरणा से सामान्य वर्ग के गरीब को 10 फीसदी आरक्षण दिया। उन्होंन कहा कि यह आरक्षण उनकी सरकार ने बिना किसी तनाव के और किसी दूसरे वर्ग के आरक्षण से कटौती किए बिना दिया है।

एक नजर

छत्तीसगढ़ में पांच नक्सली गिरफ्तार

कांकेर : छत्तीसगढ़ के कांकेर जिले के थाना कोयलीबेड़ा क्षेत्र से पांच नक्सलियों को गुरुवार को गिरफ्तार किया गया। पुलिस का दावा है कि पकड़े गए नक्सली कोयलीबेड़ा क्षेत्र के ग्राम हेटारकसा के पास गत 15 दिसंबर 2024 को हुए आईईडी विस्फोट की वारदात में शामिल थे। कांकेर जिला पुलिस अधीक्षक इंदिरा कल्याण एलसेला ने बताया कि जिले में चलाये जा रहे नक्सल उन्मूलन अभियान के तहत सुरक्षाबल गुरुवार को नक्सलियों की मौजूदगी की सूचना पर जिले के कोयलीबेड़ा थाना क्षेत्र के ग्राम हेटारकसा, मर्राम, गोंदूल, आलपरस पहाड़ी जंगल की ओर सर्चिंग अभियान पर निकले थे। इस दौरान हेटारकसा के जंगल से आईईडी विस्फोट की वारदात में शामिल पांच नक्सलियों बुधुराम कवाची, बिरेन्द्र उसेंडी, सुरेश कुमेटी, बालसिंग नवगो, दशरथ नवगो, सभी निवासी ग्राम हेटारकसा थाना कोयलीबेड़ा को गिरफ्तार किया गया है।

नाइजीरिया के स्कूल में लगी भीषण आग, 17 बच्चों की मौत

अबुजा : नाइजीरिया के उत्तर-पश्चिमी इलाके में स्थित एक इस्लामिक स्कूल में लगी आग में कम से कम 17 बच्चों की मौत हो गई। देश की आपातकालीन प्रतिक्रिया एजेंसी ने यह जानकारी दी। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक राष्ट्रीय आपातकालीन प्रबंधन एजेंसी ने बताया कि बुधवार को जम्फारा राज्य के कौरा नमोदा जिले में यह भीषण हादसा हुआ। जब आग लगी, तब स्कूल में करीब 100 बच्चे मौजूद थे। एजेंसी के मुताबिक सत्रह बच्चे गंभीर रूप से घायल हो गए, जिनका अलग-अलग अस्पतालों में इलाज चल रहा है। आग किस वजह से लगी यह अभी स्पष्ट नहीं हो पाया है।

हेमन्त सरकार का बड़ा फैसला, कुष्ठ रोगियों को मिलेगी आर्थिक सहायता

- पुराने मरीजों को 12 महीने और नए मरीजों को छह महीने की उपचार अवधि तक प्रति माह 500 रुपये देने का प्रावधान किया गया है।
- राज्य स्वास्थ्य विभाग की पहल पर केंद्र सरकार की मंजूरी के बाद देश का पहला राज्य बन गया है, जो अब घर-घर जाकर कुष्ठ मरीजों की खोज कर रहा है।
- राज्य से कुष्ठ के उन्मूलन को लक्ष्य रखते हुए, स्पर्श कुष्ठ जागरुकता अभियान और कुष्ठ खोज अभियान शुरू किए गए हैं।
- राष्ट्रीय कुष्ठ उन्मूलन कार्यक्रम (एनएलईपी) के तहत राज्य में कुष्ठ रोग का बोझ कम करने, विकलांगता को कम करने और जनता को जागरूक करने के लिए काम किया जा रहा है।
- यह अभियान 30 जनवरी को शुरू हुआ और 14 फरवरी तक चलेगा।
- स्वास्थ्य विभाग के मुख्य सचिव अजय कुमार सिंह ने बताया कि सभी जिलों में जागरुकता अभियान चलाया जा रहा है और लगभग 13,500 गांवों में कुष्ठ खोज अभियान चलाया जा रहा है।

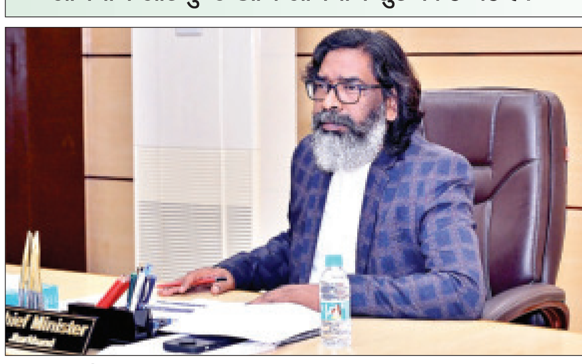

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड सरकार ने कुष्ठ रोगियों के लिए एक महत्वपूर्ण योजना शुरू की है। इसके तहत उन्हें हर महीने 500 रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान की जाएगी। यह योजना राज्य के 4000 कुष्ठरोगियों से शुरू हुई है, लेकिन इस वर्ष 8000 लोगों को इसका लाभ मिलने की उम्मीद है। अब टीबी मरीजों की तरह कुष्ठ मरीजों को भी हर महीने 500 रुपये दिए जाएंगे, जिससे वे पौष्टिक भोजन कर सकेंगे। पुराने मरीजों को 12 महीने और नए मरीजों को छह महीने की उपचार अवधि तक प्रति माह 500 रुपये देने का प्रावधान किया गया है। राज्य स्वास्थ्य विभाग की पहल पर केंद्र सरकार की मंजूरी के बाद देश का पहला राज्य बन गया है, जो अब घर-घर जाकर कुष्ठ मरीजों की खोजकर रहा है। राज्य में कुष्ठ रोग का बोझ कम करने, विकलांगता को कम करने और जनता को जागरूक करने के लिए राष्ट्रीय कुष्ठ उन्मूलन कार्यक्रम संचालित है। राज्य से कुष्ठ के उन्मूलन को लक्ष्य रखते हुए, स्पर्श कुष्ठ जागरुकता अभियान और कुष्ठ खोज अभियान शुरू किए गए हैं, जो 30 जनवरी को शुरू हुए और 14 फरवरी तक चलेंगे। स्वास्थ्य विभाग के मुख्य सचिव अजय कुमार सिंह ने बताया कि सभी जिलों में जागरुकता अभियान चलाया जा रहा है और लगभग 13,500 गांवों में कुष्ठ खोज अभियान चलाया जा रहा है, जहां बीते 5 से 7 वर्षों में कुष्ठ रोगी मिले हैं। जबकि, मुख्य सचिव के निदेर्शानुसार, महिला बाल विकास एवं सामाजिक सुरक्षा विभाग कुष्ठ रोग खोज अभियान में सहिया एवं एक पुरुष स्वैच्छिक कार्यकर्ता का खोजी दल बनाया गया है। हर पांच खोजी दल पर एक पर्यवेक्षक लगाया गया है, जो घर घर जाकर त्वचा की जांच करेंगे और संदेहास्पद रोगी की सूची बनाएंगे। मुख्य सचिव के अनुसार, खोजी दल द्वारा तैयार किए गए संदेहास्पद मरीजों को पर्यवेक्षक चिकित्सक के पास भेजा जाएगा, जो रोग की संपुष्टि सुनिश्चित करेगा, जो एचएससी, पीएचसी और सीएचसी में व्यवस्था की गई है। रोग की संपुष्टि होने पर मरीज का निबंधन करते हुए उपचार शुरू किया जाएगा। मुख्य बात यह है कि मरीज सरकार में निबंधित होने के बाद पोषण राशि का हकदार होगा। इसके लिए, निबंधन के समय ही एक बैंक खाता बनाया जाता है, जिसमें पोषण राशि का भुगतान किया जाएगा। अगर किसी कारण से भुगतान नहीं हो सका, तो भुगतान अगले दो माह में किया जाएगा।

मुख्यमंत्री और विधायक ने कालीघाट शक्तिपीठ मंदिर में की पूजा अर्चना

रांची : मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन गुरुवार को अपनी धर्मपत्नी एवं विधायक कल्पना सोरेन संग कोलकाता स्थित कालीघाट शक्तिपीठ मंदिर (कालीघाट काली मन्दिर) का दर्शन और विधि-विधान से पूजा-अर्चना की। मुख्यमंत्री ने इस दौरान झारखंड राज्य की उन्नति, सुख-समृद्धि-शांति तथा खुशहाली की कामना की।

हेमन्त सोरेन से एसएम ग्रुप के चेयरमैन ने की मुलाकात, झारखंड में करेंगे निवेश

रांची : झारखंड में एसएम ग्रुप ऑफ कंपनी बड़ा निवेश करने की तैयारी में है। इस सिलसिले में कंपनी के चेयरमैन मनीष खेमका और सहयोगी ने मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन और विधायक कल्पना सोरेन से कोलकाता में आयोजित दो दिवसीय बंगाल ग्लोबल समिट में गुरुवार को मुलाकात की। इस मुलाकात के दौरान खेमका ने मुख्यमंत्री से राज्य में बिजनेस की संभावनाओं और निवेश की आकांक्षाओं के साथ एसएम ग्रुप कंपनी की तीन नई परियोजना जानकारी साझा की, जिसके अन्तर्गत 14 हजार करोड़ का निवेश कर रही है। इस निवेश से राज्य में 10 हजार से अधिक रोजगार सृजित होंगे। झारखंड में परियोजनाओं में नीमडीह सरायकेला खरसावां में 1.2 एमटीपीए एकीकृत क्षमता वाले इस्पात संयंत्र की स्थापना होगी। वहीं नीमडीह सरायकेला खरसावां में 1.2 एमटीपीए क्षमता वाले रोलिंग मिल की स्थापना की जाएगी। इसके अलावा सीएफबीसी आधारित 491 मेगावाट क्षमता के स्वतंत्र विद्युत संयंत्र बरवाडीह लातेहार की स्थापना की जाएगी। मुख्यमंत्री ने उनकी प्रस्तावित परियोजनाओं की स्थापना के लिए कंपनी को राज्य से सहयोग का आश्वासन दिया है। इसके लिए संबंधित विभाग शीघ्र ही परियोजना प्रस्तावक और राज्य के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर कराने की तैयारी में है।

बिजनेस समिट में पश्चिम बंगाल को मिले 4.40 लाख करोड़ के निवेश प्रस्ताव

एजेंसी

कोलकाता : पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने गुरुवार को बताया कि दो दिवसीय बंगाल ग्लोबल बिजनेस समिट (बीजीबीएस) के दौरान राज्य को 4.40 लाख करोड़ रुपये के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं। विभिन्न क्षेत्रों में कुल 212 समझौता ज्ञापन (एमओयू) और आशय पत्र (एलओआई) पर हस्ताक्षर किए गए हैं, जो राज्य की निवेश क्षमता को दर्शाते हैं। दो दिवसीय सम्मेलन के आखिरी दिन मंच पर संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि हमें दो दिवसीय कार्यक्रम के दौरान 4.40 लाख करोड़ रुपये के निवेश प्रस्ताव मिले हैं। इनसे पश्चिम बंगाल में हजारों रोजगार के अवसर सृजित होंगे। उल्लेखनीय है कि बंगाल ग्लोबल बिजनेस समिट (बीजीबीएस) पश्चिम बंगाल सरकार का प्रमुख आयोजन है, जिसका उद्देश्य नीति निर्माताओं, कॉर्पोरेट नेताओं, उद्यमियों, शिक्षाविदों और थिंक-टैंकों को एक मंच पर लाना है। इस वर्ष, 5-6 फरवरी को कोलकाता में आयोजित इस समिट का यह आठवां संस्करण था। समिट में प्लेनरी सत्र, क्षेत्रीय सत्र, देश विशेष सत्र, और बीटूबी एवं बीटूजी बैठकें शामिल थीं, जिनका उद्देश्य नेटवर्क का विस्तार करना और संभावित साझेदारों से मिलना था। सम्मेलन में रिलायंस, नेवटिया, अंबुजा, आरपी संजीव गोयनका सहित अन्य बड़े औद्योगिक घरानों ने बड़े निवेश का ऐलान किया है।

तेज रफ्तार हाइवा ने बाइक सवार दो युवकों को रौंदा, मौत

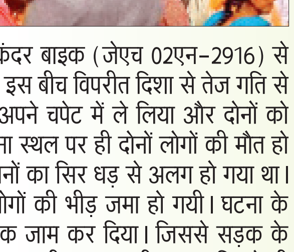

रामगढ़ : एनएच 23 रामगढ़-बोकारो मार्ग के मुरूबंदा के समीप गुरुवार को हुए सड़क दुर्घटना में दो लोगों की मौत हो गयी। मृतक की पहचान गोला निवासी 40 वर्षीय पवन कुमार और 45 वर्षीय सिकंदर मुंडा के रूप में हुई है। जानकारी के अनुसार पवन एवं सिकंदर बाइक (जेएच 02एन-2916) से रामगढ़ से गोला की ओर जा रहे थे। इस बीच विपरीत दिशा से तेज गति से जा रही हाइवा ने बाइक सवार को अपने चपेट में ले लिया और दोनों को रौंदते हुए आगे बढ़ गया। इससे घटना स्थल पर ही दोनों लोगों की मौत हो गयी। घटना इतना दर्दनाक था कि दोनों का सिर धड़ से अलग हो गया था। घटना के बाद यहां बड़ी संख्या में लोगों की भीड़ जमा हो गयी। घटना के विरोध में आक्रोशित ग्रामीणों ने सड़क जाम कर दिया। जिससे सड़क के दोनों ओर वाहनों की लंबी कतार लग गयी। घटना की सूचना मिलते ही चितरपुर सीओ दीपक मिंज, गोला थाना प्रभारी अभिषेक प्रताप, रजरप्पा थाना के प्रभारी थाना प्रभारी अशोक कुमार सदलबल घटनास्थल पहुंचे। पुलिस ने ग्रामीणों को समझाने का प्रयास किया। काफी जद्दोजहद के बाद पुलिस प्रशासन ने मृतक के परिजनों को सरकारी प्रावधान के तहत लाभ देने के आश्वासन देने के बाद सड़क से जाम हटा। ततपश्चात पुलिस ने दोनों शव को कब्जे में कर पोस्टमार्टम के लिए रामगढ़ भेज दिया। इधर घटना की जानकारी मिलने के बाद दोनों के परिजन घटनास्थल पहुंचे। क्षत विक्षत शव को देखकर दोनों के परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल हो गया।

अमेरिका से भारतीयों की वापसी को अमानवीय बता विपक्ष ने राज्यसभा में किया हंगामा

एजेंसी

नयी दिल्ली : अमेरिका से भारतीयों की वापसी को लेकर राज्यसभा में आज विपक्ष ने सरकार की घेराबंदी की। विपक्षी सदस्यों ने यह कहकर सरकार की आलोचना की कि सैन्य विमान में उन भारतीयों को अमानवीय तरीके से भारत लाया गया। हालांकि, विदेश मंत्री डॉ. एस जयशंकर ने बाद में साफ कर दिया कि 2012 से ही जो एसओपी लागू है, उसी के तहत इन लोगों को भी लाया गया है। दोपहर दो बजे इस मुद्दे पर राज्यसभा में विदेश मंत्री डॉ. जयशंकर ने सरकार की ओर से वक्तव्य दिया, जिसके बाद विपक्षी सदस्यों ने एक बार फिर हंगामा किया। इससे पहले आज सुबह सदन की कार्यवाही शुरू होने पर भी विपक्ष ने हंगामा किया था, जिसके कारण सदन की कार्यवाही 12 बजे तक स्थगित की गई।

इस बार सभापति जगदीप धनखड़ ने विपक्ष के सदस्यों को अपनी बात रखने का अवसर दिया। इस दौरान कांग्रेस के रणदीप सुरजेवाला ने कहा कि जिस तरीके से हमारे भारतीयों को हथकड़ी और बेड़ियों में जकड़कर सैन्य विमान से भारत भेजा गया, यह न सिर्फ अमानवीय है बल्कि इससे दुनिया में भारत की छवि भी धूमिल हुई है। उन्होंने पूछा कि अमेरिका में इस तरीके से कुल 7 लाख 25 हजार भारतीय हैं, जिन्हें इसी तरह से वहां से डिपोर्ट करने की योजना अमेरिकी सरकार बना रही है। उन्होंने कहा कि कोलंबिया जैसे देश ने सैन्य विमान से अपने लोगों को भेजने पर ऐतराज जताया और खुद का विमान भेजकर अपने लोगों को वापस ले गया लेकिन हम ऐसा नहीं कर सके। उन्होंने कहा कि अमेरिकी डिटेंशन सेंटरों में कुल कितने भारतीय रहे हैं, क्या भारत सरकार को इसकी जानकारी है और क्या उन्हें काउंसिल एक्सेस दिया गया है? आल इंडिया तृणमूल कांग्रेस के साकेत गोखले ने कहा कि रूस-यूक्रेन युद्ध के दौरान मोदी ने रूसी राष्ट्रपति पुतिन से बात की और भारतीयों को सुरक्षित निकाला गया।

जयपुर में टायर फटने से बेकाबू रोडवेज बस कार से टकराई, आठ की मौत

एजेंसी

जयपुर : राजस्थान के जयपुर में दूदू क्षेत्र अंतर्गत गुरुवार दोपहर एक भीषण सड़क हादसे में आठ लोगों की मौत हो गई। जबकि हादसे में छह लोग घायल हो गए। यह हादसा उस वक्त हुआ, जब दोपहर करीब 3:45 बजे जयपुर-अजमेर हाईवे पर मौखमपुरा के पास राजस्थान रोडवेज की बस टायर फटने के कारण अनियंत्रित होकर एक ईको कार से टकरा गई। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और राहत कार्य शुरू किया। घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया गया। पुलिस ने स्थानीय लोगों की मदद से कार में फंसे लोगों को बाहर निकालने की कोशिश की, लेकिन टक्कर इतनी भीषण थी कि कार में सवार किसी की जान नहीं बच सकी। जयपुर ग्रामीण पुलिस अधीक्षक आनंद कुमार शर्मा ने बताया कि रोडवेज बस जयपुर से अजमेर की ओर जा रही थी, जबकि ईको कार अजमेर से जयपुर आ रही थी। इस दौरान मौखमपुरा के पास बस का टायर फट गया और वह अनियंत्रित होकर डिवाइडर को पार कर दूसरी तरफ से आ रही कार से जा टकराई। इस टक्कर में कार पूरी तरह से पिचक गई और उसमें सवार सभी आठ लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। जानकारी के अनुसार सभी मृतक भीलवाड़ा जिले के कोटड़ी क्षेत्र के रहने वाले थे और महाकुंभ में प्रयागराज जा रहे थे। पुलिस ने प्रारंभिक जांच में बस के तेज रफ्तार और टायर फटना हादसे का मुख्य कारण बताया है।

एक नजर

भाजपा कार्य समिति की हुई बैठक

बरही : बरही भगवती मंदिर के बगल में स्थित भाजपा कार्यालय में भाजपा कार्य समिति की मंडल संगठनात्मक बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता मंडल अध्यक्ष भगवान केसरी ने की। बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में मंडल पश्चिमी चुनाव प्रभारी और प्रदेश कार्य समिति सदस्य अनिल मिश्रा, जिला उपाध्यक्ष दामोदर सिंह, मंडल पश्चिमी चुनाव प्रभारी और जिला परिषद उपाध्यक्ष किशुन यादव, और वरिष्ठ भाजपा कार्यकर्ता अंबिका सिंह, गणेश यादव, अर्जुन साहू, पूर्व प्रदेश मीडिया प्रभारी रंजीत चंद्रवंशी और पूर्व मंडल अध्यक्ष अमित साहू भी उपस्थित रहे। बैठक में नए मंडल कार्य समिति का गठन और मंडल अध्यक्ष का चुनाव करने के संबंध में चर्चा की गई। बैठक में मंडल महामंत्री प्रमोद सिंह चंद्रवंशी, नवल किशोर सिंह (उपाध्यक्ष), विपिन कुमार सिंह, संतोष निषाद (मंत्री), मनोज उपाध्याय, बालेश्वर यादव, जयप्रकाश केसरी, नितेश कुमार, उपेंद्र नारायण सिंह, सुबोध केसरी, वासुदेव प्रसाद, संतोष कुमार सिंह, सिद्धेश्वर सिंह, राजेश कुमार केसरी, और अन्य भाजपा कार्यकर्ता मौजूद रहे। बैठक में मंडल कार्य समिति के गठन और नए मंडल अध्यक्ष के चयन को लेकर विचार-विमर्श किया गया।

वन विभाग ने अवैध कोयला लदा ट्रैक्टर किया जब्त

बड़कागांव : हजारीबाग पश्चिमी वन प्रमंडल के डीएफओ मौन प्रकाश के निर्देशनुसार बुधवार देर रात को बड़कागांव वन विभाग के कर्मियों के द्वारा छापेमारी कर अधिसूचित वन क्षेत्र लूंरुगा जंगल से अवैध कोयला लदा ट्रैक्टर जप्त किया गया है। जब्त ट्रैक्टर को उरीमारी थाना ले लाया गया है। छापामारी के दौरान ट्रैक्टर चालक ने अंधेरे का लाभ उठाकर घने जंगल में भाग गया। मामले को लेकर बड़का गांव वन विभाग कार्यालय में मामला दर्ज किया गया है। मामले को लेकर एसीएफ ए के परमार ने लोगों से कहा कि अवैध कारोबार करने वाले को छोड़ा नहीं जाएगा उन पर मामला दर्ज कर उन्हें जेल भेजा जाएगा। छापेमारी में बड़कागांव के वनकर्मी शामिल थे।

बीच सड़क पर ट्रैक्टर पलटा, चालक ने कूद कर बचाई जान

चौपारण : चौपारण के दनुवा घाटी के महानेताड़ के पास एक ट्रैक्टर बीच सड़क पर पलट गया। मिली जानकारी के अनुसार चौपारण में बालू अनलोड करने के बाद दूसरा खेप लोड करने के लिए तेजी से जाने के दौरान ट्रैक्टर अनियंत्रित हो गया और बीच सड़क पर पलट गया। ट्रैक्टर की गति तेज होने के कारण वह काफी दूर तक सड़क पर रगड़ता हुआ दो टुकड़ों में टूट गया। ट्रैक्टर चालक ने ट्रैक्टर से कूदकर अपनी जान बचाई।

सरस्वती पूजा के सफल आयोजन पर हुई बैठक

हजारीबाग : हजारीबाग प्रेस क्लब द्वारा गुरुवार को क्लब के भवन परिसर में एक महत्वपूर्ण बैठक का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता हजारीबाग प्रेस क्लब के सचिव विस्मय अलंकार ने की। इस बैठक में क्लब के सभी वरिष्ठ एवं कनिष्ठ सदस्य उपस्थित रहे। बैठक में हाल ही में संपन्न हुई विशेष सरस्वती पूजा के आयोजन से संबंधित आय-व्यय की विस्तृत समीक्षा की गई। सदस्यों ने पूजा की सफलता को ऐतिहासिक बताया तथा भविष्य में इसे और भव्य एवं व्यवस्थित तरीके से आयोजित करने के लिए सुझाव दिए।

हजारीबाग सदर विधायक ने स्वतंत्रता सेनानी सरस्वती देवी की जयंती पर दी श्रद्धांजलि

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : झारखंड की पहली महिला स्वतंत्रता सेनानी सरस्वती देवी की 124वीं जयंती के अवसर पर दारू प्रखंड स्थित सरस्वती +2 उच्च विद्यालय में भव्य समारोह का आयोजन किया गया। इस ऐतिहासिक अवसर पर हजारीबाग सदर विधायक प्रदीप प्रसाद मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए और उन्होंने सरस्वती देवी जी की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन एवं सरस्वती देवी जी के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर किया गया। इसके उपरांत आयोजन समिति द्वारा सदर विधायक प्रदीप प्रसाद का फूलों का गुलदस्ता एवं शॉल भेंट कर अभिनंदन किया गया। समारोह में उपस्थित अतिथियों एवं गणमान्य

व्यक्तियों ने सरस्वती देवी के महान बलिदान और स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान को स्मरण किया। कार्यक्रम में वक्ताओं ने बताया कि सरस्वती देवी झारखंड की पहली महिला स्वतंत्रता सेनानी थीं, जिन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ संघर्ष किया। वे हजारीबाग से गिरफ्तार होने वाली पहली महिला स्वतंत्रता सेनानी बनीं। उनका जीवन समाज और विशेष रूप से महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत है। स्वतंत्रता संग्राम में उनकी भूमिका को कभी भुलाया नहीं जा सकता। इस अवसर पर सदर विधायक प्रदीप प्रसाद ने जनता को संबोधित करते हुए कहा की सरस्वती देवी जी नारी सशक्तिकरण और स्वतंत्रता संग्राम की अमिट गाथा हैं। उन्होंने अपने अदम्य साहस और राष्ट्रभक्ति से यह सिद्ध कर दिया कि महिलाओं की भूमिका हर क्षेत्र में महत्वपूर्ण है। हमें उनके संघर्षों से प्रेरणा लेकर समाज में महिलाओं के उत्थान और सशक्तिकरण के लिए निरंतर कार्य करना चाहिए। राज्य सरकार को भी झारखंड की वीरांगनाओं के योगदान को सम्मान देने के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिए,विधायक प्रदीप प्रसाद ने यह भी आश्वासन दिया कि सरस्वती देवी जी के योगदान को स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल करने का प्रयास किया जाएगा, ताकि आने वाली पीढ़ियां उनके बलिदान से प्रेरित हो सकें। इस कार्यक्रम में प्राचार्य रामेश्वर प्रसाद, मारूती शरण सहाय, शरदा सहाय, सुकेश सहाय, अनूपम सहाय, मुकेश सहाय, रघुवेंद्र सहाय, दीपा सहाय, दिव्या शालिनी, मीना नारायण सहित सरस्वती देवी जी के परिवार के अन्य सदस्य, विद्यालय के शिक्षकगण, छात्र-छात्राएं एवं स्थानीय ग्रामीण बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। कार्यक्रम के समापन पर सभी उपस्थितजनों ने सरस्वती देवी जी के आदर्शों को अपने जीवन में अपनाने और राष्ट्रसेवा के पथ पर आगे बढ़ने का संकल्प लिया।

मनरेगा की योजनाओं का बीडीओ ने किया निरीक्षण

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

केरेडारी : केरेडारी प्रखंड विकास पदाधिकारी विवेक कुमार द्वारा बेलतू पंचायत अंतर्गत अबुआ आवास, प्रधानमंत्री आवास एवं मनरेगा कूप की योजना का स्थल निरीक्षण किया गया एवं जल्द से जल्द योजना पूर्ण करने का निर्देश दिया गया साथ ही बेलतू पंचायत भवन में चल रहे विशेष मनरेगा दिवस में शामिल हुए एवं प्र ० वि ० पदा ० द्वारा जॉब कार्ड का वितरण किया गया। साथ ही मनरेगा मजदूरों के साथ मनरेगा से संबंधित क्विज प्रतियोगिता कराया गया। साथ में प्रखंड कार्यक्रम पदाधिकारी सुमन कुमार, सहायक अभियंता विशाल कुमार, रोजगार सेवक सूरज कुमार एवं बीएफटी उमेश कुमार सोनी उपस्थित रहें। प्रखंड विकास पदाधिकारी विवेक कुमार के द्वारा अबू आवास जिन व्यक्तियों का अधूरा है उनको अपने बातों से रू बरू करवा की जल्द से जल्द अबुवा आवास को फाइनल करें आनथा आपके ऊपर नोटिस कर दिया जाएगा। इसी बीच मनरेगा से बने कूप को जिस व्यक्ति को योजना जारी है उनको भी हिदायत दिए की कूप का जो भी 35 फिट गहराई है पूर्ण रूप से मुझे चाहिए अनाथा कम होने पर आपका जो भी कूप राशी होगा पूरी तरह से कटौती कर दिया जाएगा।

सोशल मीडिया किशोरों के जीवन का अहम हिस्सा इसके प्रभावों को समझना जरूरी : डॉ. विमल

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बरही : सोशल मीडिया का प्रभाव लगातार बढ़ता जा रहा है, विशेष रूप से किशोरों पर इसका प्रभाव गहरा पड़ रहा है। इसे ध्यान में रखते हुए, रामनारायण यादव मेमोरियल महाविद्यालय में समाजशास्त्र विभाग एवं आईक्यूएसी के संयुक्त तत्वावधान में सोशल मीडिया एवं किशोरावस्था पर इसका प्रभाव विषय पर एक दिवसीय आंतरिक सेमिनार का आयोजन किया गया। इस सेमिनार के मुख्य अतिथि महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. विमल किशोर थे, जिनका स्वागत समाजशास्त्र विभाग के प्रमुख डॉ. गिरधारी यादव, डॉ. ए.सी. बसु और डॉ. अजय कुमार रंजन ने संयुक्त रूप से किया। सेमिनार में समाजशास्त्र विभाग के डॉ. अजय कुमार रंजन ने सोशल मीडिया के विभिन्न पहलुओं पर एक विस्तृत प्रस्तुति दी। उन्होंने बताया कि

सोशल मीडिया, जहाँ एक ओर कनेक्टिविटी और सूचना साझा करने में सहायक है, वहीं यह किशोरों के लिए गंभीर चुनौतियाँ भी उत्पन्न करता है। उन्होंने सोशल मीडिया के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों पर चर्चा की और कहा कि प्रत्येक शैक्षणिक संस्थान में इस विषय पर जागरूकता बढ़ाने के लिए सेमिनार या कार्यशालाओं का आयोजन किया जाना चाहिए। इसके साथ ही, डॉ. रंजन ने ऑनलाइन साइबर फ्रॉड के बढ़ते खतरों पर भी प्रकाश डाला और लोगों को सतर्क रहने की सलाह दी। समाजशास्त्र विभाग के अध्यक्ष ने भी अपनी प्रस्तुति में सोशल मीडिया के किशोरों पर पड़ने वाले प्रभावों पर संक्षिप्त चर्चा की। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. विमल किशोर ने कहा कि आज के दौर में सोशल मीडिया किशोरों के जीवन का अहम हिस्सा बन चुका है। ऐसे में, इसके प्रभावों को समझना और जागरूकता फैलाना बेहद जरूरी है। इस तरह के सेमिनार छात्रों को सही दिशा में मार्गदर्शन करने में सहायक साबित होंगे।

वर्तमान समय के हिसाब से एनटीपीसी को कट ऑफ डेट निर्धारित करना ही होगा : नकुल

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बड़कागांव : बड़कागांव प्रखंड मुख्यालय कार्यालय प्रांगण में ग्रामीणों के द्वारा, एनटीपीसी से कट ऑफ डेट की सीमा वर्तमान समय से लागू करने की मांग को लेकर एकदिवसीय धरना प्रदर्शन किया गया। धरना प्रदर्शन में जुगरा, आराहारा, चेपकला, चेपाखुर्द आदि गांव के कई लोग शामिल हुए। मौके पर उपस्थित नकुल महतो ने कहा कि जब तक मांग पूरी नहीं होती हमें अपनी लड़ाई जारी रखने की जरूरत है, वर्तमान समय के हिसाब से कंपनी को कट ऑफ डेट निर्धारित करना ही होगा। ताकि विस्थापन का लाभ सभी 18 वर्ष के युवाओं को परिवार के रूप में मान्यता मिल सके। वही दीपक दास ने कहा कि बड़का गांव में युवाओं को रोजगार नहीं मिल रहा है, जिसके कारण युवा वर्ग भटक

रहे है, छला महसूस कर रहे हैं, सोचा था एनटीपीसी आएगी तो नौकरी देगी। कंपनी को इस और विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। निर्धारित तिथि के अनुसार कट ऑफ डेट लागू करने की जरूरत है। इनके अलावा लखींद्र ठाकुर, मोहम्मद इब्राहिम, अनिरुद्ध कुमार ,हेमराज कुमार साव व अन्य लोगों ने सभा को संबोधित किया। धरना दे रहे उपस्थित लोगों ने मुख्यमंत्री के नाम प्रखंड विकास पदाधिकारी को ज्ञापन सौंपा। मौके पर उपस्थित लोगों में मुख्य रूप से अनिरुद्ध कुमार, मोहम्मद इब्राहिम, दीपक दास, लखेंद्र ठाकुर, सुखदेव कुमार, सोनू इराकी, राहुल कुमार, अमित साव, हेमराज कुमार साहू, विकास कुमार, नकुल कुमार, सूरज कुमार, शिबू कुमार, रामदुलार साहू, उमेश महतो, चंद्रिका प्रसाद, राजकुमार, सुरेश कुमार, रोहित कुमार, जितेंद्र कुमार, सुरेंद्र कुमार, आदित्य कुमार, रोशन कुमार, नारायण साव के अलावा कई लोग उपस्थित थे।

गुरुदेव गुप्ता ने की विधवा पुनर्विवाह योजना का लाभ उठाने की अपील

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बरही : बरही पश्चिमी जिला परिषद प्रतिनिधि सह सामाजिक कार्यकर्ता गुरुदेव गुप्ता ने आमजन से विधवा पुनर्विवाह योजना का लाभ उठाने की अपील की है। उन्होंने कहा कि कम उम्र में किसी महिला के विधवा हो जाने में उसकी कोई गलती नहीं होती, लेकिन समाज में उसे पूरा सम्मान और उचित स्थान मिलना चाहिए। गुरुदेव गुप्ता ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा चलाई जा रही विधवा पुनर्विवाह योजना समाज में महिलाओं को नया जीवन शुरू करने का अवसर देती है। उन्होंने लोगों से अनुरोध किया कि वे इस योजना की जानकारी अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाएं और जरूरतमंद महिलाओं को इसका लाभ दिलाने में मदद करें। सरकार पुनर्विवाह करने पर दो लाख रुपये प्रोत्साहन राशि देने का काम करती है। उन्होंने समाज से आग्रह किया कि वे विधवा महिलाओं को सामाजिक बंधनों से ऊपर उठकर पुनर्विवाह के लिए प्रेरित करें और उन्हें एक गरिमापूर्ण जीवन जीने का अवसर दें।

कैसे उठाएं योजना का लाभ

इस योजना के लिए सबसे पहली शर्त है कि झारखंड के निवासी होना चाहिए। लाभार्थी की आयु विवाह योग्य होनी चाहिए। लाभार्थी महिला को अपने पति की मृत्यु प्रमाण पत्र जमा करना होगा। पुनर्विवाह के संदर्भ में विवाह निबंधन प्रमाण पत्र उपलब्ध कराना होगा। योजना का लाभ लेने के लिए पुनर्विवाह की तारीख से एक साल के अंदर आवेदन करना होगा। आयकर दाता, पेंशनधारी और सरकारी नौकरी वाली महिला इस योजना का लाभ नही उठा सकती है।

विनोबा भावे विश्वविद्यालय में शुरू हुआ तीन दिवसीय पूर्वी क्षेत्र अंतर विश्वविद्यालय महिला खो-खो प्रतियोगिता

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : पूर्वी क्षेत्र अंतर विश्वविद्यालय महिला खो खो प्रतियोगिता का आज समारोह पूर्वक उद्घाटन किया गया। विनोबा भावे विश्वविद्यालय के संस्थापक कुलपति स्वर्गीय विनोदिनी तर्वे के नाम से स्थापित बिनोदिनी पार्क में सभी आयोजन किए गए। मुख्य अतिथि हजारीबाग पुलिस अकादमी के निदेशक तथा पुलिस महानिरीक्षक शैलेंद्र कुमार सिन्हा के आगमन के साथ उद्घाटन समारोह का शुभारंभ हुआ। मुख्य अतिथि के स्वागत में बॉर्डर सिक्योरिटी फोर्स, मेरू के ब्रास बैंड ने बैंडमास्टर जी. टी. दामले के निर्देशन में शानदार धुन बजाकर माहौल को रोमांचक

बनाया। मौके पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर पवन कुमार पोद्दार ने जब राष्ट्रीय तिरंगा को फहराया, बीएसएफ के बैंड ने राष्ट्रगान बजाकर सबका दिल जीत लिया। तत्पश्चात भारतीय विश्वविद्यालय संघ (अक्व) एवं विभावि के झंडे को क्रमशः विश्वविद्यालय के छात्रकल्याण संकायअध्यक्ष डॉ विकास कुमार एवं आयोजन सचिव सह खेल निदेशक डॉ राखो हरि ने फहराया। इसके बाद मार्च पास्ट की जवाबदेही संभालते हुए डॉ सुकल्याण मोइत्रा ने मार्च प्रारंभ करने का आदेश दिया। हजारीबाग पुलिस अकादमी का सुसज्जित ब्रास बैंड हवलदार सिंघेश्वर राम के निर्देशन में मार्च का धुन बजाकर सब के अंदर जोश भरने का काम किया। मार्च में सबसे पहले आचार्य तारकेश्वर राय की देखरेख में सरस्वती शिशु विद्या मंदिर, कुम्हार टोली का घोष दल ने पूरे मार्च का नेतृत्व कर अपने वादन से समा बांधा। इसके बाद असम, बिहार, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़, उड़ीसा और झारखंड के कुल तीस विश्वविद्यालय के दलों ने शानदार मार्च करते हुए मंच के सामने से गुजरते वक्त ध्वज को सलामी दी। मार्च के बिल्कुल अंत में मेजबान विनोबा भावे विश्वविद्यालय दल और उसके बाद तिलैया के ग्रिजली विद्यालय के बैंड लीडर तनिष्क तुषार के निर्देशन में बैगपाइपर बैंड की प्रस्तुति ने सबका ध्यान आकृष्ट किया। बड़ी संख्या में उपस्थित विश्वविद्यालय परिवार के लोग एवं अतिथि गन जोरदार ताली बजाकर प्रत्येक दल का उत्साह बढ़ाया। अपने संबोधन में मुख्य अतिथि शैलेंद्र कुमार सिन्हा ने इस भव्य आयोजन के लिए विश्वविद्यालय को साधुवाद दिया। उन्होंने सभी प्रतिभागी दलों अच्छे खेल के लिए शुभकामनाएं दी। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर पवन कुमार पोद्दार ने अपनी ओर से सभी प्रतिभागी दलों का भावपूर्ण स्वागत किया।

संक्षिप्त खबरें

अटल बिहारी वाजपेयी के जन्मशताब्दी वर्ष पर कार्यक्रम का होगा आयोजन

हजारीबाग : भारतीय जनता पार्टी पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न स्व अटल बिहारी वाजपेयी का जन्म शताब्दी वर्ष मना रहा है। इसे लेकर पार्टी के द्वारा कई कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। पार्टी 14 जनवरी से 15 मार्च 2025 तक अटल जी की स्मृति में कई कार्यक्रम का आयोजन करेगा। 14 जनवरी से 14 फरवरी तक अटल संस्कृति संकलन एवं संपर्क अभियान चलाया जाएगा। जिसमें अटल बिहारी वाजपेई के द्वारा हजारीबाग में किए गए काम उनके यादों को संकलन किया जाएगा। हजारीबाग के जिला अध्यक्ष विवेकानंद सिंह ने बताया कि पूर्व प्रधानमंत्री स्व अटल बिहारी वाजपेई से संबंधित फोटो, वीडियो, भाषण, प्रेरक अनुभव के संकलन को लेकर काम भी किया जा रहा है। सभी जानकारी जिला एवं प्रदेश स्तर पर एकत्रित किया जाएगा। 15 फरवरी से 15 मार्च तक अटल विरासत सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा। जिसमें जिले में सम्मेलन का आयोजन कर विशिष्ट लोगों को आमंत्रित किया जाएगा। अटल बिहारी वाजपेई के साथ काम किए वरिष्ठ कार्यकताओं को सम्मानित भी किया जाएगा। साथ ही कोई लेखक अटल बिहारी वाजपेई के व्यक्तित्व पर पुस्तक लिखा है तो उसे भी सम्मानित किया जाएगा। सामग्री का डिजिटल प्रस्तुतीकरण किया जाएगा। जिला अध्यक्ष ने बताया कि स्वर्गीय प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई के कार्यकाल के दौरान हजारीबाग में अगर कोई विशेष उपलब्धि एवं योजना की शुरूआत की गई है तो उसका भी प्रस्तुतीकरण किया जाएगा। यह कार्यक्रम पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा के निर्देश पर पूरे देश भर में चलाया जा रहा है।

सीएसआर के तहत कन्या मध्य विद्यालय को कंप्यूटर, अलमारी व अन्य सामग्री दिया गया

बड़कागांव : राजकीय कन्या मध्य विद्यालय में आईडीबीआई बैंक के तत्वाधान में सीएसआर के तहत कंप्यूटर सेट, प्रिंसिपल चेयर टेबल अलमारी व शैक्षणिक व खेल सामग्री का वितरण किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रबंधन समिति के अध्यक्ष अवध किशोर कुमार व संचालन प्रधानाध्यापक रवि शंकर पाठक ने किया। विद्यालय की छात्राओं द्वारा स्वागत गीत प्रस्तुत की गई। वहीं आराध्या शर्मा व आराध्या राज द्वारा अतिथियों को बुके देकर स्वागत किया गया। आईडीबीआई बैंक के प्रबंधक देवेंद्र कुमार द्वारा राजकीय कन्या मध्य विद्यालय प्रधानाध्यापक रवि शंकर पाठक को दो गोदरेज कंपनी का दो अलमीरा, टेबल, कुर्सी, कंप्यूटर सेट एवं 180 विद्यार्थियों को पेन, पेंसिल, कट्टर इरेजर बैडमिंटन, कैरम बोर्ड, स्टोमन बॉक्स, दो कूड़ेदान व दो बाल्टी दिया गया। इसके बाद प्रबंधक देवेंद्र कुमार ने कहा कि आईडीबीआई बैंक द्वारा ग्राहक ऑन की सेवा के पोषक क्षेत्र में कल्याणकारी कार्य किया जाता है। विद्यार्थियों की संवेगात्मक ,मानसिक एवं शारीरिक विकास के लिए शैक्षणिक व खेल सामग्री दिया गया। मौके पर नायरा पेट्रोल पंप के संचालक अरविंद कुमार, टुकन प्रसाद, प्रबंधन समिति के अध्यक्ष अवध किशोर, शिक्षक सच्चिदानंद तिवारी, श्रीनिवास, शिक्षिका चंचला देवी, नगीना देवी, पुष्पा देवी, शोभा देवी, शीला गुप्ता, संयोजिका प्रीति कुमारी, आईडीबीआई बैंक के सहायक आयुष नमन, महेंद्र कुमार, कृष्ण कुमार, पप्पू कुमार भुवनेश्वर महतो आदि मौजूद थे।

गॉड ग्रेस पब्लिक स्कूल में विदाई समारोह का हुआ आयोजन

हजारीबाग : पगमिल, हजारीबाग स्थित गॉड ग्रेस पब्लिक स्कूल मे कक्षा दस के छात्र छात्राओं के लिए विदाई समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में झारखंड प्राइवेट स्कूल संगठन के संयोजक मधुप मनोहर, अध्यक्ष विनोद भगत, सचिव प्रभु दयाल कुशवाहा और उपाध्यक्ष छोटे लाल साहू सर उपस्थित थे। जिन्होंने कक्षा दस के छात्र-छात्राओं के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए उन्हें आगे प्रगति करने के लिए प्रोत्साहित किया और बहुत सारी अच्छी जानकारियां दी। वर्ग छठी, आठवीं और नवीं की छात्राओं ने बेहतरीन नृत्य का प्रदर्शन किया। छात्र छात्राओं के बीच शिक्षक-शिक्षिकाओं ने प्रेरणादायक भाषण दिया। उप-प्राचार्य रिजवानुल अंसारी ने भी छात्रों को शुभकामनाएं दीं। निदेशक आमिर अल्ताफ ने जीवन में आगे आने वाली चुनौतियों से छात्र-छात्राओं को अवगत कराया। साथ ही अपने माता-पिता और बड़ों का सम्मान करने को कहा। ताकि एक अच्छे समाज का निर्माण किया जा सके। शिक्षक-शिक्षिकाओं में शिक्षिका सबीना, मोसर्रत, शमा, पिंकी, तरन्नुम, शगुफ्ता, परवीन, फरहाना, आदि उपस्थित थे। कक्षा दस के विद्यार्थियों में शबा आफरीन, फरहत नियाजी, तानिया परवीन, एसाम आता,शुभम कुमार, फरहान अहसन, खुशनुमा साबरी, नीलोफर सबा, खुशी परवीन, आफरीन नाज, अल्फी फरहत, फैज अफरीदी, उम्मूल वारा,आसिफ अली, आलिया जुबेर, आलिया हयात, मेहविश नादिरा, मुस्कान परवीन, साजिया परवीन, सना नाहिद, सानिया परवीन और कार्तिक कुमार शामिल हैं।

बकसपुरा पंचायत में मनाया गया मनरेगा दिवस

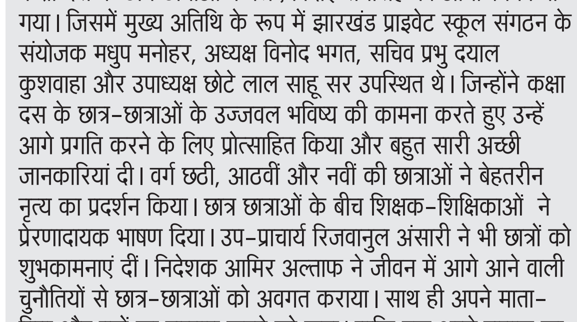

बिष्णुगढ़ : हजारीबाग जिले के विष्णुगढ़ प्रखंड अंतर्गत बकसपुरा पंचायत के राजस्व ग्राम एवं विभिन्न टोलो में मनरेगा दिवस मनाने के लिए मुखिया नन्हकू महतो की उपस्थिति में जागरूकता अभियान चलाया गया मौके पर पंचायत सचिव प्रियंका कुमारी , रोजगार सेवक मोहम्मद अली, स्वयं सहायता समूह की महिला सदस्य एवं ग्रामीण उपस्थित थे।

एक नजर

मौसम में होगा उतार चढाव

रांची: राजधानी रांची सहित राज्य के विभिन्न जिलों में मौसम में उतार चढाव होगा। आनेवालों दिनों में अभी हल्की ठंड रहेगी। अगले दो-तीन दिनों में तापमान में तीन से पांच डिग्री सेल्सियस गिरावट होगी। इसके बाद तापमान में दो से तीन डिग्री की बढोतरी होगी। यह जानकारी मौसम विज्ञान केंद्र ने गुरुवार को दी। रांची और इसके आसपास के इलाकों में आंशिक बादल छाया रहा। इसके बाद धीरे-धीरे मौसम साफ हो गया। दोपहर में लोगों को हल्कों गर्मी का भी एहसास हुआ।गुरुवार को रांची में अधिकतम तापमान 30 डिग्री और न्यूनतम तापमान 16.2 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया, जो सामान्य से लगभग चार डिग्री अधिक है। वहीं पिछले 24 घंटों में सबसे अधिक तापमान चाईबासा में 35.4 डिग्री और सबसे कम न्यूनतम तापमान गुमला में 12.8 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

राज्यपाल ने स्वर कोकिला लता मंगेशकर की पुण्यतिथि पर की श्रद्धांजलि अर्पित

रांची: प्रदेश के राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार ने स्वर कोकिला और भारत रत्न लता मंगेशकर की पुण्यतिथि पर उन्हें याद करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की है। राज्यपाल ने गुरुवार को सोशल मीडिया एक्स पर पर लिखा, "संगीत की दुनिया में 'स्वर कोकिला' के नाम से प्रख्यात 'भारत रत्न' लता मंगेशकर जी की पुण्यतिथि पर विनम्र श्रद्धांजलि"।

राजीव झंवर की याचिका पर हाई कोर्ट में अब 20 को सुनवाई

रांची: मनी लॉन्ड्रिंग के आरोपी उषा मार्टिन के एमडी राजीव झावर की अग्रिम जमानत याचिका पर हाईकोर्ट में सुनवाई हुई। गुरुवार की सुनवाई के दौरान अदालत ने उनके खिलाफ पीड़क कार्रवाई पर रोक के आदेश को अगली सुनवाई तक विस्तार दिया है। हाईकोर्ट अब इस मामले में 20 फरवरी को सुनवाई करेगा। हाईकोर्ट के न्यायाधीश जस्टिस रंगोन मुखोपाध्याय की कोर्ट में राजीव झंवर की अग्रिम बेल पर सुनवाई हुई। इससे पहले वर्ष 2023 में रांची PMLA की स्पेशल में राजीव झंवर को अग्रिम बेल देने से इंकार करते हुए उनकी याचिका खारिज कर दी थी, जिसके बाद उन्होंने सुप्रीम कोर्ट तक का रुख किया था। दरअसल प्रवर्तन निदेशालय ने उषा मार्टिन के खिलाफ 190 करोड़ रुपए से जुड़े आयरन ओर के केस में ईडी कोर्ट में चार्जशीट दायर कर दी है। उषा मार्टिन ग्रुप और उसके अधिकारियों के खिलाफ आयरन ओर की खदान में गड़बड़ी करने को लेकर शुरूआत में सीबीआई ने केस दर्ज किया था। जिसे टेकओवर करते हुए दो अक्तूबर 2021 को एऊने प्राथमिकी दर्ज की थी। यह केस घाटकुरी माइंस में लीज से ज्यादा आयरन ओर के खनन से जुड़ा हुआ है। इसी मामले में उषा मार्टिन के जीएम प्रमोद कुमार फतेपुरिया समेत अन्य लोग आरोपी हैं।

खेल और संस्कृति शिक्षा का अभिन्न अंग : राज्यपाल

राज्यपाल ने कहा

- विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देने का सशक्त माध्यम है।
- दीक्षांत समारोह खेलकूद एवं सांस्कृतिक गतिविधियों की उत्कृष्टता का प्रतीक है।

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : राज्यपाल-सह-कुलाधिपति संतोष कुमार गंगवार ने कहा कि खेलकूद और सांस्कृतिक गतिविधियां शिक्षा का अभिन्न अंग हैं। ये विद्यार्थियों में अनुशासन, आपसी सहयोग, नेतृत्व क्षमता और आत्मविश्वास विकसित करने का कार्य करती हैं। राज्यपाल गुरुवार को रांची विश्वविद्यालय के प्रथम खेलकूद एवं सांस्कृतिक महोत्सव के दीक्षांत समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजन विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देने का सशक्त माध्यम हैं। मैं इस पहल के लिए संपूर्ण रांची विश्वविद्यालय परिवार को हार्दिक बधाई देता हूं। उन्होंने कहा कि झारखंड अपनी अद्वितीय सांस्कृतिक विविधता और खेल प्रतिभाओं के लिए प्रसिद्ध है। यह राज्य न केवल अपनी समृद्ध जनजातीय परंपराओं और लोक कलाओं के लिए जाना जाता है, बल्कि खेलों में भी इसकी विशेष पहचान है। यहां की धरती ने कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ियों को जन्म दिया है, जिन्होंने देश का मान बढ़ाया है। तीरंदाजी, हॉकी, फुटबॉल, वुशु और एथलेटिक्स जैसे खेलों में झारखंड के युवा अपनी विशिष्ट पहचान बना चुके हैं। इसी प्रकार, संगीत, नृत्य, नाटक और लोककला में भी यहाँ की प्रतिभाएँ राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अपनी छाप छोड़ रही हैं। उन्होंने कहा कि हमारे देश की युवा शक्ति केवल ज्ञान अर्जन तक सीमित न रहकर खेल, संस्कृति और नवाचार के क्षेत्रों में भी अपनी पहचान बना रहे है। एक स्वस्थ एवं सशक्त समाज के निर्माण में युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है और यह आवश्यक है कि वे अपने कौशल का उपयोग राष्ट्र की उन्नति के लिए करें। उन्होंने कहा कि रांची विश्वविद्यालय झारखंड की गौरवशाली शैक्षणिक संस्थाओं में से एक है और यह विश्वविद्यालय निरंतर शैक्षणिक उत्कृष्टता के साथ-साथ खेलकूद एवं सांस्कृतिक गतिविधियों को भी ऊंचाइयों तक ले जाने में संघर्षरत रहा है। यहां के विद्यार्थी न केवल शिक्षा में बल्कि खेल और सांस्कृतिक गतिविधियों में भी अपनी विशिष्ट पहचान बना रहे हैं।

उन्होंने कहा कि यह दीक्षांत समारोह खेलकूद एवं सांस्कृतिक गतिविधियों की उत्कृष्टता का प्रतीक है। रांची विश्वविद्यालय प्रत्येक वर्ष खेल और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करता है और श्रेष्ठ एवं प्रतिभावान छात्रों को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर के लिए तैयार करता है। हर्ष का विषय है कि पुरुष एवं महिला दोनों को समान अवसर प्रदान किए जाते हैं। राज्यपाल ने कहा कि रांची विश्वविद्यालय ने कई श्रेष्ठ एवं प्रतिभावान रत्न देश को दिए हैं। योग के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर पर विश्वविद्यालय का दूसरा स्थान है। महिला हॉकी में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाने वाली विश्व स्तर की खिलाड़ी हैं, जिनमें सलीमा टेटे, निक्की प्रधान और संगीता कुमारी शामिल हैं। सलीमा टेटे भारतीय महिला हॉकी टीम की कप्तान हैं और उन्हें वर्ष 2024 के लिए अर्जुन अवार्ड से सम्मानित किया गया। निक्की प्रधान झारखंड की पहली महिला हॉकी खिलाड़ी थीं जिन्होंने ओलंपिक में भारत का प्रतिनिधित्व किया था। यह झारखंड की बेटियां देश का गौरव हैं और अन्य युवतियों के लिए प्रेरणास्त्रोत हैं। रांची विश्वविद्यालय की महिला हॉकी टीम भी ईस्ट जोन अंतर विश्वविद्यालय टूनामेंट की उपविजेता रही है। उन्होंने कहा कि खेलों के समानांतर सांस्कृतिक गतिविधियां भी हमें इतिहास और संस्कृति से जोड़ती हैं। रांची विश्वविद्यालय इस दिशा में भी कटिबद्ध है। विश्वविद्यालय का 'जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत खेल और संस्कृति के क्षेत्र में नई ऊंचाइयों को छू रहा है। खेलो इंडिया जैसी पहल युवाओं को खेलों में आगे बढ़ने और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए प्रेरित कर रही है।

मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन से सीखे भाजपा : सुप्रियो भट्टाचार्य

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झामुमो केंद्रीय महासचिव सुप्रियो भट्टाचार्य ने कहा है कि भाजपा को मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से अपने लोगों की सुरक्षा के बारे में सीखना चाहिए। उन्होंने कहा कि कोरोना काल में मुख्यामंत्री हेमंत सोरेन देश के कई इलाकों में फंसे लोगों को विशेष विमान भेजकर सकुशल लाया। उन्होंने कहा कि पांच फरवरी को अमृतसर हवाई अडडे पर अमेरिका की ओर 103 भारतीयों को बेडियों में जकड़ कर लाया गया जो हम सभी के लिए खेदजनक स्थिति है। भट्टाचार्य गुरुवार को झामुमो के कायालर्य में संवाददाता संम्मेलन को संबोधित कर रहे थे । मौके पर उन्होंने केंद्र सरकार के हार्ले डेविडसन इंजन पर सीमा शुल्क घटाने की नीतियों की भी आलोचना की। सुप्रियो ने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री पंडित नेहरू के कार्यकाल में जहां एक डॉलर चार रुपए 87 पैसे का था वह अब बढ़कर 87 रुपए 75 पैसे का हो गया है। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार ने पूर्व के पंचशील समझौते को ताक पर रख दिया है।

व्यक्तिगत टिप्पणी छोड़कर मुद्दों पर बात करे सरकार : भाजपा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता अजय साह ने डीजीपी अनुराग गुप्ता के समर्थन में झामुमो के दिए बयान पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि झामुमो के प्रवक्ता मूल मुद्दों पर जवाब देने के बजाय केवल बाबूलाल मरांडी पर व्यक्तिगत कटाक्ष कर रहे हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि झामुमो भी इस सच्चाई को स्वीकार कर चुका है कि अनुराग गुप्ता की झारखंड के डीजीपी के रूप में नियुक्ति पूरी तरह असंवैधानिक है। अजय साह ने यह बात गुरुवार को प्रदेश कार्यालय में प्रेस कांफ्रेंस करते हुए कही। उन्होंने कहा कि डीजीपी की नियुक्ति प्रक्रिया में यूपीएससी की भूमिका महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि यह एक संवैधानिक संस्था है और सुप्रीम कोर्ट ने इसे डीजीपी चयन प्रक्रिया के लिए अधिकृत किया है। उन्होंने कहा कि यूपीएससी के सदस्य को चयन पैनल में शामिल किए बिना डीजीपी की नियुक्ति करना संविधान का सीधा उल्लंघन है। प्रकाश सिंह केस के बाद सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट निर्देश दिए थे कि डीजीपी की नियुक्ति केवल यूपीएससी पैनल की सिफारिशों के आधार पर ही होनी चाहिए। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार इस संवैधानिक उल्लंघन को छिपाने के लिए गोल-मोल बातें कर रही है, जबकि यह एक गंभीर मामला है और इस पर पारदर्शी जवाब दिया जाना चाहिए। अजय साह ने कहा कि डीजीपी पद पर नियुक्ति के लिए सेवा विस्तार या सेवानिवृत्ति आयु को बढ़ाने की पूरी शक्ति केंद्र सरकार के पास होती है। हालांकि, झामुमो प्रवक्ता ने इस महत्वपूर्ण मुद्दे पर कोई संतोषजनक जवाब नहीं दिया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि वे केवल तथ्यों को तोड़-मरोड़कर जनता को गुमराह करने की कोशिश कर रहे हैं।

दस दिवसीय इंडिया इंटरनेशनल मेगा ट्रेड फेयर का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : दस दिवसीय इंडिया इंटरनेशनल मेगा ट्रेड फेयर का आयोजन शुक्रवार से आरंभ हो रहा है। सात से 17 फरवरी तक मोरहाबादी मैदान में चलनेवाले ट्रेड फेयर में आठ अंतर्राष्ट्रीय देश और झारखंड समेत 15 राज्य शामिल हो रहे हैं। ट्रेड फेयर की तैयारियों को लेकर गुरुवार को चैंबर भवन में झारखण्ड चैंबर और जीएस मार्केटिंग एसोसियेट्स के जरिये संयुक्त रूप से प्रेस वार्ता का आयोजन किया गया। मौके पर चैंबर महासचिव आदित्य मल्होत्रा ने कहा कि ट्रेड फेयर में रियल एस्टेट, होम एंड डेकॉर, फाइनेंस, लाइफस्टाइल, फर्नीचर एंड इंटीरियर, ऑटोमोबाइल, इलेक्ट्रॉनिक्स, प्रोसेस्ड फूड, हेल्थकेयर, हैंडीक्राफ्ट्स समेत 35 हजार से अधिक प्रोडक्ट्स की प्रदर्शनी लगायी जायेगी। प्रोजेक्ट चेयरमेन अमित शर्मा और शैलेश अग्रवाल ने बताया कि ट्रेड फेयर का विधिवत उद्घाटन 8 फरवरी को शाम 4 बजे होगा। ट्रेड फेयर स्थल पर रोजाना नई-नई एक्टिविटी की जायेगी। स्टैंडअप कॉमेडी, कवि सम्मेलन, डॉग शो, आईआईएम द्वारा ड्रम सर्किल का आयोजन, फैंसी ड्रेस कॉम्पटीशन, निःशक्त बच्चों के लिए कार्यक्रमों का आयोजन किया जायेगा। ट्रेड फेयर के माध्यम से स्टार्टअप्स को भी प्रमोट करने की कोशिश की गई है, जिस क्रम में न्यूनतम दर पर स्टॉल्स उपलब्ध कराये गये हैं। मेला परिसर में प्रत्येक दिन आगंतुकों का आगमन होगा। राज्य सरकार के विभिन्न विभागों द्वारा स्टॉल्स के रूप में ट्रेड फेयर को सफल बनाने में सहयोग करने के लिए उपाध्यक्ष राहुल साबू और ज्योति कुमारी ने संयुक्त रूप से राज्य सरकार के प्रति आभार जताया। सह सचिव नवजोत अलंग ने कहा कि प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी अंतर्राष्ट्रीय देशों के स्टॉल्स की सहभागिता से यह ट्रेड फेयर लगातार लोकप्रिय हो रहा है। उन्होंने शहरवासियों से अपने परिवार और मित्रों के साथ अधिकाधिक संख्या में ट्रेड फेयर में शामिल होने की अपील की।

बचपन में ही मां-बाप का छूटा साया, भैया ने पहुंचाया अखाड़ा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड में खेल प्रेमियों की कमी नहीं है। अंधकारमय जीवन से उजाले का सपना संजोकर रखने वाले उमेश मंडल के सिर पर हाथ रखने वाला कोई नहीं है। उनके जीवन में न मां हैं, न पिता। इसके बावजूद सिल्ली कॉलेज, सिल्ली के इतिहास विभाग के तीसरे सेमेस्टर के छात्र उमेश मंडल ने हरियाणा से मेडल जीतकर लाया है। इसके लिए उन्हें रांची विश्वविद्यालय में राज्यपाल के हाथों से उत्कृष्ट सम्मान प्राप्त हुआ। इस दौरान उमेश मंडल ने कहा कि मेरे माता-पिता नहीं हैं। मेरे भाई प्राइवेट नौकरी और खेती-बाड़ी करते हैं। इसी से घर का गुजारा होता है। 2016 में बिरसा मुंडा आर्चरी एकेडमी से लिया प्रशिक्षण 20 साल के युवा आर्चरी खिलाड़ी उमेश मंडल ने महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, मध्य प्रदेश, ओडिशा, कोलकाता समेत अन्य राज्यों में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है और कई मेडल भी जीते हैं। इन मेडल्स से मिलने वाली राशि से वह अपनी पढ़ाई का खर्च निकालते हैं। फिलहाल, वह सिल्ली कॉलेज, सिल्ली से इतिहास की पढ़ाई कर रहे हैं। उनके पिता सत्यनारायण मंडल का निधन 2004 में हो गया था, और इसके बाद उनकी मां भी गुजर गईं। किसान परिवार से ताल्लुक रखने वाला वर्ल्ड कप खेलना चाहता है खिलाड़ी उमेश मंडल ने बताया कि उन्होंने अपनी मैट्रिक की पढ़ाई सिल्ली ग्राम विकास और इंटरमीडिएट की पढ़ाई एसएस हाईस्कूल से की है। 2016 से वह आर्चरी कोच प्रकाश राम और शिशिर महतो से आर्चरी का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि पैसा नहीं होने के कारण भविष्य अंधकारमय लगता है, लेकिन अगर सरकार का साथ मिला, तो मैं आर्चरी से वर्ल्ड कप खेलकर देश का नाम रोशन करना चाहता हूं।

आम जनता के लिए खुला रांची राजभवन का उद्यान,12 फरवरी तक खुला रहेगा प्रवेश

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : रांची का राजभवन गुरुवार को आम नागरिकों के लिए खोला गया, जहां पहले ही दिन बड़ी संख्या में लोग पहुंचे और इसकी भव्यता का आनंद लिया। बच्चों, बुजुर्गों, युवाओं और महिलाओं ने राजभवन के आकर्षक गुलाब, झूले, फव्वारे, झरने और औषधीय पौधों के बीच सेल्फी और तस्वीरें खिंचवाई। इस दौरान राजभवन उद्यान प्रभारी रबुल अंसारी ने बताया कि हर साल हमारे उद्यान की खासियत गुलाब के फुल होते हैं, लेकिन इस बार जैसी बहार गुलाबों में है, वैसी पहले कभी नहीं देखी गई। करीब 30 वेराइटी के 30 हजार से ज्यादा गुलाब इस बार खिले हैं। जो लोगों के लिए आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। उन्होंने बताया कि राजभवन में कई पेड़ ऐसे हैं जो 200 साल पुराने हैं। उन्होंने बताया कि अशोक सुखवा एवं सेमल का पेड़ 200 साल पुराने हैं। इसके साथ ही लकड़ी का पुल और उसके नीचे कमल, विशाल फव्वारा, बच्चों के लिए कई प्रकार के झूले के साथ पेड़ों पर ट्राइबल पेंटिंग इस बार खास है। वहीं दूसरी ओर सहायक उद्यान प्रभारी नीलेश रासकर ने बताया कि देश विदेश के हजारों सीजन फूल लगाए गए हैं। इनमें डहेलिया, लुपिंस, स्वर्ण पॉपी, चेरी गोल्ड, गेंदा, सपनेरिया, एवरलास्टिंग, स्वीट एलिसम, बरबिना, स्टॉक, पिटुनिया, कैलेंडुला, डेंथस, एमपिसन, भरबीना, मैजिक कार्पेट, डॉग फ्लावर, सिनेरिया, पेंटस, सालविया, प्लोक्स, गजेनिया, एंटरहिनम शामिल है। वहीं दूसरी ओर राजभवन के अंदर सुरक्षा की पुख्ता इंतजाम किए गए है। मजिस्ट्रेट के साथ लगभग 100 जवानों की तैनाती की गई है। मेटल डिटेक्टर से जांच के बाद ही लोगों को राजभवन के अंदर जाने दिया जा रहा था। उल्लेखनीय है कि राजभवन आम नागरिकों के भ्रमण के लिए छह फरवरी से 12 फरवरी तक खोला गया है।

संक्षिप्त खबरें

कर्मियों ने घेरा शिक्षा परियोजना का कार्यालय

रांची: झारखंड राज्य आउटसोर्सिंग विज्ञान लैब फैसिलिटेटर संघ के बैनर तले शिक्षा विभाग के कर्मियों ने गुरुवार को देवेन्द्र नाथ महतो के नेतृत्व में झारखंड शिक्षा परियोजना कार्यालय का घेराव किया। कर्मियों ने लगभग पांच घंटों तक शिक्षा परियोजना परिषद के कार्यालय गेट को जाम कर दिया और सभी कर्मियों को बंधक बना लिया। घेराव कार्यक्रम में राज्य के सभी जिलों के सरकारी विद्यालय, 80 मुख्यमंत्री उत्कृष्ट स्कूलों के कर्मी, आदर्श और मॉडल विद्यालयों में कार्यरत सफाई कर्मी, माली, सुरक्षा प्रहरी, लैब फैसिलिटेटर सहित अन्य कर्मी शामिल हुए। मौके पर संघ के देवेन्द्र नाथ महतो ने कहा कि एक वर्ष पूर्व सभी कर्मियों की पेमेंट स्लिप, साप्ताहिक छुट्टी, सम्पूर्ण पीएफ और ईएसआई देने का लिखित आश्वासन विभाग की ओर से मिला था, लेकिन अभी तक एक भी मांग पूरा नहीं किया गया। उन्होंने कहा कि नियमानुसार 12 प्रतिशत पीएफ मिलना चाहिए, जो नहीं मिल रहा है। सुरक्षा प्रहरी को पूर्व में 1739 रुपए मिलता था जो अब घटाकर 759 रुपये कर दिया गया। वहीं सुरक्षा प्रहरी की साप्ताहिक छुट्टी, मेडिकल छुट्टी, मातृत्व अवकाश नहीं दिया जा रहा है जो श्रम कानून का उलंघन है। देवेन्द्र नाथ महतो ने जेईपीसी के अधिकारियों पर आक्रोश जताते हुए कहा कि यहां के अधिकारी खुद को नवाब समझकर झारखंडियों का शोषण कर रहें हैं। उन्होंने कहा कि कर्मियों की मांगों को तत्काल पूरा किया जाय अन्यथा कर्मी आगे उग्र आंदोलन करेंगे।

रांची डबल मर्डर मामला, दो अरोपी गिरफ्तार

रांची : जिले के नगड़ी इलाके में मंगलवार की रात हुए दोहरे हत्याकांड मामले में पुलिस को सफलता मिली है। एसएसपी चंदन सिन्हा के निर्देश पर पुलिस की टीम ने दो अपराधियों को बुधवार की देर रात गिरफ्तार किया है। जिनमें मनोहर टोपनो और सुनील कच्छप शामिल है। इनके पास से हत्या की घटना में प्रयुक्त एके 47 रायफल बरामद किया गया। गुरुवार को रांची एसएसपी ने प्रेस कांफ्रेंस कर हत्याकांड का खुलासा किया। सेना के जवान ने दिया घटना को अंजाम घटना को अंजाम एक महीने की छुट्टी पर आए सेना के जवान मनोरंजन टोपनो ने अंजाम दिया था। मनोरंजन भारतीय सेना में है और उसकी तैनाती जम्मू कश्मीर के कुपवाड़ा में है। वह अपने यूनिट से चोरी से एके 47 राइफल लेकर आया था और मंगलवार को उसी राइफल से मनोरंजन टोपनो ने मनोज और बुधराम की गोली मार कर हत्या कर दी थी। मृतक बुधराम मुंडा के भाई मनोरंजन जो सेना के जवान है। उससे जमीन बेचने के एवज में रुपये लिए थे,लेकिन मृतक बुधराम मुंडा जमीन बेचने में अड़चन डाल रहे थे। विवाद कई महीनों से चल रहा था। इसी बीच एक साजिश के तहत मनोरंजन बुधराम मुंडा को रास्ते से हटाने के लिए प्लान बनाया और बीते मंगलवार की रात मौका देखकर जवान और उसके साथियों ने बुधराम मुंडा को गोली मार दी। साथ में बुधराम के रिश्ते में लगने वाले भतीजे मनोज कच्छप ने गोली मारते जवान और उसके साथियों को पहचान लिया इसलिए अपराधियों ने उसे भी गोली मारकर भाग निकला।

नगर निकाय चुनाव में राजद भी उतारेगा उम्मीदवार

रांची : झारखंड में होने वाले नगर निकाय चुनाव में राजद भी उम्मीदवार उतारेगा। युवा राजद की गुरुवार को हुई बैठक में यह निर्णय लिया गया। युवा राजद ने इसकी जिम्मेवारी भी दल के नेताओं को दी है। बताते चलें कि झारखंड में सभी दल नगर निकाय चुनाव को दलीय आधार पर कराने की वकालत कर रहे हैं। इधर हाईकोर्ट ने भी चार माह में नगर निकाय चुनाव कराने का निर्देश दिया है।

वैश्य-ओबीसी विरोधी हैं बाबूलाल, बयान वापस लें, वरना सड़कों पर होगा विरोध : महेश्वर साह

रांची : झारखंड प्रदेश वैश्य मोर्चा ने पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी पर निशाना साधते हुए उन्हें चुनौती दी है कि वे अपने बयान को वापस लें और डीजीपी अनुराग गुप्ता के खिलाफ दिये गये बयान के लिए माफी मांगें। वैश्य मोर्चा के केंद्रीय अध्यक्ष महेश्वर साहु ने मरांडी के बयान का विरोध करते हुए कहा कि वे वैश्य समाज के खिलाफ हैं और हमें उनके बयान का विरोध करना पड़ेगा। इस्तीफा देकर दोबारा चुनाव लड़कर जीत कर दिखाएं वैश्य मोर्चा ने मरांडी को चुनौती दी कि वे विधायक पद से इस्तीफा देकर दोबारा चुनाव लड़ें और जीतकर दिखाएं। अगर मरांडी अपने बयान को वापस नहीं लेते हैं, तो हम सड़कों पर उतरकर विरोध प्रदर्शन करेंगे। बाबूलाल मरांडी अपने समाज के नेता तो रहे नहीं, पिछले दो चुनाव लोकसभा एवं विधानसभा में यह साबित हो चुका है। वे अन्य वर्ग को भी ऊल-जलूल बयान देकर नाराज कर रहे हैं, ताकि चर्चा में बने रहें। लेकिन बाबूलाल जी यह नहीं समझ पा रहे हैं कि वे अपने ही पैर में कुल्हाड़ी मार रहे हैं। अभी वे जिस सीट राज-धनवार से जीत कर आये हैं। वे जान लें कि इसी वैश्य और ओबीसी समाज के वोट से वे विधायक बन सके हैं। अनुराग गुप्ता को आखिर क्यों बनाया जा रहा निशाना बाबूलाल मरांडी ने विभिन्न कथित संदर्भों के जरिए डीजीपी अनुराग गुप्ता की नियुक्ति को गलत बताया है और राज्य सरकार पर सवाल खड़ा किया है। लेकिन उन्हें उत्तर प्रदेश के सरकारी गजट को भी पढ़ लेना चाहिए।

पांच दिनी शहीद एतवा उरांव क्रिकेट टूर्नामेंट शुरू

रांची: मांडर प्रखंड अंतर्गत बुढ़ाखुखरा स्थित खेल मैदान में गुरुवार को पांच दिवसीय शहीद एतवा उरांव क्रिकेट टूनामेंट-2025 का उदघाटन तबारक खान, जेवियर खलखो, मो. रशीद, अमीत खलखो, जाकिर हुसैन, रशीद अंसारी ने फीता काटकर किया। गुरुवार को पहला और टूर्नामेंट मैच हुसीर एलेवन और फुटकल टोली के बीच खेला गया। इसमें फुटकल टोली दो विकेट जीतकर अगले राउंड में प्रवेश किया। दूसरा मैच कुंदी और करकरा के बीच खेला गया। इसमें कुंदी की टीम पांच रन से जीत दर्ज की। तीसरा मैच कुंदी और फुटकल टोली के बीच खेला गया, जिसमें कुंदी की टीम 44 रन जीतकर सेमीफाइनल में प्रवेश किया। सात फरवरी को पहला मैच मंदरो व महुआजारी और दूसरा मैच गोरे व नयासराय के बीच खेला जाएगा। मो. साकिब ने बताया कि टूनामेंट के विजेता को 50 हजार रुपए नगद व बड़ा ट्रॉफी, उपविजेता को 30 हजार रुपए नगद व बड़ा ट्रॉफी दिया जाएगा। साथ ही तृतीय और चतुर्थ स्थान पानेवाले टीम को क्रमशः 5500 हजार रुपए नगद व ट्रॉफी व 5000 हजार रुपए नगद व ट्रॉफी देकर पुरस्कृत किया जाएगा। इसके अलावा मैन ऑफ द मैच, मैच ऑफ द सिरीज होने वाले खिलाड़ियों को भी सम्मानित किया जाएगा।

एक नजर

रेलवे ट्रैक पर हुआ दर्दनाक हादसा त्वरित कार्रवाई से बची यात्री की जान

बोकारो : बोकारो रेलवे स्टेशन से लगभग 12 किलोमीटर दूर राजाबेड़ा स्टेशन और चंद्रपुर रेलवे स्टेशन के बीच एक यात्री ट्रेन से गिरने का दुर्घटनाग्रस्त होने का मामला सामने आया है। यह हादसा एलेप्पी से धनबाद जाने वाली ट्रेन नंबर 13352 में हुआ, जिसमें कलामुद्दीन अंसारी, निवासी फरूदीह गांव, देवघर, ट्रेन से गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गए। हादसे की सूचना मिलते ही कांस्टेबल सुनील कुमार और स्थानीय पुलिस टीम ने तुरंत मौके पर पहुंचकर कार्रवाई की। उन्होंने एम्बुलेंस की सहायता से घायल यात्री को बोकारो सदर अस्पताल भेजा, जहां डॉक्टरों ने प्राथमिक उपचार कर उसकी हालत स्थिर कर दी। घायल यात्री शुरूआत में बेहोश था और उसकी स्थिति गंभीर बनी हुई थी। हालांकि, डॉक्टरों की तत्परता और बेहतर चिकित्सा सुविधा के चलते अब उसकी हालत में सुधार है। यात्री अब बोलने की स्थिति में है और उसने अपना नाम-पता बताया। कांस्टेबल सुनील कुमार नें बताया को घटना की जानकारी मिलते ही हमने तुरंत राहत कार्य शुरू किया और घायल यात्री को अस्पताल पहुंचाया।

गुंडरी गांव में चोरों का आतंक, चोरी की घटना से ग्रामीणों में दशहत

बोकारो : चंदनकियारी प्रखंड अंतर्गत सिमुलिया पंचायत के गुण्डरी गांव में इन दिनों चोरों का आतंक इस कदर बढ़ा है कि रोज हो रही चोरी से पुलिस को लचर कार्यशैली पर सवाल खड़े हो रहे है। ताजा मामला माणिक चौधरी पिता प्रफुल्य चौधरी को निशाना बनाया। गृह स्वामी माणिक चौधरी ने बताया कि रात्रि पहरेदारी करने निकला था तब ही सामने स्थित तलाब के सामने टार्च जला जब पहरेदारी कर रहे सभी लोग उस ओर भागे तब मेरे घर में सो रहे बूढ़ा मां बाप को बाहर से बंद कर दिया ओर बगल स्थित कमरा से अलमीरा में रखें तकरीबन एक लाख नकदी, सोना चांदी का जेवरात समेत अन्य जमीन का अहम दस्तावेज चोर चुराने में सफल रहे। घटना की जानकारी स्थानीय थाना में दिया गया है पुलिस स्क्वायड डॉग को बुलाकर हर बिंदुओं पर जांच कर रही है।

सेक्टर 12 में महिला का शव मिलने से सनसनी

बोकारो : जिले के सेक्टर 12 थाना क्षेत्र में गुरुवार को एक अज्ञात महिला का शव मिलने से क्षेत्र में सनसनी फैल गई। यह शव पुलिस लाइन की चहारदीवारी के पास स्थित राजकीय प्राथमिक विद्यालय के पीछे पाया गया। शव कीचड़ से सना हुआ था और महिला की दोनों कलाई कटी हुई थी, जिससे यह मामला और भी संदिग्ध बन गया है। घटना की सूचना मिलते ही स्थानीय पुलिस मौके पर पहुंची और शव को अपने कब्जे में लेकर जांच शुरू कर दी। पुलिस के अनुसार, अब तक महिला की पहचान नहीं हो सकी है। मौके पर सेक्टर 12 के थाना प्रभारी और सार्जेंट मेजर भी उपस्थित थे। शव की स्थिति को देखते हुए प्रथम दृष्टया मामला हत्या का प्रतीत होता है, लेकिन पुलिस सभी संभावनाओं पर जांच कर रही है। सिटी डीएसपी आलोक रंजन के अनुसार, मृतका संभवत: विक्षिप्त थी। हालांकि, पुलिस इस मामले की तह तक जाने के लिए गहराई से जांच कर रही है। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है, जिससे मौत के वास्तविक कारणों का पता चल सके।

बेहतर चिकित्सा सुविधा प्रदान करना जेपी हॉस्पिटल की प्राथमिकता : नित्यानंद मंडल

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

धनबाद : कोला कुसमा बलियापुर बायपास रोड स्थित शहर का प्रमुख स्वास्थ्य संस्थान जेपी हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर ने डिविजनल रेलवे हॉस्पिटल, ईस्ट सेंट्रल रेलवे, धनबाद के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। इस समझौते के तहत, जेपी हॉस्पिटल को रेलवे के लाभार्थियों को विभिन्न चिकित्सा क्षेत्रों में विशेषज्ञ उपचार प्रदान करने के लिए दो वर्षों की अवधि के लिए सूचीबद्ध किया गया है। इस समझौते के अंतर्गत, जेपी हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर 24 घंटे कार्डियोलॉजी, न्यूरोलॉजी, ऑन्कोलॉजी, जनरल सर्जरी, स्त्री एवं प्रसूति रोग, नेफ्रोलॉजी, यूरोलॉजी, गैस्ट्रोएंटरोलॉजी, नवजात शिशु रोग, ऑर्थोपेडिक्स, नेत्र विज्ञान, ईएनटी, रेडियोलॉजी, पैथोलॉजी और इंटेंसिव केयर जैसी चिकित्सा सुविधाएं प्रदान करेगा। जिससे रेलवे लाभार्थियों को सुचारु चिकित्सा देखभाल सुनिश्चित की जा सके। यह सूचीबद्धता 31 जनवरी 2025 से 30 जनवरी 2027 तक मान्य होगी या जब तक जेपी हॉस्पिटल सीजीएचएस के साथ सूचीबद्ध रहेगा, जो भी पहले हो। इस समझौते के तहत, जेपी हॉस्पिटल धनबाद स्थित डिविजनल रेलवे हॉस्पिटल से कोला कुसमा, धनबाद स्थित 10 किलोमीटर तक निःशुल्क एम्बुलेंस सेवा प्रदान करेगा। उपचार शुल्क सीजीएचएस गैर-एनएबीएच रांची दरों के अनुसार या उससे कम लागू होगा। इस अवसर पर, जेपी हॉस्पिटल के प्रबंध निदेशक नित्यानंद मंडल ने कहा हम डिविजनल रेलवे हॉस्पिटल, ईस्ट सेंट्रल रेलवे, धनबाद के साथ साझेदारी करके गर्व महसूस कर रहे हैं। यह सहयोग रेलवे कर्मचारियों और उनके परिवारों को उच्च गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करने की हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। हमारा उद्देश्य विश्वस्तरीय चिकित्सा सेवा उपलब्ध कराना और इस क्षेत्र में स्वास्थ्य सुविधाओं को बढ़ावा देना है। जेपी हॉस्पिटल और रिसर्च सेंटर ने स्वास्थ्य देखभाल में उत्कृष्टता और नवाचार के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के साथ एक प्रमुख चिकित्सा सेवा प्रदाता के रूप में अपनी पहचान बनाई है। इस समझौता ज्ञापन के माध्यम से, अस्पताल धनबाद और आसपास के क्षेत्रों के लोगों को सुलभ, उन्नत और किफायती स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करने के अपने मिशन को पुनः स्थापित करता है।

जेकेएलएम ने सरकार की विफलता पर उठाए सवाल

▶ मंईयां सम्मान योजना और अवैध कोयला तस्करी पर जताई नाराजगी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : चंदनक्यारी मे अवैध कोयले की तस्करी, नगर निकाय चुनाव, मंईयां सम्मान योजना की विफलता और राज्य मे व्याप्त भ्रष्टाचार पर जेकेएलएम ने सर्किट हाउस मे प्रेस कॉन्फ्रेंस कर बताया कि झारखंड लोकतांत्रिक क्रांतिकारी मोर्चा के नेताओं ने चंदनक्यारी मे अवैध कोयले की तस्करी, मंईआ सम्मान योजना मे सरकार की विफलता, नगर निकाय चुनाव के बाबत ट्रिपल टेस्ट पर पार्टी को आपत्ति और सीओ, बीडीओ कार्यालय में प्राप्त भ्रष्टाचार को लेकर एक प्रेस कांफ्रेंस आयोजित किया गया। इस प्रेस कॉन्फ्रेंस में चंदनक्यारी के पूर्व प्रत्याशी अर्जुन रजवार ने अमलाबाद और शिव बाबूडीह क्षेत्र मे हो रहे अवैध कोयले की तस्करी सहित भोजुड़ीह रेलवे साइडिंग मे बोकारो स्टील को सप्लाई होने वाले ऑस्ट्रेलियन कोक के रोजाना तस्करी पर गहरी नाराजगी व्यक्त की है। पिछले दिनों बोकारो के पुलिस अधीक्षक को भी इस संबंध मे ज्ञापन दिया गया था और कोई कार्रवाई न होता देख आज फिर प्रशासन को कड़े लहजे में चेतावनी दी गई है। पार्टी के केंद्रीय प्रवक्ता विजय कुमार सिंह ने कहा कि नगर निकाय चुनाव में जे के एल एम के समर्थन से उनके उम्मीदवार चुनाव मैदान में होंगे ।

मथुरा नगर में लकड़ी मील संचालन से ग्रामीण परेशान, पीएमओ को लिखा पत्र

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

धनबाद : वार्ड 23 के कोला कुसमा मथुरा नगर धनबाद में आबादी वाला क्षेत्र में रंगदारी बल पूर्वक लकड़ी मील चलाने की वजह से आस पास के घरों का दिवाल में दरार पड़ने व मना करने पर संचालक द्वारा जान मारने व झूठा केश में फसाने की धमकी देने की लिखित शिकायत मथुरा नगर कोला कुसमा के तारा देवी सहित अन्य निवासियों ने पीएमओ, उपायुक्त, एसएसपी, एसडीओ, नगर आयुक्त, सांसद ढुलू महतो, सरायढेला थाना सहित अन्य को लिखित शिकायत देकर कार्यवाई की मांग की है, ग्रामीणों ने बताया कि आरा मशीन संचालक घनी आबादी वाला क्षेत्र में वन विभाग के अनुमति के बगैर रंगदारी पूर्वक दबंगता से आरा मशीन का संचालन कर रहा है,जिससे आस पास के महिलाओं व बड़े बूढों में सांस की बीमारी व अन्य बीमारियों के चपेट में आ रहे है। ग्रामीणों ने अविलम्ब कार्यवाई नही होने पर सड़क पर उतर कर आंदोलन का रुख अपनाने की बात कही।

बीएसएल के आरएम एवं एमएचपी के कर्मचारी का प्रबंधक ने किया मानसिक उत्पीड़न

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : बीएसएल के आरएम एवं एमएचपी विभाग के विद्युत अनुभाग में संजय कुमार अंबेडकर रविवार को द्वतीय पाली में एमसीसी - 5 में कॉनवेयर केपी 9-1 में परेशानी आई जिसे एमसीसी- 2 में कार्यरत कर्मचारी, ठेका श्रमिक और आदर्शा कंपनी के लोग चलाने की कोशिश कर रहे थें। इसी बीच कुछ गड़बड़ी हुई और विभाग के सभी कॉनवेयर रुक गए। प्रबंधक नीतीश कुमार जो कि पाली प्रभारी थें, ने वायरलेस पर यह सूचना दिया जिसके उपरांत विद्युत अनुभाग के उपस्थित सभी लोगों ने कुशलता दिखाते हुए सभी कॉनवेयर का संचालन सामान्य कर दिया परन्तु केपीसी- 8 कॉनवेयर का संचालन में थोड़ी देरी हो गई। यह कॉनवेयर एमसीसी- 5 के क्षेत्राधिकार में नहीं आता है फिर भी प्रबंधक नीतीश कुमार ने एमसीसी -5 में आकर संजय कुमार अंबेडकर को बिना सोचे समझे डाँटने फटकारने लगे। उन्होंने असंसदीय भाषा का प्रयोग किया। संजय का नौकरी खा जाने की धमकी दी एवं जाति सूचक शब्दों का भी उपयोग किया। संजय अंबेडकर ने यह जानकारी सेल एससी एवं एसटी इम्प्लाइज फेडरेशन बोकारो यूनिट के अध्यक्ष शम्भु कुमार को अगले दिन दिया जिसके बाद शम्भु कुमार ने विभाग के मुख्य महाप्रबंधक एवं बीएसएल के इंटरनल ग्रीवनसेस कमिटी को नीतीश कुमार की शिकीयत की। गुरुवार को बीएसएल के मानव संसाधन विभाग के पहल पर सेल एससी एवं एसटी इम्प्लाइज फेडरेशन बोकारो यूनिट का प्रतिनिधिमंडल ने शम्भु कुमार अध्यक्ष बोकारो यूनिट सह सदस्य केन्द्रीय कमिटी के नेतृत्व में विभाग के मुख्य महाप्रबंधक के कार्यालय में संजय अंबेडकर के मुद्दे पर वार्ता किया और नीतीश कुमार प्रबंधक के खिलाफ कार्यवाही के लिए कहा। शम्भु कुमार ने कहा कि अगर समय रहते नीतीश कुमार के खिलाफ कार्यवाही नहीं होती है तो फेडरेशन मामले को सेल अध्यक्ष और राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग के समक्ष रखेगा।

स्टील प्लांट मे कार्यरत कर्मियों ने ली झामुमो की सदस्यता

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : झारखंड मुक्ति मोर्चा का पूरे राज्य मे चलाए जा रहे सदस्यता अभियान के तहत झारखण्ड मुक्ति मोर्चा केन्द्रीय सदस्य सह जय झारखंड मजदूर समाज के महामंत्री बि के चौधरी के नेतृत्व मे बोकारो स्टील प्लांट मे कार्यरत इस्पातकर्मी एवं ठेकाकमीर्यों के बीच आज दसवें दिन कोक ओवेन एन्ड कोक केमिकल बिभाग मे सदस्यता अभियान चलाया गया। सदस्य बनने के लिए लोग कतारबद्ध होकर सदस्यता फार्म मे अंकित डाटा को भरबाते हुए हस्ताक्षर किया। उपस्थित जनो को सम्बोधित करते हुए माननीय बि के चौधरी ने कहा कि प्रदेश मे अकूत खनीज सम्पदा के रहते हुए यहां देश मे सबसे ज्यादा भुखमरी ,बेरोजगारी सभी प्रकार के बिकाश से दूर था। परिस्थित को देखते हुए माननीय गुरुजी शिबू सोरेन के नेतृत्व मे राज्य को अलग करने की लड़ाई पश्चात राज्य तो अलग हुआ लेकिन इन 24 बर्षों अधिकतम शाशन भाजपा का रहा जो राज्य को लूटने का काम किया लेकिन जनता समझते बूझते भाजपा को सत्ता से बेदखल करते हुए माननीय हेमन्त सोरेन जी की सरकार बनबाई जो गत 6 बर्षों मे झारखंड का काया कल्प करते हुए राज्य को सुख समृद्ध बनाने मे लगे हुए है । इसलिए झारखंड मुक्ति मोर्चा को और भी मजबूत और ताकत देने की जरूरत है। यह सदस्यता अभियान प्लांट मे पूरा होने के बादनगरप्रशासनके हर बिभागमे भी निरंतरजारी रहेगा। कार्यक्रम मे मुख्य रूप से संयुक्त महामंत्री एन के सिंह, एस के सिंह, अनील कुमार, सी के एस मुंडा, तुलसी साहू, आई अहमद, रोशन कुमार, आर भी सिंह, रामेश्वर मांझी, बिनोद कुमार, मोहन मरांडी, सुनील बैठा, विनय उरांव, सुनील कच्छप, तपेश्वर कुमार, भगीरथ, बलराम, तरनी महतो इत्यादि उपस्थित थे।

बीबीएमकेयू में डिजिटल अरेस्ट एवं साइबर अपराध पर जागरूकता कार्यक्रम का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

धनबाद : बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय में मास कम्यूनिकेशन विभाग एवं पॉलिटिकल साइंस विभाग और आइक्यूएसी प्रकोष्ठ द्वारा संयुक्त तत्वाधान में विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ राम कुमार सिंह की अध्यक्षता में डिजिटल अरेस्ट एवं साइबर क्राइम : सुरक्षा और रोकथाम के विषय पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया. जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में साइबर सुरक्षा विशेषज्ञ दीपक कुमार ने सेमिनार में डिजिटल अरेस्ट एवं साइबर अपराध रोकथाम पर विभिन्न बिंदुओं पर चर्चा कर कार्यक्रम में शामिल सभी को साइबर अपराध एवं ठगी से बचाव के लिए जागरूक किया। आगे दीपक कुमार ने कहा डिजिटल अरेस्ट साइबर अपराधी द्वारा रचित एक शब्द है। कानून में इस शब्द का जिक्र कहीं भी नहीं है। साइबर अपराधी वीडियो कॉल, ईमेल, एसएमएस आदि के जरिए लोगों को बरगला कर शिकार बनाते हैं जिससे सभी को जागरूक होने की जरूरत है। जब कभी भी संदिग्ध ओटीपी या मैसेज आए उसे इग्नोर करें और आवश्यकता पड़े तो नजदीकी थाना में रिपोर्ट करें।

साइबर अपराध एवं ठगी से बचाव जरुरी : कुलपति

कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति (वरिष्ठ प्रो) डॉ राम कुमार सिंह ने कहा कि आज के डिजिटल युग में साइबर अपराध एवं ठगी से बचाव जरुरी है। उन्होंने गांधी जी के ध्येय वाक्य बुरा मत देखो, बुरा मत कहो, बुरा मत सुनो का जिक्र करते हुए कहा कि इस डिजिटल युग में हम सभी को जागरुक एवं सतर्क होकर डिजिटल प्लेटफार्मों को प्रयोग करने की आवश्यकता है। साइबर अपराधी के हाथों ब्लैकमेलिंग होने से सभी को बचना चाहिए। कार्यक्रम में आगे आइक्यूएसी के संयोजक सह प्रिंसिपल आर एस मोर कॉलेज गोविंदपुर डॉ प्रवीण सिंह ने साइबर अपराध एवं रोकथाम को लेकर कहा कि अगर आप तकनीकी समझ और जागरूक होकर कोई भी डिजिटल प्लेटफॉर्म का प्रयोग करते हैं तो आप साइबर ठगी से बच सकते हैं। जनसंचार विभागाध्यक्ष सह कार्यक्रम के संयोजक डॉ जितेंद्र आर्यन ने मुख्य वक्ता का परिचय देते हुए बताया कि डिजिटल अरेस्ट एवं साइबर अपराध रोकथाम के प्रति सभी को जागरूक होने की आवश्यकता है आज के समय में अगर साइबर क्राइम के प्रति जागरूक रहे तो साइबर ठगी से बच सकते हैं। कार्यक्रम का संचालन राजनीति विज्ञान विभाग के सहायक प्रो डॉ अमूल्य सुमन बेक ने किया। कार्यक्रम की शुरूआत द्वीप प्रज्वलित कर की गई।

संक्षिप्त खबरें

भाजपा का एकदिवसीय कार्यशाला का हुआ आयोजन

धनबाद : गुरुवार को भारतीय जनता पार्टी राजगंज मंडल अन्तर्गत नगरीकला दक्षिण पंचायत भवन में पार्टी के निदेर्शानुसार एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस दौरान महापुरुषों के छायाचित्र पर पुष्पांजलि करके कार्यक्रम की शुरूआत की गई। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता राजगंज मंडल अध्यक्ष रणजीत सिंह के अध्यक्षता व संचालन मंडल महामंत्री संजीत सिंह ने किया। मुख्य रूप से संगठन महापर्व चुनाव पर्यवेक्षक रति रंजन गिरि एवं मंडल सहयोगी रमेश महतो उपस्थित हुए सभी शक्ति केंद्र में संयोजक एवं सहसंयोजक का नियुक्ति किया गया जल्द से जल्द सभी बूथों में बूथ कमेटी का गठन करना है एवं अधिक से अधिक सक्रिय सदस्य बनाना है। कार्यक्रम में सुरेश महतो, लक्ष्मण पासवान, प्रदीप वर्मा, अजय साहनी, संजय सिंह, शंकर निषाद, मनोज वर्मा, राजकुमार सिंह, नीरज कुमार सिंह, लखी चंद्र रजवार, चंद्रभान प्रसाद, दुर्गा प्रसाद महतो, महादेव महतो, अशोक कुमार, सपन पंडित,आर के चौधरी, अशोक ठाकुर, डब्लू कुमार, राहुल बजरंगी, सिंकु पांडे, धीरेंद्र रवानी, मनजीत तिवारी सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

जिला के विकास के लिए बनाएं बेहतर योजना : उपायुक्त

धनबाद : उपायुक्त सह जिला दंडाधिकारी सुश्री माधवी मिश्रा की अध्यक्षता में गुरुवार को जिला सीएसआर कमेटी की बैठक आयोजित की गई। इस अवसर पर उपायुक्त ने शिक्षा, समाज कल्याण, खेल सहित अन्य विभाग को सीएसआर फंड से जिला के विकास के लिए बेहतर योजना बनाने का निर्देश दिया। साथ ही पूरी हो चुकी योजनाओं का शत प्रतिशत युटिलिटी सर्टिफिकेट समय पर समर्पित करने का निर्देश दिया। बैठक के दौरान उपायुक्त ने ई.सी.एल. मुगमा, बी.स.सी.एल., हर्ल सहित अन्य कंपनियों द्वारा सीएसआर से की जा रही विकास योजनाओं की समीक्षा की। बैठक में उपायुक्त सुश्री माधवी मिश्रा, जिला पंचायती राज पदाधिकारी मुकेश कुमार बाउरी, जिला समाज कल्याण पदाधिकारी अनीता कुजूर, चिरकुंडा नगर परिषद के कार्यपालक पदाधिकारी विजय कुमार हांसदा, सिटी मैनेजर नजरुल इस्लाम, जिला खेल पदाधिकारी उमेश लोहरा, जिला शिक्षा अधीक्षक आयुष कुमार, बीसीसीएल से सुश्री निलंजना चक्रवर्ती, कुमार मनोज, ईसीएल से श्री चिरंजीव दास, हर्ल से आकाश कुमार, रजत रंजन, एमपीएल से मृत्युंजय राय व अन्य लोग मौजूद थे।

रेशमा कुमारी ने 38 वें नेशनल गेम में जीता स्वर्ण पदक

बोकारो : उत्तराखंड के देहरादून में चल रहे 38वें नेशनल गेम्स में रेशमा कुमारी ने लॉन बॉल में स्वर्ण पदक जीतकर झारखंड और गोमिया का नाम रोशन किया। रेशमा भाटिया एथलेटिक्स अकैडमी बोकारो थर्मल की खिलाड़ी है और पिछले चार वर्षो से कड़ी मेहनत कर रही है। यह उनका पहला नेशनल गेम था जिसमें उन्होंने शानदार प्रदर्शन कर स्वर्ण पदक हासिल किया। रेशमा कुमारी को स्वर्ण पदक की जीत पर बोकारो जीप अध्यक्षा सुनीता देवी एवं समाजसेवी चितरंजन साव ने दिया शुभकामनाएं। वहीं भाटिया एथलेटिक्स अकादमी की खिलाड़ी ने लॉन बॉल में इतिहास रचा है। बताते चले की रेशमा कुमारी साधारण परिवार से निकलकर इतिहास रचा है रेशमा कुमारी गोमिया के होसिर रथ टांड की रहने वाली है उनके पिता सुरेश नोनिया टेंपो चालक है और वह गोमिया डिग्री कॉलेज में थर्ड ईयर की छात्रा है उनकी इस उपलब्धि से पूरे क्षेत्र में खुशी की लहर है। जिप अध्यक्षा एवं समाज सेवी चितरंजन साव ने भाटिया एथलेटिक अकैडमी के प्रशिक्षक आशु भाटिया को बधाई दी एवं रेशमा कुमारी के उज्जवल भविष्य की कामना की।

हाथियों का आतंक जारी, 25 वर्षीय महिला को कुचल कर मार डाला

बोकारो : गोमिया प्रखंड में हाथियों का आतंक जारी है, इन्हें नियंत्रित करने बोकारो जिला प्रशासन और वन विभाग लाचार और बेबस है। गुरुवार की सुबह गोमिया प्रखंड के कंडेर पंचायत के गिधिनिया ग्राम की एक 25 वर्षीय महिला रंजू देवी को एक हाथी ने कुचल कर उसकी जान ले ली। प्रशासन और वन विभाग हाथियों को नियंत्रित करने में अब तक बिफलरहा रहा है। परिणाम स्वरुप हाथियों का आतंक से ग्रामीण काफी दहशत में है। बरसों से गोमिया प्रखंड में हाथियों का आतंक बढ़ता जा रहा है और जान माल की क्षतिके साथ-साथ ग्रामीणों द्वारा अपनी मेहनत से लगाए गए फसलों और साग सब्जियों को भी ये हाथी नुकसान पहुंचा रहे हैं। ग्रामीणों का आरोप है कि प्रशासन और वन विभाग केलापरवाही के कारण यह हाथी पर बेलगाम है और इसका खमियाजा आज ग्रामीणों को भुगतना पड़ रहा है। ग्रामीणों ने राज्य सरकार से जंगली हाथियों पर नियंत्रित करने की मांग की है।

मिथिला महिला समिति ने मनाया वनभोज

बोकारो : प्रतिष्ठित सामाजिक व सांस्कृतिक संस्था मिथिला सांस्कृतिक परिषद की इकाई मिथिला महिला समिति का वनभोज सिटी पार्क में मनाया गया। इस अवसर पर सर्वसम्मति से पूनम मिश्रा को समिति के नये अध्यक्ष का दायित्व दिया गया। निवर्तमान अध्यक्ष सीमा झा ने उन्हें कार्यभार सौंप दिया। विगत दो वर्षों तक मिथिला महिला समिति की अध्यक्ष रहीं सीमा झा का कार्यकाल इस वर्ष 3 फरवरी को पूरा हो गया था। सभी सदस्याओं ने निवर्तमान अध्यक्ष सीमा झा के कार्यकाल की सराहना की। नयी अध्यक्ष पूनम मिश्रा ने कहा कि वे सभी के सहयोग से समिति की गतिविधियों को जारी रखेंगी। इस मौके पर डॉ मंजु झा, किरण मिश्रा, आभा झा, मधुबाला झा, प्रेरणा ओझा, बिनीता, बबीता झा, वंदना झा, नमिता झा, जयंती पाठक, कंचन झा, रुबी, लीला झा, अपर्णा, पद्मा आदि उपस्थित थीं।

जोनल आईजी ने खुद संभाली अफीम की अवैध फसल को नष्ट करने की मुहिम

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

खूंटी : जिला प्रशासन की ओर से अफीम की अवैध खेती के विरुद्ध सख्त कार्रवाई जारी है। इसी क्रम में गुरुवार को खूंटी जिले की मारंगहदा पंचायत के बिरडीह ग्राम क्षेत्र में सघन अभियान चलाया गया, जिसके तहत ट्रैक्टर एवं अन्य संसाधनों के माध्यम से अवैध अफीम फसलों को नष्ट किया गया। इस अभियान में स्वयं जोनल आइजी अखिलेश झा ने भाग लिया और मौके पर अवैध अफीम की फसल को नष्ट किया। उन्होंने पुलिस अधिकारियों को निर्देश दिया कि क्षेत्र में गहन अभियान चलाकर पूरी तरह से अफीम की अवैध खेती को समाप्त किया जाए। प्रशासन की ओर से स्पष्ट किया गया कि अवैध अफीम की खेती के खिलाफ यह अभियान लगातार जारी रहेगा और इसमें संलिप्त व्यक्तियों के विरुद्ध सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी। प्रशासन ने आम जनता से भी अपील की है कि यदि कहीं अवैध अफीम की खेती की सूचना मिले, तो वे तुरंत स्थानीय पुलिस या प्रशासन को सूचित करें। इस दौरान उन्होंने क्षेत्र के लोगों से अफीम की खेती छोड़कर वैकल्पिक खेती अपनाने का अपील की। मौके पर पुलिस अधीक्षक अमन कुमार, अनुमंडल पदाधिकारी, अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी, अंचल अधिकारी, थाना प्रभारी, पुलिस के जवान आदि उपस्थित थे।

एक नजर

एसडीओ ने किया कस्तूरबा विद्यालय का निरीक्षण

चतरा : सिमरिया एसडीओ सन्नी राज ने आज पत्थलगडा में संचालित कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय का निरीक्षण किया। निरीक्षण के क्रम में बीडीओ कलिंदर साहू, सीओ उदल राम भी शामिल थे। एसडीओ कस्तूरबा बालिका विद्यालय में परिसर में निमार्णाधीन योजनाओं की जांच की। उन्होंने निरीक्षण के बाद संबंधित लोगों को कई आवश्यक दिशा निर्देश दिए। उन्होंने विद्यालय के शिक्षिकाओं और छात्राओं से भी विद्यालय व्यवस्था को लेकर जानकारी ली। विद्यालय परिसर से गंदगी हटाने का निर्देश दिया। यहां पेयजल संकट को देखते हुए पीएचडी विभाग के अभियंता को फोन से पेयजल समस्या को दुरुस्त करने का निर्देश दिया। वे विद्यालय की समस्याओं से अवगत हुए और इसका शीघ्र निष्पादन करने का निर्देश संबंधित विभाग को दिया है। एसडीओ नावाडीह पंचायत में एक विवादित भूखंड में भी पहुंचे और संबंधित लोगों से जानकारी ली।

झामुमो का सदस्यता अभियान सात से

खूंटी : झामुमो के जिला कार्यालय मे खूंटी प्रखण्ड संयोजक मण्डली की बैठक गुरुवार को पूर्व प्रखण्ड अध्यक्ष शंकर सिंह मुंडा की अध्यक्षता में हुई। बैठक में सभी संयोजक मंडली के सदस्यों को कम से कम एक सदस्यता रसीद ले कर अपने-अपने क्षेत्रों में नये लोगों को सदस्य बनाने, तीन दिनों के अंदर पंचायत स्तर पर संयोजक मंडली बना कर पंचायत कमेटी का गठन करने का निर्णय लिया गया। बैठक में निर्णय लिया गया है कि सात फरवरी को 11 बजे से खूंटी के तमाड़ मोड़ स्थित जयपाल सिंह मुंडा चौक से झामुमो के सदस्यता अभियान की शुरूआत की जाएगी।

हेसल में गोल्डेन ट्राफी नाईट क्रिकेट टूर्नामेंट का हुआ शुभारंभ

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

अनगड़ा : हेसल में गोल्डेन ट्राफी नाईट क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन किया गया है। यह टूर्नामेंट हेसल क्रिकेट क्लब की ओर से कि जा रही है पहला मैच 5 फरवरी से शुरू किया गया। इस गोल्डेन नाईट टूर्नामेंट में अतिथि के रूप में अनगडा प्रमुख दीपा उरांव उप प्रमुख जयपाल हजाम हेसल मुखिया कविता देवी संगीता देवी अनीता कैथा रब्बानी राज क्रिस्टो कुजूर शिव दास गोस्वामी ग्राम प्रधान राम नाथ करमाली मजबुल खान शामिल थे और पहला मैच चूटू बनाम ओरमांझी चकला के बीच खेला। जिसमें चकला के टीम ने जीत हासिल किया दूसरा जाकिर फईटर बनाम बजरंग ब्रदर्स के बीच खेला गया जिसमें जाकिर फाईटर ने जीता तीसरा कुटे बनाम महेशपुर के बीच खेला गया। जिसमें महेशपुर ने जीत हासिल किया चौथा मैच चिलदाग बनाम सालहन के बीच खेला जिसमें सालहन की टीम ने जीत हासिल किया। इस खेल के मुख्य संरछक मुस्तफा अंसारी कविता देवी रामपोदो महतो रामेश्वर महतो अध्यच मिन्हाज अंसारी कोषाध्यच जबारुल अंसारी सचिव महमूद अंसारी खेल प्रभारी साबिर हसन अमीरूल अंसारी है।

बीडीओ ने जन वितरण प्रणाली दुकानदारों के साथ की समीक्षा बैठक, दिये निर्देश

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

चैनपुर : गुमला उपायुक्त कर्ण सत्यार्थी के निदेर्शानुसार चैनपुर प्रखंड विकास पदाधिकारी यादव बैठा ने गुरुवार को प्रखंड कार्यालय सभागार में प्रखंड के सभी जन वितरण प्रणाली दुकानदारों की समीक्षा बैठक कर जन वितरण प्रणाली दुकान में पारदर्शिता लाने व सुविधाजनक तरीके से संचालित करने से सम्बंधित कई बिन्दुओ पर गहनता पूर्वक दुकानदारों से समीक्षा कर कई निर्देश दिए। साथ ही बैठा ने प्रखंड के सभी पी डी एस दुकानदारों से बारी - बारी कर राशन कार्ड में लाभुकों के ई- केवाइसी, पी एच एच एवं ए ए वाइ राशन कार्ड के वितरण प्रतिशत, ग्रीन राशन कार्ड के वितरण प्रतिशत, चीनी, नमक, सोना सोबरन धोती, साड़ी, लुंगी वितरण की अधतन स्थिति की गहनता पूर्वक समीक्षा की साथ ही जिन जन वितरण दुकानदारों का वितरण प्रतिशत कम प्रदर्शित हुवा उन्हें सख्त निर्देश देते हुवे वितरण प्रतिशत बढ़ाने का निर्देश दिया । आगे उन्हेंने सभी जन वितरण दुकानदारों को ससमय खाद्यान का उठाव एवं वितरण के साथ साथ फरवरी माह के अंत तक सभी लाभुकों के ई केवाइसी शत प्रतिशत करने पर जोर दिया और कहा कि किसी भी प्रकार के अनियमितता की शिकायत होगी तो सम्बंधित दुकानदारों पर सख्त कार्यवाही की जायगी। बैठक में पाँच अनुपस्थित जन वितरण प्रणाली दुकानदारों को स्पष्टीकरण माँगा गया है मौके पर मुख्य रूप से सहायक गोदाम प्रबंधक संदीप टेटे, कंप्यूटर ऑपरेटर मनीष भगत सहित प्रखंड के जन वितरण दुकानदार उपस्थित थे।

संक्षिप्त खबरें

सरिया के बलीडीह में सांस्कृतिक कार्यक्रम का हुआ आयोजन

सरिया (गिरिडीह) : सरस्वती पूजा के अवसर पर सरिया के बलीडीह में एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन बलीडीह नवयुवक समिति की ओर से किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ राजेश सिंह समाजसेवी संदीप तर्वे एवं स्थानीय प्रबुद्ध द्वारा फीता काटकर किया गया। उद्घाटन के बाद राष्ट्रीय गीत एवं प्रयागराज में हुई भगदड़ के दौरान मृत लोगो के प्रति दो मिनट का मौन रख गया। इसके बाद नृत्य एवं संगीत की शुरूआत की गई जिसमें कई प्रकार के गानों पर नृतय की प्रस्तुति हुई। मंच संचालन राजू मंडल ने किया। मौके पर धानेश्वर प्रसाद,बिनोद मंडल, राजकिशोर यादव समेत अन्य लोग शामिल रहे।

संत अन्ना बालिका विद्यालय में त्रिदिवसीय वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता का हुआ समापन

चैनपुर : चैनपुर स्थित संत अन्ना बालिका मध्य विद्यालय में त्रिदिवसीय वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता का फाइनल 5 फरवरी को आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि विद्यालय के सी.आर.पी. महमूद आलम और विशिष्ट अतिथि सिस्टर सुपीरियर रेजिना बेक ने बच्चों को संबोधित किया। कार्यक्रम की शुरूआत कन्स के बच्चों द्वारा स्पेशल इम बाजे के साथ अतिथियों का स्वागत करने से हुई। इसके बाद बच्चों ने स्वागत गान, झारखण्डी संस्कृति की पहचान नागपुरी नृत्य और ड्रिल का प्रदर्शन किया। मुख्य अतिथि महमूद आलम ने अपने संदेश में बच्चों को जीवन में संघर्ष के लिए तैयार रहने की सलाह दी। उन्होंने विजयी प्रतिभागियों को उनके अच्छे खेलकुद प्रदर्शन के लिए भी सराहा। विद्यालय प्रधानाध्यापिका सिस्टर ललिता सौरंग ने मुख्य अतिथि को शॉल देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम के अंत में सफल प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया और विद्यालय पिकनिक के नाम पर बच्चों को स्वादिष्ट और पौष्टिक भोजन दिया गया। इस अवसर पर विद्यालय के शिक्षक-शिक्षिकाएँ और बच्चों के अभिभावक भी मौजूद थे।

क्षेत्र का सर्वांगीण विकास मेरी जिम्मेवारी : सुदीप गुड़िया

खूंटी : तोरपा के विधायक सुदीप गुड़िया गुरुवार को बारकुली पंचायत के कजुरदाग गांव में आयोजित ग्रामसभा में शामिल हुए और ग्रामीणों की समस्या से अवगत हुए। ग्रामीणों ने विधायक को बिजली, पानी, सड़क, चिकित्सा, शिक्षा सहित अन्य समस्याओं की जानकारी दी और समस्याओं के निराकरण का आग्रह किया। सुदीप गुड़िया ने कहा कि आप लोगों के स्नेह और सहयोग से मैं विधायक बना हूं। आपने जिस विश्वास से मुझे वोट दिया था, मेरा प्रयास होगा कि आपके भरोसे पर खरा उतरूं। उन्होंने कहा कि क्षेत्र का सर्वांगीण विकास मेरी जिम्मेवारी है। विधायक ने कहा कि मैं आपका बेटा आपका भाई बनकर आपकी सेवा करूंगा। मौके पर अमृत हेमरोम, अरमान तोपनो, प्रदीप हेमरोम, रंजीत भेगरा, बिलकन हेमरोम, नमजन हेमरोम, रोशनी हेमरोम, मरियम हेमरोम, लुसिया कोनगाडी, कैलाश पाहन सहित अन्य उपस्थित थे।

परमवीर अलबर्ट एक्का मेमोरियल कॉलेज में शुभकामना दिवस का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

चैनपुर : परमवीर अलबर्ट एक्का मेमोरियल कॉलेज चैनपुर में इंटरमीडिएट सेकेंड ईयर के छात्र-छात्राओं के लिए शुभकामना दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मिसेसा पूजा के मुख्य अतिथि फादर अमित डांग ने छात्र-छात्राओं को फोकस निर्धारित कर पढ़ाई करने की सलाह दी। कॉलेज के प्रिंसिपल फादर अगस्तुस एक्का ने अपने संबोधन में कहा कि निरंतर कड़ी मेहनत सफलता का राज है। उन्होंने छात्र-छात्राओं से आत्मबल, सकारात्मक सोच, और लक्ष्य सेट करके परीक्षा की तैयारी करने और लिखने की अपील की। इस अवसर पर विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। बीए सेमेस्टर चार की ओर से मंगलाचरण नाच, बीए सेमेस्टर टू और वन की ओर से फिल्मी और नागपुरिया नाच, इंटरमीडिएट पर्थम की ओर से वेलकम गान, आधुनिक नाच, अभिनंदन पत्र, शुभकामना गीत एवं मिसेसा गीत की प्रस्तुति की गई। इंटर फाइनल एक्जाम देने वाले छात्र-छात्राओं की ओर से भी विदाई पत्र और विदाई गीत की प्रस्तुति की गई। अमित उरांव को मिस्टर फेयरवेल और मनीषा कुमारी को मिस फेयरवेल का ताज मिला। कॉलेज की ओर से सभी को फाइल और आउटगोइंग छात्र-छात्राओं की ओर से कॉलेज को उपहार और उद्गार प्रस्तुत किया गया। वेलकम भाषण इसमिता कुजूर ने दिया, धन्यवाद ज्ञापन मिस पुष्पा तेरेसा एक्का ने किया, और मंच संचालन नेहा खलखो और उज्वल उरांव ने किया। इस शुभकामना समारोह में मुख्य रूप से कॉलेज के सुपीरियर फादर अदिप तिग्गा, फादर अमरित खेरवार, सर बुंदीप लकड़ा, सर अलविन लकड़ा, अनुपम, मिस विक्टोरिया, मिस लूडिया, मिसेस अंजना कुजूर, सर अमित कुजूर, वेयास, नीलिमा, हेलारिया एवं सभी छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

सिल्ली की तीरंदाज तमन्ना वर्मा ने टीम स्पर्धा में रजत पदक जीता

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

सिल्ली : सिल्ली 38वीं राष्ट्रीय खेल उत्तराखंड में आयोजित हुआ जिसमें बिरसा मुंडा तीरंदाजी अकादमी सिल्ली की तीरंदाज तमन्ना वर्मा ने टीम स्पर्धा में रजत पदक जीता साथ ही फाइनल में झारखंड बनाम महाराष्ट्र के बीच मैच खेला गया जिसमें झारखंड टीम ने रजत पदक अपने नाम किया। ज्ञात हो कि इससे पहले भी गोवा में आयोजित राष्ट्रीय खेल में अकादमी की तीरंदाज अग्नि कुमारी ने भी रजत पदक अपने नाम किया था और शुक्रवार को मनीषा कुमारी इंडियन राउंड डिविजन के मिक्स टीम इवेंट में स्वर्ण पदक के लिए निशाना साधेगी और एकल स्पर्धा में कांस्य पदक के लिए मैच खेलेगी। बिरसा मुंडा तीरंदाजी अकादमी की अध्यक्ष नेहा महतो ने कहा कि सिल्ली अकादमी ने झारखंड का नाम हमेशा ही राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पटल पर अंकित किया है। जिससे राज्य के खिलाड़ियों पर गर्व है और पूरी झारखंड तीरंदाजी टीम को बधाईयां साथ ही आज खेले जाने वाले मैच के लिए ढेर सारी शुभकामनाएं।

श्री श्याम बाबा की निशान यात्रा में उमड़ा आस्था का सैलाब

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रामगढ़ : रामगढ़ शहर में श्री श्याम महोत्सव का उल्लास बढ़ता ही जा रहा है। गुरुवार की शाम श्री श्याम बाबा की निशान यात्रा में आस्था का सैलाब उमड़ा। हजारों श्रद्धालु निशान लेकर शहर में निकले और श्री श्याम बाबा के मंदिर तक पहुंचे। श्री श्याम महोत्सव पांच दिवसीय प्राण प्रतिष्ठा में सर्वप्रथम पाच यजमान ने पूजन किया। इसके पश्चात राजस्थान के सूरजगढ़ से आए हुए हजारीमल जी इंदौरइया ने सूरजगढ़ से लाए हुए निशान की पूजा की एवं ज्योति को प्रज्वलित कर मोर पंख के द्वारा सबको आशीर्वाद दिया। सैकड़ो महिलाएं और पुरुष अपने-अपने निशान को लेने के लिए बेताब थे। भगवान हनुमान जी की भगवान गणेश जी की प्रतिमा को मंदिर से क्रेन के द्वारा राजस्थान से आए हुए कुशल कार्यक्रमों ने ट्रक के ऊपर स्थापित करवाया। बाबा श्याम के रंग में रंगे श्रद्धालु जयकारे करते हुए निकले। उनके जयकारे से शहर गूंज उठा। सैकड़ो लोग बाबा का बैनर लेकर चल रहे थे। उसके पीछे ताशा पार्टी चल रही थी। भक्त भगवान शिव के भजनों पर झूमते चल रहे थे। पांच घोड़े की बग्घियों में अलग-अलग झांकियां को सजाई गई थी। राधा कृष्ण, शिव पार्वती और अनेक भगवान उसमें स्थापित थे ।घोड़े की सवारी आगे आगे चल रही थी। महाराष्ट्र के अकोला से आई हुई महिला बैंड ने अपनी छंटा बिखेरी। स्थानीय रामगढ़ की ताशा पार्टी अनेक सदस्यों के साथ झूमती नजर आई। रामगढ़ के स्थानीय कलाकार ध्रुव सिंह, विष्णु शर्मा, कमल बगड़िया एवं अनेक महिला भक्ति भजन गाते हुए चल रहे थे। अनेक गाड़ियों में भगवान का विग्रह स्थापित किया गया था। जगह-जगह सामाजिक संगठनों के द्वारा बाबा का स्वागत किया जा रहा था। खंडेलवाल समाज और अनेक व्यवसायिक संगठन सेवा में लगे हुए थे। जगह-जगह सेवा शिविर लगाया गया। सूरजगढ़ का निशान सबसे पहले चढ़ाया गया। इस पूरे क्षेत्र में भजन कीर्तन की अमृत वर्षा हो रही थी। हजारों हजार लोग पंक्तिबद्ध पंडाल में निशान लेकर प्रवेश कर रहे थे और निशान को जमा करवा रहे थे। 1100 से भी ज्यादा निशान लोगों ने चढ़ाए। बाबा की निशान यात्रा में इत्र की बरसात हो रही थी। अबीर, गुलाल और रंगोली से यात्रा का स्वागत हुआ। सूरजगढ़ से आए इंदौरइया जी ने कहा कि हमने अपने जीवन में पहली बार इस तरह की शोभा यात्रा देखी है, जिसमें भुरकुंडा, कुजू, रांची, गुमला, टाटा, धनबाद, बोकारो से भगवान के भक्त आए थे। शाबर अग्रवाल, अनिल अग्रवाल, संजय चौधरी, विनय अग्रवाल, संजय मथुरा वाले, मुकेश गोंदिया, श्याम परशुरामपुरिया, ओम प्रकाश अग्रवाल, सुरेश बगड़िया, रिंकू अग्रवाल, शिवकुमार अग्रवाल, एवं अनेक भक्त बाबा के संचालन में अपनी जिम्मेवारी को निभा रहे थे। शिल्पी, सीमा अग्रवाल, स्नेहा जैन, संगीता अग्रवाल, मनीष अग्रवाल, मीना बगड़िया, वरुण बगड़िया, एकता पटवारी आदि की सहभागिता रही।

JAPIT
Jharkhand Agency for Promotion of Information Technology
(An Autonomous body under Department of Information Technology, Govt of Jharkhand)
Ground Floor, Engineer's Hostel – I, Near Golchakkar, Dhurwa, Ranchi, Jharkhand
Phone. 0651-2401044, 2401067 e-mail: japit_doit@rediffmail.com

Request of proposal (RFP)
For
Selection of System Integrator for Website Revamping, SEO, Mobile App Development and Maintenance for Dept. of Tourism, GoJ

GeM Tender Reference No.: GEM/2025/B/5912368 DATED 05/02/2025

NOTICE INVITING TENDER: Jharkhand Agency for Promotion of Information Technology (JAP-IT), an autonomous body under Department of Information Technology and e-Governance, Government of Jharkhand on behalf of Department of Tourism, Government of Jharkhand invites online bids for "Selection of Agency for Website Revamping, Maintenance, SEO and Mobile App Development for Department of Tourism, Government of Jharkhand".

The RFP document is available on GEM portal https://gem.gov.in/ Interested Bidders may view, download the RFP document and submit their e-Bid online only on GEM portal as per the date and time mentioned in the table below:

i.	Bid publishing Date	05/02/2025 3:30 PM
ii.	Last Date for sending Pre-Bid Query	13/02/2025
iii.	Pre-bid meeting	14/02/2025 at 03:00 PM
iv.	Start date of bid submission	18-07-2024 11:30 AM
v.	Last date and time of Online Bid Submission	27/02/2025 at 03:30PM
vi.	Pre-Qualification and Technical Bid Opening	28/02/2025 at 03:30PM
vii.	Date of Technical Presentation	To be informed later
viii.	Commercial Bid Opening	To be informed later.
ix.	Place of Pre-Bid Meeting/ Communication/ Bid Submission/ Bid Opening	JAP-IT, Ground Floor, Engineers Hostel 1, Near Golchakkar, Dhurwa, Ranchi-04
x.	Contact/ Pre-Bid query e-mail Id	japit_doit@rediffmail.com, ceo.japit@jharkhandmail.gov.in ceo.japit@jharkhandmail.gov.in

Interested bidders may visit the GeM portal.

Sd /-
OSD, JAP-IT

PR 345956 Information Technology(24-25)#D

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

झारखण्ड शिक्षा परियोजना, सिमडेगा
नए समाहरणालय भवन, ब्लॉक–ए,द्वितीय तल्ला
दूरभाष: 06525–225835 फैक्स: 225836
E-mail:- ssasimdega@yahoo.co.in

पत्रांक दिनांक

आम–सूचना

शैक्षणिक सत्र 2025–26 के कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय, बानो, बोलबा, जलडेगा, कोलेबिरा, कुरडेग, सिमडेगा, ठेठईटांगर एवं झारखण्ड बालिका आवासीय विद्यालय, पाकरटाड, बांसजोर केरसई में बालिकाओं के नामांकन की प्रक्रिया प्रारंभ की जा चुकी है।

जिला के सभी प्रखण्डों में अवस्थित कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय / झारखण्ड बालिका आवासीय विद्यालय में कक्षा 6 से 12 में रिक्ति के विरुद्ध नामांकन में निम्नांकित श्रेणी की बालिकाओं को प्राथमिकता प्रदान की जायेगी।

- विद्यालय के बाहर अथवा छीजित बालिका।
- आदिम जनजाति समूह की बालिका।
- ट्रैफिकिंग से प्रभावित बालिकाएँ।
- नक्सल प्रभावित बालिकाएँ एवं सुदूरवर्ती क्षेत्र में रहने वाली अनुसूचित जाति / जनजाति समुदाय की बालिका।
- अभिवंचित वर्ग की बालिकाओं यथा अनुसूचित जनजाति, अनुसूचित जाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, अल्पसंख्यक समुदाय एवं वैसे परिवार की बालिका, जो गरीबी रेखा से नीचे है।
- वास्तविक रूप से जरूरतमंद बालिका।

कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय / झारखण्ड बालिका आवासीय विद्यालय में नामांकन हेतु:–

- जिला के कोई भी निवासी / जन सामान्य उक्त कोटि के बच्चियां की जानकारी होने पर संबंधित सूचना अपने पोशक क्षेत्र के नजदीकी विद्यालय के माध्यम अथवा सीधे निकटवर्ती कस्तूरबा गाँधी बालिका वद्यालय / झारखण्ड बालिका आवासीय विद्यालय में कार्यालय अवधि में उपलब्ध करा सकते है।
- जिला स्तरीय पुलिस विभाग, बाल संरक्षण आयोग के ईकाई कार्यालय, उपायुक्त कार्यालय एवं स्वंय सेवी संस्थाओं से उक्त प्रकार के बच्चियों की प्राप्त सूची को भी शामिल किया जायेगा।
- इसके अतिरिक्त विद्यालय प्रबंधन समिति (SMC) के सदस्यों से प्राप्त सूची एवं विद्यालय में अध्ययनरत् छात्राओं के द्वारा दी गई जानकारी के आधार पर छीजित बालिकाओं की सूची को भी शामिल किया जायेगा।
- विद्यालय स्तर दिनांक 22.02.2025 तक प्राप्त सूची को प्रखण्ड चयन समिति द्वारा जांचोपरांत अनुशंसित / चयनित बालिकाओं की सूची झारखण्ड शिक्षा परियोजना कार्यालय, सिमडेगा को दिनांक 28.02.2025 तक अनिवार्य रूप से उपलब्ध कराया जायेगा।

विशेष जानकारी हेतु नजदीकी कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय / झारखण्ड बालिका आवासीय विद्यालय अथवा झारखण्ड शिक्षा परियोजना, सिमडेगा के कार्यालय अवधि में संपर्क किया जा सकता है।

जिला शिक्षा पदाधिकारी–सह–
जिला कार्यक्रम पदाधिकारी
झारखण्ड शिक्षा परियोजना, सिमडेगा।

PR 345913 Simdega(24-25)D

मोहन के जापान दौरे से मध्यप्रदेश के औद्योगिक विकास को मिलेगी नई दिशा

हर्षवर्धन पाण्डे

मध्य प्रदेश वैश्विक निवेशक शिखर सम्मेलन 24-25 फरवरी 2025 को भोपाल में आयोजित होगा और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इस कार्यक्रम का उद्घाटन करेंगे। इस दो दिवसीय शिखर सम्मेलन में 30 से अधिक देशों के 15,000 से अधिक निवेशकों के शामिल होने की उम्मीद है। यह सम्मेलन उद्योगपतियों के लिए आकर्षण का एक प्रमुख केंद्र होगा। इस बार की समिट में जापान कंट्री पार्टनर होगा जिससे दोनों देशों के बीच आर्थिक सहयोग को मजबूती मिलेगी।

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की जापान यात्रा ने न केवल जापान की औद्योगिक प्रगति और विकास को करीब से समझने का अवसर प्रदान किया बल्कि वहाँ के लोगों की जीवनशैली, संस्कृति, तकनीकी विकास को भी करीब से देखा। जापान सरकार और प्रवासी भारतीयों द्वारा डॉ. यादव का गर्मजोशी से स्वागत किया गया। जापान में उनकी यात्रा का उद्देश्य एमपी और जापान के सांस्कृतिक और व्यापारिक संबंधों को मजबूत करना रहा। जब वह टोक्यो पहुंचे तो उनका वहाँ स्थानीय प्रशासन द्वारा स्वागत किया गया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव जापान दौरे के पहले दिन टोक्यो में विभिन्न महत्वपूर्ण बैठकों और कार्यक्रमों में शामिल हुए। टोक्यो में जापान के निवेशकों और औद्योगिक संस्थानों के प्रमुखों के साथ मध्यप्रदेश में औद्योगिक गतिविधियों के बढ़ावा देने वाले क्षेत्रों और संभावनाओं के विषयों पर चर्चा की। इस दौरान मुख्यमंत्री डॉ. यादव फ्रेंड्स ऑफ एमपी-जापान टीम के साथ भेंट करने के साथ ही टोयोटा मोटर कॉरपोरेशन के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ औद्योगिक और निवेश सहयोग के विषय पर बैठक की जिसके बाद टोक्यो स्थित भारतीय दूतावास में सेलिब्रेटिंग इंडिया-जापान रिलेशनशिप : फोकस मध्यप्रदेश रोड-शो में भी सहभागिता की ।

जापान के तकनीकी विकास से डॉ. मोहन यादव को काफी प्रभावित किया। उन्होंने देखा कि कैसे जापान अपने अत्याधुनिक तकनीकी अविष्कारों और इंफ्रास्ट्रक्चर के माध्यम से दुनिया भर में एक महत्वपूर्ण स्थान बना चुका है। वहाँ की रेल प्रणाली ने उन्हें खासा प्रभावित किया। उन्होंने बुलेट ट्रेन की सवारी की और महसूस किया कि कैसे यह तकनीकी दृष्टि से दुनिया के सबसे तेज और सुरक्षित परिवहन साधनों में से एक है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने जापान एक्सटर्नल ट्रेड ऑर्गनाइजेशन के साथ टोक्यो के मिनाटो-कू में विस्तृत चर्चा की जिसमें जापानी कंपनियों के मध्यप्रदेश में निवेश को लेकर संभावनाओं और सहयोग के विभिन्न पहलुओं पर विचार-विमर्श हुआ। जेट्रो ने मध्यप्रदेश सरकार के साथ बड़े निवेश पर चर्चा की। डॉ. मोहन यादव ने जापान इंटरनेशनल कोऑपरेशन एजेंसी को मध्यप्रदेश में हाइड्रो प्रोजेक्ट में निवेश करने के लिये आमंत्रित किया। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चिकित्सा उपकरणों का उत्पादन करने वाली कंपनी एएनडीडी मेडिकल के निदेशक डाइकी अराई ने मध्य प्रदेश में निर्माण इकाई स्थापित करने की मंशा जाहिर की।मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने टोक्यो में एएनडी मेडिकल कम्पनी के निदेशक डाइकी अराई से मुलाकात कर मध्यप्रदेश में चिकित्सा उपकरण निर्माण के अवसरों पर विस्तृत चर्चा की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने उज्जैन के अत्याधुनिक मेडिकल डिवाइस पार्क में निवेश के लिये आमंत्रित करते हुए कहा कि मध्यप्रदेश सरकार औद्योगिक इकाइयों को रियायती दरों पर भूमि उपलब्ध करा रही है। उन्होंने इस पार्क को भारत के तेजी से विकसित हो रहे हेल्थ केयर और मेडिकल डिवाइस सेक्टर का एक महत्वपूर्ण केन्द्र बताया। उज्जैन में बन रहे मेडिकल डिवाइस और मुख्य रूप से मेडिकल सेक्टर के लिए भी जापान के उद्योगपतियों से निवेश की बात कही है। सीएम डॉ. यादव के प्रयासों से मध्य प्रदेश में मेडिकल और फार्मास्यूटिकल मैन्युफैक्चरिंग का नया हब बनने जा रहा है जिसके लिए जापान से निवेशकों के बड़े प्रस्ताव भी मिले हैं। उन्होंने सिस्मेक्स की अत्याधुनिक मेडिकल डिवाइस निर्माण तकनीक का अवलोकन किया और मध्यप्रदेश में सिस्मेक्स को आमंत्रित किया।

एएंडडी मेडिकल ने मध्यप्रदेश में अपनी निर्माण इकाई स्थापित करने में विशेष रूचि दिखाते हुए इसे वर्ष के अंत तक इसे शुरू करने की बात कही है। जापान की एएंडडी मेडिकल कम्पनी वैश्विक स्तर पर चिकित्सा उपकरण और स्वास्थ्य निगरानी उत्पादों का उत्पादन करती है। डॉ. मोहन यादव ने कोबे और ओसाका में स्थित हेल्थ केयर और डॉयग्नोस्टिक कम्पनी साइसमेक्स प्रमुख औद्योगिक कम्पनियों के उद्योगपतियों के साथ बैठक की और हेल्थ केयर, ऊर्जा और मैन्युफेक्चरिंग क्षेत्रों में निवेश एवं साझेदारी पर भी चर्चा की। उन्होंने जापानी कार निमार्ता कंपनी ह्वाटोयोटा मोटर कॉरपोरेशन के वरिष्ठ अधिकारियों से भी मुलाकात कर उनसे मध्य प्रदेश में निवेश की संभावनाओं पर चर्चा की।पैनासोनिक एनर्जी कपंनी लिमिटेड, डॉयग्नोस्टिक कंपनी साइसमेक्स सहित कई औद्योगिक कंपनियों ने बैटरी निर्माण और प्रदेश में ऊर्जा भंडारण के क्षेत्र में गहरी रूचि दिखाई और एमपी में भरपूर निवेश का भरोसा दिलाया। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने अपने जापान दौरे में प्रवासी भारतीयों की प्रशंसा करते हुए कहा कि आपने जो नींव तैयार की है उसका फायदा भारत की आने वाली पीढ़ियों को मिलेगा।जापान की यात्रा डॉ.मोहन यादव के लिए एक अद्वितीय अनुभव है। जापान में डॉ. यादव की सादगी लोगों के दिल में उतर गई। डॉ. यादव ने अपने सोशल मीडिया में एक ऐसा वीडियो शेयर किया जो खूब वायरल हो रहा है जिसे देखकर लोग भावुक हो रहे हैं। इस वीडियो में उनके सहज, सरल और आकर्षक व्यक्तित्व की विलक्षण छाप देखने को मिल रही है। लोग जापानी अंदाज और भाषा में उन्हें विदाई दे रहे हैं। इम्पीरियल होटल से चेक-आउट करते समय होटल के सदस्यों ने बड़ी देर तक खड़े होकर उनके लिए तालियां बजाईं और तस्वीरें खिंचवाईं। लोग तब तक होटल के मुख्य द्वारा पर खड़े रहे, जब तक सीएम डॉ. यादव कार में नहीं बैठे।

मध्य प्रदेश वैश्विक निवेशक शिखर सम्मेलन 24-25 फरवरी 2025 को भोपाल में आयोजित होगा और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इस कार्यक्रम का उद्घाटन करेंगे। इस दो दिवसीय शिखर सम्मेलन में 30 से अधिक देशों के 15,000 से अधिक निवेशकों के शामिल होने की उम्मीद है। यह सम्मेलन उद्योगपतियों के लिए आकर्षण का एक प्रमुख केंद्र होगा। इस बार की समिट में जापान कंट्री पार्टनर होगा जिससे दोनों देशों के बीच आर्थिक सहयोग को मजबूती मिलेगी। जापानी निवेशकों के अलावा अन्य देशों के भी निवेशक इस समिट में भाग लेंगे। ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट 2025 मध्य प्रदेश के आर्थिक विकास के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर साबित होगी। इस आयोजन से नए उद्योगों की स्थापना, रोजगार के अवसरों में वृद्धि और राज्य की औद्योगिक छवि को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने की उम्मीद है। कहा जा सकता है कि डॉ.मोहन यादव का जापान दौरा एमपी में जापानी कंपनियों के बीच निवेश को बढ़ावा देने में कारगर साबित हुआ है। उन्होंने अपनी चार दिन की जापान यात्रा में न केवल जापान के प्रमुख उद्योगपतियों से मुलाकात की और निवेश और व्यापार के नए अवसरों को तराशा बल्कि जापानी समाज और संस्कृति को समझने का एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान किया। उन्होंने वहाँ की तकनीकी प्रगति, कला, संस्कृति और व्यापारिक दृष्टिकोण को अपनी यात्रा के अनुभवों में समाहित किया। यह यात्रा मध्यप्रदेश और जापान के बीच संबंधों को प्रगाढ़ करने में भी सहायक साबित हुई है।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)

(यह लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं इससे संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है)

संपादकीय

निर्वासन की समस्या

अंततः महिला, पुरुष और बच्चों सहित एक सौ चार अवैध भारतीय अप्रवासियों को लेकर अमेरिकी सैन्य विमान भारत पहुंच गया। अमेरिका में उचित दस्तावेज के बिना रहने वाले इन भारतीयों में पंजाब, हरियाणा, गुजरात, उत्तर प्रदेश आदि राज्यों के लोग हैं। वैसे तो अमेरिका अवैध अप्रवासियों को निर्वासित करता रहता है, लेकिन राष्ट्रपति ट्रंप के दूसरे कार्यकाल का भारत के लिए यह पहला निर्वासन है। इस संबंध में भारत और अमेरिका के बीच बात भी हो चुकी थी और ऐसा निर्वासन ट्रंप की चुनावी घोषणाओं में भी शामिल था। जहां कुछ अन्य देशों ने इस तरह के निर्वासन पर अपनी आपत्ति जताई वहां भारत ने इसे सहज स्वीकार किया है। कोई भी संप्रभु राष्ट्र ऐसे अप्रवासियों को बर्दाश्त नहीं कर सकता जो अवैध तरीके से पहुंच कर न केवल उनके आर्थिक संसाधनों पर बोझ बनते हैं, बल्कि कानून व्यवस्था के लिए भी संकट खड़ा करते हैं। अमेरिका सहित यूरोप के बहुत से देश इस तरह के अप्रवासन का संकट महसूस कर रहे हैं। स्वयं भारत भी अवैध घुसपैठियों की समस्या का सामना कर रहा है। यहां के राजनीतिक हलकों में हर दिन इसकी गूंज सुनाई देती है। इस समय भारत सरकार की नीति भी अवैध अप्रवासियों को रोकने की है जो पड़ोसी देशों से आकर बस गए हैं। भले ही इस पर कुछ समूह मानवाधिकार या नैतिकता का प्रश्न खड़ा करें लेकिन भारत के पास स्वयं अपनी स्थिति को देखते हुए इस निर्वासन को अमेरिकी शर्तो के साथ स्वीकार करने के अलावा कोई रास्ता नहीं है। वैसे भारत की जिम्मेदारी यह भी बनती है कि वह दोहरी व्यवस्था को चाक-चौबंद करे। पहली यह कि उसके यहां अवैध अप्रवासन न हो और दूसरी यह कि यहां से अवैध ढंग से पलायन न हो। भारत एक और गंभीर समस्या से जूझ रहा है कि बड़ी संख्या में ऐसे लोग भी अमेरिका, यूरोप के देशों में जाकर बसते हैं, जो या तो भारत विरोधी हैं, या आपराधिक गतिविधियों में संलग्न हैं। ऐसे लोग भारत में प्रताड़ित होने का स्वांग रचते हैं, और सहानुभूति के नाम पर वहां की नागरिकता प्राप्त कर लेते हैं। अमेरिका और कनाडा से ऐसी घटनाएं उजागर हुई हैं जिन्होंने द्विपक्षीय संबंधों को खतरे में डाला है। इसलिए भारत सरकार को प्रयास करना चाहिए कि अवैध तरीके से लोगों को विदेश भेजने वाले गिरोहों पर लगाम लगाए।

चिंतन-मनन

मन की शक्ति

मन को जीवन का केंद्रबिंदु कहना असंभव नहीं है। मनुष्य की क्रियाओं, आचरणों का प्रारंभ मन से ही होता है। मन तरह-तरह के संकल्प, कल्पनाएं करता है। जिस ओर उसका रुझान हो जाता है उसी ओर मनुष्य की सारी गतिविधियां चल पड़ती है। जैसी कल्पना हो उसी के अनुरूप प्रयास-पुरुषार्थ एवं उसी के अनुसार फल सामने आने लगते हैं। मन जिधर रस लेने लगे उसमें लौकिक लाभ या हानि का बहुत महत्व नहीं रह जाता। प्रिय लगने वाले के लिए सब कुछ खो देने और बड़े से बड़े कष्ट सहने को भी मनुष्य सहज ही तैयार हो जाता है। मन यदि अच्छी दिशा में मुड़ जाए; आत्मसुधार, आत्मनिर्माण और आत्मविकास में रुचि लेने लगे तो जीवन में एक चमत्कार हो सकता है। सामान्य श्रेणी का मनुष्य भी महापुरुषों की श्रेणी में आसानी से पहुंच सकता है। सारी कठिनाई मन को अनुपयुक्त दिशा से उपयुक्त दिशा में मोड़ने की ही है। इस समस्या के हल होने पर मनुष्य सच्चे अर्थ में मनुष्य बनता हुआ देवत्व के लक्ष्य तक सुविधापूर्वक पहुंच सकता है।

शरीर के प्रति कर्तव्य पालन करने की तरह मन के प्रति भी हमें अपने उत्तरदायित्वों को पूर्ण करना चाहिए। कुविचारों और दुर्भावनाओं से मन गंदा, मलिन और पतित होता है, अपनी सभी विशेषता और श्रेष्ठताओं को खो देता है। इस स्थिति से सतर्क रहने और बचने की आवश्यकता का अनुभव करना हमारा पवित्र कर्तव्य है। मन को सही दिशा देते रहने के लिए स्वाध्याय की वैसी ही आवश्यकता है जैसे शरीर को भोजन देने की। आत्मनिर्माण करने वाली जीवन की समस्याओं को सही ढंग से सुलझाने वाली उत्कृष्ट विचारधारा की पुस्तकें पूरे ध्यान, मनन और चिंतन के साथ पढ़ते रहना ही स्वाध्याय है। यदि सुलझे हुए विचारों के जीवन विद्या के ज्ञाता कोई संभ्रांत सज्जन उपलब्ध हो सकते हों तो उनका सत्संग भी उपयोगी सिद्ध हो सकता है। मन का स्वभाव बालक जैसा होता है, उमंग से भरकर वह कुछ न कुछ करना-बोलना चाहता है। यदि दिशा न दी जाए तो उसकी क्रियाशीलता तोड़-फोड़ एवं गाली-गलौज के रूप में भी सामने आ सकती है। मन में जब सद्विचार भरे रहेंगे तो कुविचार भी कोई दूसरा रास्ता टटोलेंगे। रोटी और पानी जिस प्रकार शरीर की सुरक्षा और परिपुष्टि के लिए आवश्यक हैं उसी प्रकार आत्मिक स्थिरता और प्रगति के लिए सद्विचारों, सद्भावों की प्रचुर मात्रा उपलब्ध होनी ही चाहिए। युग निर्माण के लिए, आत्म निर्माण के लिए वह प्रधान साधन है। संकल्प की, मन की शुद्धि के लिए इसे ही दवा माना गया है।

देश की अर्थव्यवस्था को चौपट करते अवैध बांग्लादेशी

बांग्लादेशी घुसपैठियों को लेकर जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय (जेएनयू) ने एक रिपोर्ट जारी की है। रिपोर्ट का नाम 'दिल्ली में अवैध अप्रवासी, सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक परिणामों का विश्लेषण' है। 114 पन्नों की रिपोर्ट में बताया गया है कि कैसे बांग्लादेशी घुसपैठियों का देश और विशेष कर राजधानी दिल्ली पर प्रभाव पड़ रहा है। रिपोर्ट में टाटा इंस्टीट्यूट फॉर सोशल साइंस का भी योगदान है। रिपोर्ट में बताया गया है कि अधिकांश बांग्लादेशी घुसपैठिए 'फैमिली फर्स्ट' नीति अपनाते हैं। पहले परिवार का एक आदमी दिल्ली के भीतर आकर बस जाता है, पैसा कमाता है और रहने की जगह ढूंढता है। इसके बाद वह एक-एक कर पर परिजनों को भी बांग्लादेश से लाना शुरू कर देता है।

रिपोर्ट के अनुसार यह घुसपैठिए पहले कुछ दिन सीमाई राज्यों में रुकते हैं और फिर दिल्ली की तरफ बढ़ते हैं। बीते कुछ दिनों में अवैध महिलाओं की संख्या भी बढ़ी है। दिल्ली आने वाले 43 प्रतिशत से अधिक घुसपैठिए पश्चिम बंगाल में रुकते हैं। रिपोर्ट से यह भी सामने आया है कि वो घुसपैठिए, जो दिल्ली में 10 साल से ज्यादा से रह रहे हैं, उनका नए घुसपैठियों को भारत लाने और यहाँ बसाने में अहम रोल है। रिपोर्ट में बताया गया है कि दिल्ली में इन घुसपैठियों को मदद करने में इनके खुद के कुछ समूह और मजहबी समूहों का बड़ा हाथ है। रिपोर्ट के अनुसार, दिल्ली में बसने के बाद क्षेत्रीय या धार्मिक पहचानों के इर्द-गिर्द बनाए गए समूह इन्हें मदद करते हैं। इनमे कुछ राजनीतिक लोग भी शामिल रहते हैं।

रिपोर्ट में बताया गया है कि दिल्ली में घुसपैठियों को सहायता देने और छत, भोजन, स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, कानूनी सहायता और यहाँ तक कि बैंकिंग तक पहुँच जैसी सेवाएँ देने बिना रजिस्टर किए गए एनजीओ और मजहबी समूह महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कानूनी रूप से इनका दायरा साफ नहीं है। ये लोग अवैध प्रवासियों को रोजगार पाने और स्थानीय समुदायों में मिलने-घुलने में मदद करते हैं. कभी-कभी यह सरकारी नियम भी दरकिनार करते हैं। एनजीओ द्वारा दी जाने वाली सहायता के अलावा, स्थानीय कई राजनीतिक हस्तियों की भी इसमें महत्वपूर्ण भागीदारी होती है। यह अक्सर राजनीतिक वफादारी के बदले में अवैध प्रवासियों को सहायता देते हैं। ये राजनीतिक हस्तियाँ इन्हें घर ढूँढने के लिए फर्जी कागज तक दे सकती हैं। चुनावों के दौरान इन घुसपैठियों की कमजोर स्थिति का फायदा उठाया जा सकता है।

रिपोर्ट से यह भी सामने आया है कि यह घुसपैठिए स्थानीय लोगों का रोजगार छीन रहे हैं। इनमें से अधिकांश अकुशल क्षेत्रों में लगे हुए हैं। रिपोर्ट में बताया गया है कि यह घुसपैठिए दिल्ली में कम पैसों पर भी काम करने को राजी हैं। यह दिल्ली के भीतर निर्माण, घरेलू काम, सफाई और रेहड़ी जैसे कामों में जुड़े हैं। इससे दिल्ली के भीतर बेरोजगारी भी बढ़ रही है। यह लोग अपराध और गैर कानूनी धंधों में भी जुड़े हैं। यह दिल्ली की ब्लैक इकॉनमी को बढ़ावा दे रहे हैं। रिपोर्ट बताती है कि यह घुसपैठिए सिर्फ भारत में कमा कर अपना ही काम नहीं चला रहे बल्कि पैसा बांग्लादेश भी भेज रहे हैं। भारत में रहने वाले 80 प्रतिशत बांग्लादेशी घुसपैठिए यहाँ से कमाया हुआ पैसा वापस अपने घर भेजते हैं।

लगभग 50 प्रतिशत बांग्लादेशियों ने भारत में खाते भी खुलवा लिए हैं। 20 प्रतिशत बांग्लादेशी घुसपैठिए जमीन भी खरीद चुके हैं जो चिंता की बात है। रिपोर्ट में बताया गया है कि दिल्ली में इस काम से अर्थव्यवस्था पर फर्क पड़ रहा है। यह भी सामने आया है कि दिल्ली में रहने वाले 96.3 प्रतिशत घुसपैठिए मुस्लिम हैं। इनके चलते दिल्ली के उन इलाकों की जनसांख्यिकी भी बदल गई है जहाँ यह आकर बसे हैं। रिपोर्ट के अनुसार, बांग्लादेशी घुसपैठिए सीलमपुर, जामिया नगर, जाकिर नगर, सुल्तानपुरी, मुस्तफाबाद, जाफराबाद, द्वारका, गोविंदपुरी आदि जैसे भीड़भाड़ वाले इलाकों में बस जाते हैं। इनके चलते यहाँ रहने वाले निवासियों को मिलने वाली सुविधाओं पर दबाव पड़ता है।

दिल्ली में लगातार आ रहे बांग्लादेशी घुसपैठियों के चलते यहाँ की जनसांख्यिकी बिगड़ गई है। रिपोर्ट के अनुसार, 1951 में दिल्ली की जनसंख्या में हिन्दू 84 प्रतिशत थे जो 2011 तक घट कर 81 प्रतिशत हो गए है लेकिन इसी बीच मुस्लिम आबादी 5.7 प्रतिशत से बढ़ कर 12.8 प्रतिशत के आसपास पहुँच गई है। इसका अर्थ है कि बाकी कारणों के सहित अवैध घुसपैठियों से दिल्ली में मुस्लिम दोगुने हो गए है। रिपोर्ट में बताया गया है कि दिल्ली में रहने वाले 75 प्रतिशत अवैध बांग्लादेशी घुसपैठिए स्वास्थ्य सुविधाओं का भी लाभ उठा रहे हैं, इसके चलते स्थानीय लोगों को इलाज नहीं मिलता या उन्हें काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है।

रिपोर्ट इनके अपराध और जाली कागजों में जुड़े होने को लेकर भी चिंता जताती है। रिपोर्ट में कहा गया है, 'दिल्ली में घुसपैठियों से निपटने में एक महत्वपूर्ण चुनौती फर्जी पहचान दस्तावेजों का उपयोग है। यह अक्सर नकली आधार कार्ड, मतदाता पहचान पत्र और राशन कार्ड बनवाते हैं जिससे उन्हें शहर की सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था में शामिल होने का मौका मिलता है। यह कई मौकों पर पहचान चुराते भी हैं। रिपोर्ट कहती है कि इनसे देश के लोकतंत्र पर भी प्रभाव पड़ रहा है। इनके पास नकली दस्तावेजों की उपलब्धता भारत की लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं के बारे में चिंताएँ बढ़ती हैं। अगर गैर नागरिक छोटे तौर पर भी चुनाव में हिस्सा लेते हैं तो यह संभावना एक बड़ा मुद्दा है, इसके चलते अवैध प्रवासियों के विरुद्ध कड़ी जाँच की भी बात उठती है।

गौरतलब है कि बीते कुछ समय से सरकार और सुरक्षा एजेंसियाँ बांग्लादेशी घुसपैठियों की पहचान और उन्हें वापस भेजने को लेकर तेजी से काम कर रही हैं। जनवरी महीने में ही देश के अलग-अलग हिस्सों में सैकड़ों रोहिंग्या और बांग्लादेशी गिरफ्तार किए गए हैं लेकिन जिस प्रकार की चिंता रिर्पोट में जाहिर की गई है उसके अनुसार यदि समय पर इन घुसपैठियों के खिलाफ उचित एवं आवश्यक कदम नहीं उठाये गये तो स्थिति भयावह हो सकता है।

-रामस्वरूप रावतसरे

मुद्दा : रिश्तों में बढ़ती दरार चिंताजनक

सोनम लववंशी

तेलंगाना में पूर्व सैनिक गुरुमूर्ति द्वारा अपनी पत्नी माधवी की हत्या और उसके शव के साथ की गई बर्बरता ने पूरे समाज को झकझोर कर रख दिया है। यह घटना न केवल एक जघन्य अपराध की कहानी है, बल्कि समाज में व्याप्त हिंसा की प्रवृत्ति, रिश्तों में बढ़ती असंवेदनशीलता और मानसिक विकृति का भी प्रमाण है।

इस वारदात ने श्रद्धा वालकर की हत्या की यादें ताजा कर दी हैं, जहां उसके कथित प्रेमी ने उसे मार कर शव के टुकड़े कर दिए थे। ऐसी घटनाएं समाज के भीतर गहरी पैठ बना चुकी क्रूरता और रिश्तों में बढ़ती दरारों को उजागर करती हैं। गुरु मूर्ति ने अपनी पत्नी को मारने के बाद उसके शव को टुकड़ों में काट कर कुकर में उबालने और फिर झील में फेंकने जैसा अमानवीय कृत्य किया। यह किसी साधारण अपराध की श्रेणी में नहीं आता। यह घटना हमारे समाज में बढ़ती संवेदनहीनता और मानसिक अस्थिरता को दशार्ती है। रिश्तों में असहमति होना स्वाभाविक है, लेकिन जब यह असहमति हिंसा का रूप ले लेती है, तो यह समाज के लिए गंभीर चेतावनी बन जाती है। यह घटना हमें सोचने पर मजबूर करती है कि आखिर, ऐसा क्या हो गया है कि रिश्ते अब हिंसा और हत्या की ओर बढ़ रहे हैं।

पति-पत्नी के बीच संबंधों को निजी मामला माना जाता है, लेकिन क्या इन संबंधों में मानवता और संवेदनशीलता पूरी तरह खत्म हो चुकी है? गुरुमूर्ति और माधवी के बीच झगड़े पहले भी होते रहे होंगे, लेकिन इन झगड़ों ने हिंसा का ऐसा स्वरूप ले लिया जो किसी भी सभ्य समाज के लिए अस्वीकार्य है। जहां यह दंपति रहता था, वहां के पड़ोसियों को भी इस बात की भनक तक नहीं लगी। यह समाज में बढ़ती एकाकी प्रवृत्ति और पड़ोसियों के बीच संवादहीनता को उजागर करता है। क्या हम इतने आत्मकेंद्रित हो चुके हैं कि हमारे आसपास क्या हो रहा है, इसकी हमें कोई परवाह नहीं? यह घटना केवल एक अपराध नहीं है, बल्कि समाज के लिए दर्पण भी है, जिसमें हमारी सामूहिक संवेदनहीनता साफ झलकती है।

रिश्तों में विश्वास की कमी और संवादहीनता ऐसी घटनाओं की मुख्य वजह बन रही हैं। घरेलू हिंसा के मामले दिन-ब-दिन बढ़ रहे हैं, लेकिन इन्हें रोकने के लिए केवल कड़े कानून पर्याप्त नहीं हैं। इन घटनाओं के पीछे छिपे मानसिक और सामाजिक कारणों को समझना और उनका समाधान खोजना भी जरूरी है। यह घटना हमें सोचने पर मजबूर करती है कि क्या हम अपने रिश्तों को सही तरीके से संभाल पा रहे हैं। अगर किसी रिश्ते में समस्या है, तो उसका समाधान संवाद और परामर्श के माध्यम से निकाला जा सकता है। लेकिन जब समस्याओं को नजरअंदाज किया जाता है, तो वे हिंसा का रूप ले लेती हैं। हमें समझने की जरूरत है कि घरेलू हिंसा केवल व्यक्तिगत मामला नहीं है, बल्कि यह पूरे समाज को प्रभावित करती है। माधवी की हत्या का मामला यह भी दशार्ता है कि समाज में मानसिक स्वास्थ्य और पारिवारिक तनाव को लेकर जागरूकता की कमी है। हमें समझना होगा कि मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं किसी भी व्यक्ति को हिंसक बना सकती हैं। इस दिशा में सामूहिक प्रयास की जरूरत है, जिसमें परिवार, समाज और सरकार की भूमिका अहम है। गुरु मूर्ति द्वारा किए गए इस अपराध को केवल एक अपराधी की मानसिक विकृति मान कर खारिज नहीं किया जा सकता। यह घटना समाज में व्याप्त गहरी समस्याओं की ओर इशारा करती है। इसे एक उदाहरण बना कर सुनिश्चित करना होगा कि इस तरह की घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो। इसके लिए न केवल सख्त कानूनों की जरूरत है, बल्कि समाज में संवेदनशीलता और जागरूकता बढ़ाने की भी महती आवश्यकता है।

यह घटना हमें सोचने पर मजबूर करती है कि हम किस दिशा में जा रहे हैं। रिश्तों में बढ़ती हिंसा और असंवेदनशीलता को रोकने के लिए हमें अपने मूल्यों और व्यवहारों पर पुनर्विचार करना होगा। यह समाज के लिए चेतावनी है कि अगर हम अब भी नहीं जागे तो ऐसी घटनाएं आम हो जाएंगी। गुरुमूर्ति और माधवी का मामला केवल एक घटना मात्र नहीं है, बल्कि समाज के लिए आत्मचिंतन का विषय भी है। हमें सुनिश्चित करना होगा कि इस तरह की घटनाओं को रोकने के लिए व्यक्तिगत, सामाजिक और संस्थागत स्तर पर जोरदार प्रयास किए जाएं।

एक नजर

चलती ट्रेन से गिरकर एक व्यक्ति हुआ घायल

साहिबगंज: कहलगांव थाना क्षेत्र के रहने वाले निवासी चलती ट्रेन से गिरकर हुआ घायल। घायल के साला बादल शर्मा से पूछे जाने पर उन्होंने बताया कि मेरा बहनोई मनोहर शर्मा उम्र 45 वर्षीय, पिता बाले शर्मा, साकिन दयालपुर कहलगांव के रहने वाला है जो फर्नीचर का काम कहलगांव में करता है। बीते दिनों किसी काम से साहिबगंज आया था। वही आज 6 फरवरी 2025 को मिजाचौकी करमटोला के बीच चलती ट्रेन से गिरकर घायल हो गया। वहीं घायल के साला ने बताया कि पहले फोन से बात हो रहा था जब बात होना बंद हो गया तब हम लोग खोजने के लिए निकले जहां कहलगांव आरपीएफ ने घटना की सूचना दिया। वहीं घटनास्थल पर पहुंच कर आनन फानन में इलाज के लिए साहिबगंज सदर अस्पताल लाया गया जहां ड्यूटी पर तैनात डॉक्टर ने इलाज में तुरंत लग गए। मनोहर शर्मा का इलाज के उपरांत स्थिति नाजुक बनी हुई है।

जहरीली दवा खाकर युवक हुआ मूर्छित

साहिबगंज: मुफस्सिल थाना क्षेत्र अंतर्गत एक युवक ने जहरीली दवा खाकर मूर्छित हुआ। परिजनों से पूछे जाने पर उन्होंने बताया कि मुस्तकीम आलम उम्र 24 वर्षीय पिता मोहम्मद हुसैन रामपुर के रहने वाले ने दिन में 11:00 बजे किसी बात को लेकर गुस्से में आकर गेहूं में दवा देने वाला जहरीली दवा खाकर मूर्छित हो गया। वही परिजनों ने आनन फानन में इलाज के लिए सदर अस्पताल साहिबगंज लाया जहां ड्यूटी पर ताना चिकित्सकों ने इलाज किया।

महतो मेडिकल का हुआ उद्घाटन

पटमदा : पटमदा के कटीन बाजार में बड़ाबाजार रोड़ में पुराना थाना के पास गुरुवार को डॉक्टर प्रशांत कुमार जनरल फिजिशियन के द्वारा फीता काटकर मेडिकल का उद्घाटन किया। प्रो ममता महतो ने बताया कि मेडिकल स्टोर में जेनरल फिजिशियन सहित महिला चिकित्सक डॉ अनविषा मुखर्जी क्षेत्र के लोगों के बीच सेवा देगी। लोगो को डॉक्टर के परामर्श के लिए जमशेदपुर जाना पड़ता था। इस दौरान उद्घाटन समारोह में कृपासिंधु महतो, प्रदीप महतो, संदीप मिश्रा, अर्धेंदु महतो, लक्ष्मी कांत महतो सहित कई लोग मौजूद थे।

मुखिया संघ ने मांगा पिस्टल का लाइसेंस

लोहरदगा : जनता की सेवा के लिए जनता के जरिये चुने गए मुखिया को अब जान का खतरा महसूस होने लगा है। इन लोगों को अपनी जीवन रक्षा के लिए हथियार चाहिए। लोहरदगा जिला मुखिया संघ के जरिये लोहरदगा डीसी को गुरुवार को आवेदन देकर कहा गया है कि आए दिन मुखिया की हत्या हो रही है। इससे अपने क्षेत्र में कार्य करने में मुखिया को जान का भय सताने लगा है। वर्तमान में नामकुम प्रखंड के हाहपे पंचायत के मुखिया नन्हे कच्छप को 23 जनवरी 2025 को अपराधियों ने गोली मार दी थी। इससे अपने क्षेत्र में कार्य करने वाले मुखिया को सुरक्षा की दृष्टि से असहजता महसूस हो रही है। मुखिया संघ लोहरदगा ने आवेदन देकर डीसी से कहा है कि उन्हें अपनी सुरक्षा के लिए गन, पिस्टल का लाइसेंस दिया जाये। आवेदन देने वालों में मुखिया, ग्राम पंचायत गडरपो भंडरा, मुखिया, ग्राम पंचायत उदरंगी भंडरा, मुखिया, ग्राम पंचायत अरकोसा लोहरदगा, मुखिया, भड़गांव सेन्हा सहित अन्य के नाम शामिल हैं।

मानव तस्करी के आरोपी को पुलिस ने किया गिरफ्तार, भेजा जेल

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : तीनपहाड़ थाना पुलिस ने मानव तस्करी के एक आरोपी को किया गिरफ्तार इस संबंध में राजमहल अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी विमलेश कुमार त्रिपाठी ने गुरुवार को अपने कार्यालय कक्ष में प्रेस कॉन्फ्रेंस कर उन्होंने बताया की आरोपी झांसा देकर तीन नाबालिक बच्चों को काम करवाने के लिए अपने सहयोगियों के साथ मिलकर दिल्ली ले जा रहा था। इसकी सूचना वरीय पदाधिकारी को दी गई। पुलिस अधीक्षक, साहेबगंज के द्वारा छापामारी एवं आवश्यक कार्रवाई हेतु एक टीम का गठन

किया गया। छापामारी दल के द्वारा सनमनी पहाड़ क्षेत्र से तीन नाबालिग बच्चों को बरामद कर बरहेट थाना के सनमनी पहाड़ निवासी नेगड़ा सुरजा पहाडिया पुत्र गंगा पहाडिया उम्र 48 वर्ष को गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार आरोपी द्वारा बताया गया कि वो इन बच्चों को काम करवाने के लिए अपने सहयोगियों के साथ मिलकर दिल्ली ले जा रहा था। इस संबंध में तीनपहाड़ थाना काण्ड संख्या- 07/25 भारतीय न्याय संहिता एवं बाल श्रम निषेध अधिनियम के अन्तर्गत मामले दर्ज कर अनुसंधान कर गिरफ्तार अभियुक्त को न्यायिक अभिरक्षा में भेजा गया। तीनपहाड़ थाना प्रभारी गुलशन गौरव, तीनपहाड़ थाना पुअनि महेन्द्र कुमार, थाना बरहेट सअनि मो0 जमील, तीनपहाड़ थाना म0आ0/85 सुनीता मुर्मू, तीनपहाड़ थाना रिजर्व गार्ड हवलदार संजय कुमार, हवलदार मो0 आजम, तीनपहाड़ थाना गृ0चा0/6999 सुनील मंडल, एवं अन्य उपस्थित रहे।

आरपीएफ ने दो मानव तस्कर को किया गिरफ्तार, सात नाबालिग बच्चे मुक्त

बरहरवा : बरहरवा रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) ने एक महत्वपूर्ण कार्रवाई करते हुए दो मानव तस्करों को गिरफ्तार किया और उनके चंगुल से सात नाबालिग बच्चों को मुक्त कराया। ये बच्चे अन्य राज्यों में मजदूरी कराने के उद्देश्य से तस्करी किए जा रहे थे। आरपीएफ की सतर्कता और त्वरित कार्रवाई से बच्चों को सुरक्षित बचा लिया गया। बरामद सभी नाबालिगों को विधिक प्रक्रिया के तहत बाल संरक्षण मंथन, साहेबगंज को सुपुर्द कर दिया गया है, जहां उनकी देखभाल और पुनर्वास की व्यवस्था की जाएगी। इस ऑपरेशन के जरिए बरहरवा आरपीएफ ने मानव तस्करी के एक बड़े षड्यंत्र को विफल कर दिया, जिससे कई मासूमों का भविष्य अंधकारमय होने से बच गया।

भीषण सड़क हादसा, एक की मौत

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बरहरवा : थाना क्षेत्र के भीमपाड़ा गांव में तेज रफ्तार स्कॉर्पियो के संतुलित खराब होने से पलट गई। जिसमें एक कि मौत और आधा दर्जन से ज्यादा लोग घायल हो गए। घटना की सूचना मिलने पर बरहरवा में एएसआई राजनाथ साव घटना स्थल पहुँच कर घटना की छान बीन किया। मिलीजनकारी के अनुसार पाकुड़ से बरहरवा आने के क्रम में भीमपाड़ा गांव के आइसक्रीम फैक्ट्री के समीप तेज रफ्तार आ रही स्कार्पियो असंतुलित होकर फिल्मी स्टाइल से उड़ कर चार-पांच बार पलटी मार कर सड़क से लगभग एक सौ फीट दूर खेत में जा गिरा। जिससे स्कॉर्पियो संख्या जेएच 05 एजे 0205 पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। मौके से स्कार्पियो चालक फरार हो गया। स्कार्पियो में सवार कलाम शेख 27 वर्षीय, पिता सैदुल शेख, इशकपुर पाकुड़ निवासी की मौके पर ही मौत हो गई। वही सिराजुद्दीन शेख, आशिक शेख, रोफीना बेवा, शाहिदा खातून, अब्दुल्लाह शेख, एवं सैदुल शेख पूरी तरह से घायल हो गया। जिन सभी को ग्रमीणों की मदद से इस्लाज के लिए बरहरवा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में लाया गया। जहां इलाज के दौरान सभी घायलों को बेहतर इलाज के हायर सेंटर रेफर कर दिया। बरहरवा थाना पुलिस ने मृत का शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए राजमहल अनुमंडल अस्पताल भेज दिया।

स्कूल से सामान चोरी के मामले में नौ गिरफ्तार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

कोडरमा : कोडरमा पुलिस ने सरकारी स्कूल से चोरी मामले में नौ लोगों को गिरफ्तार किया है। मामले में पुलिस ने दिलीप कुमार (20), पोखन कुमार उर्फ गणेश कुमार (24),विक्रम कुमार (18), अजय कुमार सिंह (20), विकास कुमार (22), अंकित कुमार शर्मा (30), अनिल कुमार वर्णवाल (34), देवनारायण कुमार (34) और अजीत कुमार पंडित (20) को गिरफ्तार किया है। इनके पास से 12 पीस कंप्यूटर सिस्टम, चार पीस माउस, आठ पीस की बोर्ड, एक पीस सीपीयू और छह गैस सिलेंडर बरामद किया है। पुलिस अधीक्षक अनुदीप सिंह ने गुरुवार को प्रेस वार्ता कर बताया कि चोरी के मामले को लेकर पुलिस उपाधीक्षक मुख्यालय के नेतृत्व में टीम का गठन किया था। इसी दौरान पांच फरवरी को चंदवारा थाना क्षेत्र के महुआदोहर से कांड में शामिल पांच आरोपित को चोरी

के सामानों के साथ गिरफ्तार किया गया और उनके निशानदेही पर सामान खरीदने वाले चार आरोपितों को भी गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार आरोपितों में अंकित कुमार शर्मा के पास से 12 कंप्यूटर सिस्टम, अनिल कुमार वर्णवाल के पास से छह गैस सिलेंडर, देवनारायण कुमार के पास से फिंगर प्रिंट मशीन और अजीत कुमार पंडित के पास से बैटरी बरामद किया गया है। पुलिस के जरिये पूछताछ में पकड़े गए लोगों ने बताया कि सभी सामान दिलीप कुमार के जरिये इन्हें बेचा गया था। इसके बाद पुलिस के जरिये दिलीप कुमार, पोखर कुमार उर्फ गणेश, अजय कुमार सिंह, विक्रम कुमार और विकास कुमार के जरिये 23 दिसंबर, 21 जनवरी, 23 जनवरी , 24 जनवरी को चौपारण थाना क्षेत्र के दनुआ स्कूल, रामपुर स्कूल, मध्य विद्यालय रामपुर एवं हाई स्कूल टोईया और 31 जनवरी को बरही थाना क्षेत्र के तेतरिया भंडारों स्कूल में चोरी की घटना को अंजाम देने की बात स्वीकार किया। आरोपितों ने बताया कि चोरी के सामान की बिक्री से प्राप्त राशि को पांचों ने आपस में बंटवारा कर लिया था। एसपी ने बताया कि उपरोक्त चोरों ने हजारीबाग जिले के चौपारण और बरही में भी पांच स्कूलों को अपना निशाना बनाया था।

उद्यान विभाग ने किसानों के बीच सब्जी बीज का किया वितरण

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज/तालझारी : प्रखंड में उद्यान विभाग द्वारा किसानों के बीच सब्जी बीज का वितरण 06 फरवरी 2025 को उद्यान विभाग द्वारा सब्जी बीज का वितरण किया गया। यह वितरण उद्यान विकास योजना एवं राज्य बागवानी मिशन योजना के तहत किया गया। जिसमें पलास झारखंड स्टेट लाइवलीहुड प्रमोशन सोसाइटी द्वारा चयनित सखी मंडल की महिला किसानों को लाभान्वित किया गया। इस योजना का उद्देश्य ग्रामीण किसानों को आत्मनिर्भर बनाना और उनके पोषण स्तर को सुधारना है। तालझारी प्रखंड परियोजना पदाधिकारी (मनरेगा) श्वेता झा एवं उद्यान विभाग के मुकेश कुमार, प्रेम पासवान और कमलेश कुमार झा ने संयुक्त रूप

से सब्जी बीज वितरित किए। किसानों को भिंडी, कद्दू, करेला, टमाटर, झींगा जैसी सब्जियों के बीज दिए गए, जिससे वे अपनी खेती को बढ़ावा देकर आर्थिक रूप से सशक्त बन सकें। इस पहल से किसानों को सब्जी उत्पादन में मदद मिलेगी और उनके परिवारों को ताजा एवं पोषक आहार प्राप्त होगा। इस कार्यक्रम में तालझारी बीटीएम सत्येंद्र यादव, जेएसएलपीएस के एफटीसी कृष्णा कांत रक्षित, सखी मंडल की दीदी किसान समेत अन्य अधिकारी व किसान उपस्थित रहे। इस योजना से सखी मंडल की महिलाओं को कृषि के माध्यम से आत्मनिर्भर बनने का अवसर मिलेगा, जिससे वे अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत कर सकेंगी। उद्यान विभाग की यह पहल किसानों के लिए एक सकारात्मक कदम है, जो उनकी आजीविका और स्वास्थ्य दोनों में सुधार लाने में मदद करेगी।

वाटर शेड यात्रा को सफल बनायें और ग्रामीणों को जागरूक करें : डीडीसी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

खूंटी : केंद्र सरकार की ओर से प्रायोजित जलछाजन विकास अवयव-प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना 2.0 के तहत परियोजना क्षेत्र में पांच फरवरी से शुरू हुई वाटरशेड यात्रा के सफल क्रियान्वयन को लेकर गुरुवार को खूंटी समाहरणालय के सभागार में महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता उप विकास आयुक्त श्याम नारायण राम ने की। बैठक के दौरान संबंधित विभागों के पदाधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए, जिससे रनिया प्रखंड के परियोजना क्षेत्र में जल संरक्षण, जल पुनर्भरण और सतत कृषि विकास को बढ़ावा दिया जा सके। वाटरशेड यात्रा का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण समुदायों में जल प्रबंधन को लेकर जागरूकता बढ़ाना तथा योजना के प्रभावी कार्यान्वयन में उनकी सक्रिय

भागीदारी सुनिश्चित करना है। बैठक में जिला स्तरीय अधिकारी, तकनीकी विशेषज्ञ, संबंधित विभागों के प्रतिनिधि, अभियान से जुड़े संस्थानों के प्रतिनिधि उपस्थित थे। इस दौरान योजना के लक्ष्यों, क्रियान्वयन रणनीति और विभिन्न चरणों की समीक्षा की गई। उप विकास आयुक्त ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि योजना के तहत सभी गतिविधियों का समयबद्ध और प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाए, ताकि जल संरक्षण और कृषि विकास के निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके।

मदरसा उस्मानिया फरीदपुर में पांच वर्ष से अनुपस्थित हैं शिक्षक किरमानी शेख

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

▶ ग्रामीणों ने जिला शिक्षा पदाधिकारी को आवेदन देकर वेतन रोकने का किया मांग

बरहरवा : प्रखंड अंतर्गत बिंदु पाड़ा पंचायत के फरीदपुर गांव में स्थित मदरसा उस्मानिया फरीदपुर में किरमानी शेख सहायक शिक्षक पिछले 5 साल से मदरसा से अनुपस्थित हैं। इस बात का खुलासा तब हुआ जब ग्रामीणों ने जिला शिक्षा पदाधिकारी साहिबगंज को इस आशय का आवेदन देकर मामले की जांच करने की मांग किया। बताया जाता है कि क्षेत्रीय शिक्षा उपनिदेशक संथाल परगना दुमका ने अपने पत्रांक 391 दिनांक 13.07.2021 के द्वारा उच्च अधिकारियों के आदेश का अब मानना के कारण किरमानी शेख का वेतन स्थगित रखा है। मदरसा के प्रधान शिक्षिका से चल रहे विवाद का हवाला देकर कई वर्षों से विभाग के आंख में धूल झोंक रहा है। कई सालों तक मदरसा से गायब रहने एवं शैक्षणिक कार्य में रुचि नहीं लेने को लेकर उसे कई बार विभाग के द्वारा स्पष्टीकरण भी पूछा गया है। पर मजे की बात यह है कि अभी तक उस पर विभाग के तरफ से कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई है। ग्रामीणों ने अपने दिए आवेदन में कहा है कि वह बराबर मदरसा से बाहर रहता है एवं शैक्षणिक कार्य में कोई रुचि नहीं लेता है, और अलग से मदरसा खोलने एवं बंद करने के समय में बायोमेट्रिक हाजिरी बनाकर रफू

चक्कर हो जाता है। मालूम हो कि प्रखंड शिक्षा प्रसार पदाधिकारी बरहरवा ने 23 फरवरी 2022 को उपरोक्त शिक्षक किरमानी शेख पर उसे धोखे में रखकर दो शिक्षक को छोड़कर वेतन विपत्र पर हस्ताक्षर करा लिए जाने को लेकर जिला शिक्षा पदाधिकारी को सूचित भी किया था। मदरसा के सहायक शिक्षक एवं शिक्षक प्रतिनिधि अब्दुल गनी ने बताया कि किरमानी शेख अपने जरूरत पड़ने पर मेरा जाली हस्ताक्षर करता है इसकी जानकारी विभाग को दिया गया है। इतना ही नहीं मदरसा के उपरोक्त शिक्षक के संबंध में है अनुमंडल शिक्षा पदाधिकारी साहिबगंज ने दिनांक 08/06/2024 को जांच प्रतिवेदन भी समर्पित किया था, पर इसके बावजूद भी शिक्षक किरमानी शेख मदरसा नहीं जाते हैं। इस संबंध में पूछे जाने पर जिला शिक्षा पदाधिकारी दुगानंद झा ने बताया कि, उपरोक्त शिक्षक के क्रियाकलाप के कारण कई बार उससे स्पष्टीकरण भी पूछा गया है एवं उसे अभी तक वेतन भुगतान भी नहीं किया गया है। ग्रामीणों के द्वारा दिए गए आवेदन की जांच की जाएगी एवं दोषी पाए जाने पर शिक्षक किरमानी शेख के विरुद्ध विधि सम्मत कार्रवाई की जाएगी यह भी जानकार मिली है कि, किरमानी शेख ने दिनांक 07/08/2023 को क्षेत्रीय शिक्षा संयुक्त निदेशक संथाल परगना प्रमंडल दुमका को एक अभ्यावेदन उपलब्ध कराते हुए कहा था कि 22 जुलाई 2022 को उनके साथ एक अप्रिय घटना घट गई थी जिस कारण से वह इलाज के लिए सीएमआरआई हॉस्पिटल कोलकाता में इलाज करा रहा है। 01.06.2020 से अब तक मदरसा में बिना सूचना के अनुपस्थित है मदरसा के प्रबंध समिति का कार्यकाल दिसंबर 2023 को समाप्त हो चुका है और अभी तक पुनर्गठन नहीं हुआ है।

संक्षिप्त खबरें

नव निर्मित प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र का हुआ उद्घाटन

बरहरवा : प्रखंड के गुरुवार को श्रीकुंड में एक करोड़ 65 लाख की लागत से नव निर्मित प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र भवन का उदघाटन गुरूवार को हुआ। मुख्य अतिथि विधायक प्रतिनिधि बरकत खान, रैसुल आलम, सासंद प्रतिनिधि अब्दुल कादिर आदि ने संयुक्त रूप से फीता काट व नारियल फोड़ कर किया। उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए विधायक प्रतिनिधि बरकत खान ने कहा कि ये पूर्व मंत्री आलमगीर आलम की प्रयास का नतीजा है की श्रीकुंड में एक करोड़ 65 लाख की लागत से प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र भवन का मरमत निर्माण कार्य संपन्न हो पाया। साथ ही विधायक प्रतिनिधि ने कहा कि पाकुड़ विधानसभा की लोकप्रिय विधायक निसात आलम का पूरा प्रयास है की पाकुड़ विधानसभा क्षेत्र के सभी स्वास्थ्य केंद्र में डॉक्टर और नर्स की बहाली करवाकर क्षेत्र के लोगों को सुचारु रूप से स्वास्थ्य सेवा का लाभ मिले। मौके पर अब्दुल कादिर ने कहा कि श्रीकुंड में सरकारी अस्पताल के खुलने से पलास बोना हरिहरा, अंधरकोठा, जमालपुर, चाकपाड़ा, दिलालपुर, गुमानी सहित दर्जनों गांव के ग्रामीणों को बेहतर स्वास्थ सेवा मिलेगा। मौके पर विभागीय एक्सक्यूटिव रामाकांत, एस डीओ एजाज अहमद, स्वास्थ्य विभाग के डॉक्टर उदय चौधरी, बीपीएम दिनेश साहा, फार्मासिस्ट मो.तबारक, अब्दुल जब्बार, उप प्रमुख अब्दुल कादीर, मोरसलीम खान, कांग्रेस प्रखण्ड अध्यक्ष रणजीत टुडू, नबीद अंजुम, जेएमएम प्रखण्ड अध्यक्ष अब्दुल गफूर, मुखिया काबिल, समीम, फिरोज आलम सहित सैकड़ों ग्रामीण उपस्थित थे।

आदिवासी उच्च विद्यालय बांगुडदा में विदाई समारोह का हुआ आयोजन

पटमदा: आदिवासी उच्च विद्यालय बांगुडदा में विद्यालय के बारहवीं के छात्र छात्राओं को विदाई दी गई। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में एस एस उच्च विद्यालय के प्राचार्य मिथिलेश कुमार, पटमदा डिग्री कॉलेज के प्राचार्य कृष्ण पद महतो, विश्वनाथ महतो, कस्तूरबा गांधी विद्यालय की वॉर्डन रजनी मुर्मू ने द्वीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। मिथिलेश कुमार अपने व्यक्तब्य में कहा कि छात्र छात्राओं को विद्यालय से विदाई नहीं दिया जाता बल्कि सत्र समाप्ति के पश्चात उन्हें शुभकामना दिया जाता है। उन्होंने अनुशीलन, अनुशासन के साथ टाइम मैनेजमेंट पर बाते रखीं। बारहवीं के परीक्षार्थियों को चंदन, पुष्प गुच्छ एवं कलम देकर प्रधानाध्यापक सुजीत कुमार सेठ ने सभी छात्र छात्राओं को आशीर्वाद दिया। मौके पर प्राचार्य सुजीत कुमार सेठ, एसएमसी अधक्ष इंद्रजीत दत्ता, विवेकानंद दरीपा, चंदन मंडल, सुभ्रा महतो, सत्य रंजन, संगीता, रथुनाथ, जयंत, प्राणकृष्ण, स्वेता, जोत्षणा, तिलोत्तमा, वकील राम, किंगशूक, कृष्णा कुमार, ज्योति तिग्गा, अर्पिता मिश्र आदि का योगदान रहा।

बजरंगबली प्रतिमा प्राण प्रतिष्ठा पर निकली कलश शोभा यात्रा

साहिबगंज/बोरियो : बोरिया बाजार धोबी टोला में बजरंगबली की प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा के मौके पर शोभा कलश यात्रा गुरुवार को निकाली गई। 101 कुमारी कन्याओं ने माथे पर कलश लेकर यात्रा निकाली। कलश यात्रा धोबी टोला स्थित मंदिर प्रांगण से मोरंग नदी तक गई। पुन: नदी में कलश में जल भरकर कलश यात्रा पूरे बोरियो बाजार का भ्रमण कर पुन: मंदिर परिसर तक वापस लौटी। कलश यात्रा में शामिल महिलाओं एवं हनुमान भक्तों ने जय श्री राम, जय बजरंगबली के नारे लगा रहे थे। पूरा बोरियो बाजार भक्ति में हो गया। इस मौके पर कलश यात्रा में कपिल रजक, राजू रजक, कन्हाई पंडित, विनोद शाह, आदि शामिल थे।

तेज रफ्तार मोटरसाइकिल ने कई लोगों को टक्कर मार कर किया घायल

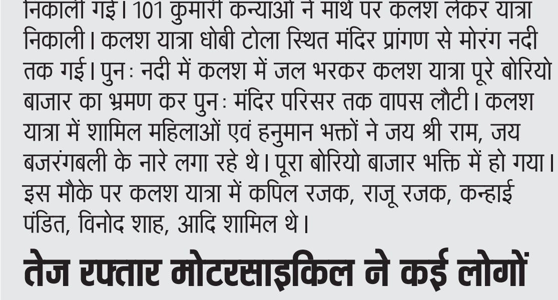

साहिबगंज : नगर थाना क्षेत्र अंतर्गत सरस्वती पूजा विसर्जन के दौरान बीते रात्रि 5 फरवरी 2025 को श्मशान घाट के आगे पुल के पास तेज रफ्तार मोटरसाइकिल ने कई लोगों को टक्कर मारकर किया घायल। इलाज के दौरान पूछे जाने पर घायल गोकुल चक्रवर्ती उम्र 15 वर्षीय, पिता गणेश चक्रवर्ती, साकिन केलाबाड़ी समलापुर, आनंद कुमार उम्र 16 वर्षीय पिता कैलाश साव साकिन केलाबाड़ी, राजा कुमार उम्र 16 वर्षीय, पिता जयगोरी साव, साकिन केलाबाड़ी तीनो का थाना जिरवाबाड़ी ने बताया कि नशे के हालात में तेज रफ्तार मोटरसाइकिल ने सामने से आकर हम लोग को पुल के पास जोरदार टक्कर मार दिया। टक्कर मारने के बाद दो साथी सड़क पर गिर कर बेहोश हो गया और एक साथी होश में था जो मोटरसाइकिल वाले को पकड़ कर बोला कि नशे के हालात में मोटरसाइकिल चला रहे हो और हम लोग को धक्का मार कर घायल कर दिया इसका हजार्ना कौन देगा तो मोटरसाइकिल चालक और उनके दोस्त ने घायल पीड़ित को धमकी देने लगा और फिर नशे की हालत में आगे जाकर दूसरे को टक्कर मार दिया। वही मोहल्ले वासियों ने मोटरसाइकिल चालक और उनके पीछे बैठे दोस्त को पड़कर मोटरसाइकिल रख लिया। उसके बाद तीनों घायल इलाज के लिए रात में ही सदर अस्पताल साहिबगंज आया जहां ड्यूटी पर तैनात चिकित्सकों ने घायलों का इलाज किया।

भारतीय स्टार्टअप्स ने ओपन एआई से की मूल्य निर्धारण लागू करने की मांग

- भारतीय भाषाओं में सपोर्ट को बढ़ाने का वादा किया

नई दिल्ली ।

भारतीय स्टार्टअप्स के शीर्ष फाउंडर्स ने बुधवार को ओपन एआई के सीईओ सैम ऑल्टमैन से मुलाकात की और ओपनी एआई के मॉडल्स को डेवलपर्स के लिए किफायती बनाने और भारत-केंद्रित मूल्य निर्धारण लागू करने की मांग की। ऑल्टमैन ने भारत में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के तेजी से बढ़ते प्रभाव की सराहना करते हुए इसे नई तकनीकी इनोवेशन के लिए एक महत्वपूर्ण बाजार बताया। आलोक बाजपेई, विजय शेखर शर्मा, कुनाल बहल, राघव बर्मा, गौरव मुंजाल, आकृत वैष जैसे प्रमुख भारतीय स्टार्टअप लीडर्स ने सम्मेलन में भाग लिया और मूल्य निर्धारण की मांग की। इन बैठकों में भारत के उपयोगकर्ताओं की जरूरतों पर चर्चा की गई और ओपन एआई की एपीएलएस के इस्तेमाल की समस्याओं पर विचार किया गया। ओपन एआई ने माना कि उनकी प्राइसिंग को भारत के हिसाब से समायोजित करने की जरूरत है और उन्होंने भारतीय भाषाओं में सपोर्ट को बढ़ाने का वादा किया। इस दौरान, स्टार्टअप फाउंडर्स और डेवलपर्स ने ओपनी एआई की टेक्नोलॉजी के उपयोग और इससे जुड़ी चुनौतियों पर भी चर्चा की। इस महत्वपूर्ण मीटिंग में उठी मुद्दों को लेकर जोरदार चर्चा हुई और मूल्य निर्धारण की मांग को लेकर सभी

सहमति जताई गई। स्टार्टअप उद्यमियों की शक्तिशाली दबाव ने ओपन एआई को भारत में अपने मॉडल्स की प्राइसिंग को सही निर्धारित करने के लिए मजबूर किया।

फोर्ड की भारत वापसी पर सवालिया निशान

नई दिल्ली ।

अमेरिका की बड़ी ऑटो कंपनी फोर्ड की भारत वापसी पर सवालिया निशान लग गया है। फोर्ड ने जनवरी तक भारत में अपनी नई रणनीति का पूरा ब्यौरा बताने का वादा किया था, लेकिन अब कंपनी इस योजना पर दोबारा विचार कर रही है। एक सूत्र के मुताबिक फोर्ड के बोर्ड ने जनवरी में इस बारे में बात की थी, लेकिन अभी तक कोई घोषणा नहीं की गई है। फोर्ड की भारत वापसी की योजना में देरी के कई कारण हैं। एक कारण यह है कि अमेरिका का राजनीतिक माहौल विदेशी निवेश के लिए अधिक अनुकूल नहीं है और ध्यान ऑटो मैन्यूफैक्चरिंग को वापस अमेरिका लाने पर ज्यादा है। दूसरा कारण है कि फोर्ड को चेन्नई में अपने तीन दशक पुराने प्लांट को फिर से चालू करने के लिए बड़ा निवेश करना होगा। जब फोर्ड के प्रवक्ता से संपर्क किया गया, तो उन्होंने बताया कि वे चेन्नई की निर्माण क्षमताओं का उपयोग वैश्विक बाजारों की सेवा के लिए

करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। उन्होंने विवरणों को साझा करने के लिए उचित समय पर जानकारी साझा करने का वादा किया है। फोर्ड की इस निर्णय से कई सवाल उठ रहे हैं और धारात्मक परिणाम से कंपनी के भविष्य पर सवाल खड़े हो रहे हैं। क्या फोर्ड को भारत में फिर से कदम रखना चाहिए? या कंपनी को अमेरिका में ही केंद्रित रहना चाहिए? ये सवाल जल्द ही जवाब ढूंढेंगे।

देश में खाने-पीने की चीजें महंगी होने से आम जनता ही नहीं सरकार भी परेशान

- माल ढुलाई की लागत बढ़ने से देशभर में खाद्य महंगाई पर असर पड़ा

नई दिल्ली ।

देश में खाने-पीने की चीजों के भाव बढ़ने से आम जनता ही नहीं सरकार और रिजर्व बैंक भी परेशान है। खाद्य महंगाई की वजह से ही खुदरा महंगाई की दर बढ़ जाती है और आरबीआई पिछले करीब ढाई साल से कर्ज भी सस्ता नहीं कर पा रहा है। अब खाद्य महंगाई बढ़ने के कारणों का पता चला है। एक फाइनेंस कंपनी के मासिक बुलेटिन में बताया गया है कि माल ढुलाई की लागत बढ़ने से देशभर में खाद्य महंगाई पर असर पड़ा है। इस रिपोर्ट में कहा गया है कि देश के प्रमुख मार्गों पर ट्रक किराये में जनवरी 2025 में बढ़ोतरी हुई है, जिसका कारण सर्दियों के फलों और सब्जियों का आना है। इनमें से कुछ मार्गों पर तो किराये में चार प्रतिशत की बढ़ोतरी देखी गई है।

इसमें कहा गया है कि जनवरी-मार्च तिमाही आमतौर पर काफी व्यस्त अवधि होती है, जिसमें रबी की फसल के बाद कृषि गतिविधि में तेजी आती है और कई क्षेत्रों में विनिर्माण गतिविधियों में भी बढ़ोतरी होती है। रिपोर्ट में कहा गया है कि इस तेजी के चलते पिछले महीने माल वाहक, कार्गो थ्री-व्हीलर के साथ-साथ यात्री बसों, मैक्सी कैब और कृषि ट्रेलरों जैसे वाणिज्यिक वाहनों की बिक्री में बढ़ोतरी हुई है। ट्रक किराये की बात करें तो दिल्ली-मुंबई-दिल्ली मार्ग पर चार प्रतिशत, मुंबई-कोलकाता-मुंबई मार्ग पर 3.7 प्रतिशत और दिल्ली-हैदराबाद-दिल्ली और कोलकाता-गुवाहाटी-कोलकाता मार्ग पर मासिक आधार पर किराये में 3.3 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई।

मासिक आधार पर देखा जाए तो जनवरी में माल वाहक की बिक्री में 41 प्रतिशत की उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई। तिपहिया (माल) और यात्री बसों की बिक्री में 32 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई, जबकि मैक्सी कैब की बिक्री में 59 प्रतिशत की भारी बढ़ोतरी हुई है। रबी की फसल के मौसम में कृषि ट्रेलर की बिक्री में 15 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जबकि मोटर कार की बिक्री में 54 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई और दोपहिया वाहनों की बिक्री में महीने-दर-महीने आधार पर 27 प्रतिशत की वृद्धि हुई। किराये की दरों में वृद्धि लॉजिस्टिक्स क्षेत्र के लिए एक सकारात्मक संकेत है।

देशभर कई राज्यों में बढ़ गए पेट्रोल-डीजल के भाव

देश के महानगरों में पेट्रोल-डीजल के खुदरा भाव नहीं बढ़े

नई दिल्ली ।

वैश्विक बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में आए उछाल की वजह से देश के घरेलू बाजार में भी पेट्रोल-डीजल की खुदरा कीमतों में बदलाव आया है। सरकारी तेल कंपनियों की ओर से गुरुवार को जारी खुदरा कीमतें कई शहरों में बढ़ गई हैं। हालांकि, दिल्ली-मुंबई जैसे देश के महानगरों में गुरुवार को भी पेट्रोल-डीजल के खुदरा रेट नहीं बढ़े हैं। सरकारी तेल कंपनियों के अनुसार यूपी के गाजियाबाद जिले में पेट्रोल 19 पैसे महंगा होकर 94.89 रुपये लीटर बिक रहा है। डीजल भी 22 पैसे चढ़ा और 88.03 रुपये लीटर पहुंच गया है। गौतमबुद्ध नगर में पेट्रोल 2 पैसे चढ़कर 94.87 रुपये और डीजल 3 पैसे बढ़त के साथ 88.01 रुपये लीटर हो गया है। उत्तराखंड के हरिद्वार जिले में पेट्रोल 3 पैसे चढ़कर 92.72 रुपये लीटर हो गया तो डीजल 3 पैसे महंगा होकर 87.56 रुपये लीटर बिक रहा है। कच्चे तेल की बात करें तो बीते 24 घंटे में इसकी कीमतों में भी थोड़ी तेजी दिख रही है। ब्रेंट क्रूड का भाव चढ़कर 74.61 डॉलर प्रति बैरल पहुंच गया है। डब्ल्यूटीआई का रेट भी तेजी के साथ 71.25 डॉलर प्रति बैरल हो गया है। वहीं दिल्ली में पेट्रोल 94.72 रुपये और डीजल 87.62 रुपये प्रति लीटर, मुंबई में पेट्रोल 103.44 रुपये और डीजल 89.97 रुपये प्रति लीटर, चेन्नई में पेट्रोल 100.76 रुपये और डीजल 92.35 रुपये प्रति लीटर, कोलकाता में पेट्रोल 104.95 रुपये और डीजल 91.76 रुपये प्रति लीटर है।

गाजियाबाद में पेट्रोल 94.89 रुपये और डीजल 87.03 रुपये प्रति लीटर हो गया है। नोएडा में पेट्रोल 94.87 रुपये और डीजल 88.01 रुपये प्रति लीटर और हरिद्वार में पेट्रोल 92.72 रुपये और डीजल 87.56 रुपये प्रति लीटर हो गया है।

प्रधानमंत्री मोदी अमेरिका यात्रा के दौरान एलन मस्क से मिलेंगे

- टेस्ला का भारत में हो सकता है प्रवेश!

नई दिल्ली ।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इस महीने अमेरिका की यात्रा पर जा रहे हैं जहां उन्हें राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से मुलाकात करने का मौका मिलेगा। साथ ही वे टेस्ला और स्पेसएक्स के सीईओ एलन मस्क से भी मिल सकते हैं। एलन मस्क दुनिया के सबसे अमीर लोगों में से एक हैं और उनके साथ होने वाली मीटिंग में पीएम मोदी भी शामिल होंगे। इस मीटिंग का प्रस्तावित तारीख 13 फरवरी है। एलन मस्क के ताजा इलेक्ट्रिक कारों के लिए समान अवसरों की वकालत करने के बारे में जाना गया है, जो अमेरिकी सरकार द्वारा खर्चों में कटौती के लिए बनाए गए डिपार्टमेंट ऑफ गवर्नमेंट एफिशिएंसी के चीफ के रूप में काम कर रहे हैं। उन्हें देश में सैटेलाइट इंटरनेट सेवा शुरू करने के लिए भी मांग करने की सूचना मिली है। हालांकि, अभी तक पीएम मोदी और एलन मस्क के बीच मुलाकात की कोई आधिकारिक घोषणा नहीं हुई है। पिछले साल मस्क ने अपनी भारत यात्रा को टाल दिया था, लेकिन अब उनकी भारतीय कंपनियों में विस्तार की कीमत चुकाने के बारे में विचार किया जा रहा है। पीएम मोदी 11-12

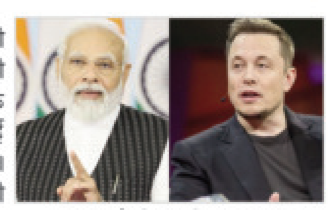

फरवरी को पेरिस में एआई शिखर सम्मेलन में भाग लेने के बाद अमेरिका जाएंगे, जहां उन्हें मीटिंग के दौरान इन महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा करने का मौका मिलेगा।

जनवरी में भारतीय सर्विस सेक्टर में तेजी, नौकरियों में भी बढ़ोतरी

नई दिल्ली ।

भारतीय सेवा सेक्टर ने जनवरी माह में एक तेजी का उछाल दर्शाया है, जिससे नौकरियों में भी बढ़ोतरी हुई है। यह जानकारी एचएसबीसी इंडिया पीएमआई सर्वे द्वारा जारी की गई है। सर्वे के अनुसार, अच्छी मांग, नए व्यापार और तकनीकी निवेश के कारण सर्विस सेक्टर में वृद्धि दर्शाई गई है। हालांकि, कुछ कंपनियों के ग्राहकों की संख्या में कमी के कारण गतिविधियां सीमित रही हैं। इस सर्वे में एचएसबीसी इंडिया सर्विसेज पीएमआई बिजनेस एक्टिविटी इंडेक्स जनवरी में 56.5 रहा है, जो कि दिसंबर के 59.3 से कम है। हालांकि, यह 50 के ऊपर होने का संकेत देता है। इस सर्वे में जनवरी 2025 में नौकरियों में वृद्धि की दर दिसंबर 2024 से अधिक है, जो कि 2005 में डेटा संग्रह की शुरुआत से वृद्धि की सबसे तेज दिखायी गई है। सर्वे के मुताबिक नए कारोबार में सुधार और क्षमता विस्तार के कारण कुछ कंपनियां आर्थिक वर्ष की शुरुआत में नौकरियों में भर्तियां कर रही हैं। महंगाई दरें लंबी अवधि के औसत से ऊपर हैं और दिसंबर के तेज बढ़ोतरी के बाद जनवरी में इन दरों में और वृद्धि देखने को मिल रही है।

सोने की मांग बढ़ी, 2024 में बढ़कर 802.8 टन पहुंची, 2025 में घटेगी

नई दिल्ली । भारत में आयात शुल्क में कटौती और शादी-विवाह व त्योहारों से जुड़ी खरीदारी के कारण सोने की मांग में वृद्धि देखने को मिली है। विश्व स्वर्ण परिषद की रिपोर्ट के अनुसार भारतीयों ने 2024 में कुल 802.8 टन सोना खरीदा, जो 2023 की तुलना में बढ़कर 31 फीसदी है। ऐसे में सोने की भावना में भी 6,410 रुपये की वृद्धि दर्ज की गई है। दुनियाभर के केंद्रीय बैंकों में आरबीआई ने तीसरे स्थान पर रहकर सोने की खरीद में अब तक का रिकॉर्ड बनाया है। अनिश्चितताओं और तनाव के माहौल में, 2024 में चौथी तिमाही में 1,000 टन से अधिक सोना खरीदने वाले बैंकों में आरबीआई ने शानदार प्रदर्शन किया है। चौथी तिमाही (अक्टूबर-दिसंबर) में सोने की मांग में कोई बदलाव नहीं देखने को मिला है। इस दौरान स्वर्ण मांग ने 1,92,080 करोड़ रुपये का पार्चल पारित किया है। हालांकि, स्वर्ण आभूषण की मांग में थोड़ी कमी दर्ज की गई है। सोने की कीमत में एक माह में 6,410 रुपये की वृद्धि दर्ज की गई है। जनवरी में सोने की कीमत 85,800 रुपये प्रति 10 ग्राम तक पहुंची है। इस वृद्धि के मुख्य कारणों में खरीदारी की अधिकता व मांग की वृद्धि का प्रमुख स्थान है।

अक्टूबर-दिसंबर तिमाही में एफएमसीजी क्षेत्र में ग्रामीण विकास बाजारों में तेजी रही

नई दिल्ली । एफएमसीजी क्षेत्र में ग्रामीण बाजारों में अक्टूबर दिसंबर तिमाही में तेजी की वजह से लगातार चौथी तिमाही में इसने शहरी बाजार को पछाड़ दिया। एक डेटा एनालिटिक्स फर्म की दैनिक उपयोग की घरेलू वस्तुओं के क्षेत्र पर रिपोर्ट के अनुसार लगातार चौथी तिमाही में ग्रामीण क्षेत्रों ने विकास के मामले में बड़े शहरी बाजारों को पीछे छोड़ दिया है। अक्टूबर-दिसंबर तिमाही में त्योहारी मांग से एफएमसीजी उद्योग में मोटे तौर पर खपत-आधारित वृद्धि हुई, जिसमें मुद्रास्फीति के दबाव के कारण 3.3 प्रतिशत औसत मूल्य वृद्धि के बावजूद कुल मात्रा में 7.1 प्रतिशत की वृद्धि हुई। हालांकि, एफएमसीजी उद्योग में भी मात्रा वृद्धि की तुलना में इकाई वृद्धि अधिक है जो उच्च खाद्य मुद्रास्फीति के कारण उपभोग में छोटे पैक की ओर उपभोक्ताओं की प्राथमिकता में बदलाव को दर्शाता है।

पतंजलि ग्रुप ने किया आईबीएस फिनटेक से समझौता

नई दिल्ली । योग गुरु बाबा रामदेव के नेतृत्व वाले पतंजलि ग्रुप ने कोष प्रबंधन संबंधी नयी तकनीक के लिए ट्रेजरी मैनेजमेंट सॉल्यूशंस में विश्व की प्रतिष्ठित फिनटेक कंपनी आईबीएस फिनटेक के साथ साझेदारी की घोषणा की है। पतंजलि समूह ने कहा कि आईबीएस फिनटेक से उसे मिलने वाला तकनीकी समाधान उसके मौजूदा ईआरपी पारिस्थितिकी तंत्र के साथ सहजता के साथ काम करेगा और उसके नकदी तथा व्यापार-वित्त परिचालन में बड़ा सुधार करेगा।

एचडीएफसी बैंक की 8 फरवरी को यूपीआई सर्विस कुछ घंटे बंद रहेगी

मुंबई । देश के सबसे बड़े प्राइवेट बैंक एचडीएफसी बैंक ने यूपीआई ट्रांजैक्शन को लेकर एक अहम जानकारी साझा की है। एचडीएफसी बैंक ने अपने लाखों ग्राहकों के लिए अलर्ट जारी किया है। बैंक ने कहा है कि सिस्टम मेंटेनेंस की वजह से 8 फरवरी को यूपीआई सर्विस कुछ घंटे के लिए काम नहीं करेगी। बैंक ने कहा कि 8 फरवरी को दोपहर 12ः00 बजे से 3ः00 बजे तक यूपीआई सर्विस काम नहीं करेंगी। इस दौरान बैंक के ग्राहक यूपीआई के जरिए किसी को भी पैसे नहीं भेज पाएंगे। बैंक के मुताबिक इन डाउनटाइम पीरियड के दौरान एचडीएफसी बैंक के करंट और सेविंग अकाउंट के साथ-साथ रुपे क्रेडिट कार्ड के माध्यम से भी फाइनेंशियल और नॉन-फाइनेंशियल यूपीआई ट्रांजेक्शन उपलब्ध नहीं होंगी।

देश में जनवरी 2025 में 7 फीसदी बढ़ी मोटर वाहन की खुदरा बिक्री

नई दिल्ली । देश में मोटर वाहनों की खुदरा बिक्री जनवरी 2025 में सालाना आधार पर 7 फीसदी बढ़कर 22,91,621 इकाई तक पहुंच गई। फेडरेशन ऑफ ऑटोमोबाइल डीलर्स एसोसिएशन (फाडा) के अनुसार यह वृद्धि विभित्र श्रेणियों में मजबूत उपभोक्ता मांग के कारण हुई। जनवरी 2024 में यह आंकड़ा 21,49,117 इकाई था। फाडा ने कहा कि दोपहिधि, तिपहिया, यात्री वाहन, ट्रैक्टर और वाणिज्यिक वाहन सभी श्रेणियों में सकारात्मक रुझान देखने को मिला, जो स्थिर बाजार सुधार और उपभोक्ता विश्वास को दर्शाता है। यात्री वाहन की खुदरा बिक्री 16 फीसदी बढ़कर 4,65,920 इकाई, दोपहिया वाहन 4 फीसदी बढ़कर 15,25,862 इकाई, वाणिज्यिक वाहन 8 फीसदी बढ़कर 99,425 इकाई, ट्रैक्टर 5 फीसदी बढ़कर 93,381 इकाई रही। वहीं तिपहिया वाहन 7 फीसदी बढ़कर 1,07,033 इकाई, शहरी क्षेत्रों में बिक्री में 5 फीसदी की वृद्धि हुई, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में यह आंकड़ा 4 फीसदी रहा। डीलरों का मानना है कि नए मॉडलों की लॉन्चिंग, विवाह सीजन की मांग और बेहतर वित्तीय योजनाओं ने बिक्री को गति दी है। हालांकि, ब्याज दरों में बढ़ोतरी और ग्रामीण क्षेत्रों में नकदी की कमी अब भी चिंता का विषय बनी हुई है। फाडा ने कहा कि 2025 की मजबूत शुरुआत के बाद फरवरी में उद्योग सतर्क आशावाद के साथ प्रवेश कर रहा है। एक सर्वेक्षण के अनुसार, 46 फीसदी डीलरों को फरवरी में बिक्री बढ़ने की उम्मीद है, 43 फीसदी को स्थिर रहने की संभावना दिखती है, जबकि 11 फीसदी को गिरावट की आशंका है।

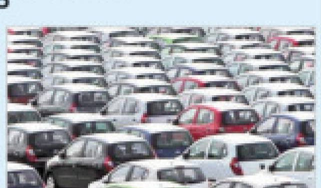

शेयर बाजार गिरावट पर बंद

मुम्बई ।

भारतीय शेयर बाजार गुरुवार को गिरावट पर बंद हुआ। बाजार में ये गिरावट दुनिया भर से मिले कमजोर संकेतों के साथ ही बिकवाली हावी रहने से आई है। ब्याज दरों पर आरबीआई के फैसले से पहले निवेशकों ने सतर्क रुख अपनाया। इसके अलावा देसी कंपनियों के दिसंबर तिमाही के परिणम उम्मीद से कमजोर रहने की संभावनाओं से भी बाजार पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा। दिन भर के कारोबार के बाद 30 शेयरों पर आधारित बीएसई सेंसेक्स अंत में 213 अंक करीब 0.27 फीसदी नीचे आकर 78,058 पर बंद हुआ। वहीं इसी प्रकार 50 शेयरों वाला नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी भी 92.95 अंक तकरीबन 0.39 फीसदी फिसलकर 23,603 पर बंद हुआ। आज कारोबार के दौरान सेंसेक्स की कंपनियों में भारती एयरटेल, टाइटन, एनटीपीसी, भारतीय स्टेट बैंक, आईटीसी, टाटा स्टील, महिंद्रा एंड महिंद्रा और टाटा मोटर्स के शेयर नीचे आये। वहीं दूसरी ओर अदाणी पोर्ट्स, इंफोसिस, एक्सिस बैंक, एचसीएल टेक्नोलॉजीज, टेक महिंद्रा और इंडसइंड बैंक के शेयर लाभ के साथ ही ऊपर आये।

अब निवेशकों की नजरें रिजर्व बैंक के ब्याज दरों को लेकर शुक्रवार को आने वाले

फैसले पर टिकी हुई हैं। आज कारोबार के दौरान विदेशी निवेशकों की बिकवाली जारी।

इससे पहले आज सुबह वैश्विक बाजारों में पॉजिटिव संकेतों के बीच घरेलू शेयर बाजार गुरुवार को हरे निशान में खुले। हालांकि कुछ ही देर में यह लाल रंग में फिसल गए। बीएसई सेंसेक्स 143.41 अंक गिरकर 78,127.87 पर कारोबार कर रहा था। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी50 भी मजबूत शुरुआत के बाद गिरावट में चला गया। सुबह की शुरुआत में यह 42 अंक गिरकर 23,654 पर कारोबार कर रहा था। वहीं अन्य बाजारों की बात करें तो एशिया बाजारों ने मजबूती के साथ शुरुआत की।` निक्केई इंडेक्स में 0.60 फीसदी की तेजी देखी गई, जबकि एएसएक्स 200 0.87 और कोस्पी 0.33 फीसदी अधिक कारोबार करता दिखा। अमेरिकी बाजारों में भी तेजी रही। डाओ जोंस में 0.71 फीसदी की बढ़त दर्ज हुई, जिसमें एनवीडिया के शेयरों में तेजी अहम रही। एसएंडपी 500 में 0.39 फीसदी और नेस्डेक में 0.19 फीसदी की तेजी आई। अब निवेशकों की नजर अमेरिका के बेरोजगारी आंकड़ों और बैंक ऑफ इंग्लैंड के ब्याज दर फैसले पर है।

मुकेश अंबानी की आरआईएल को कर्ज देने के लिए कतार में खड़े दुनिया के प्रमुख बैंक

अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, जापान के प्रमुख बैंक शामिल

मुंबई।

दुनिया के कई दिग्गज बैंक रिलायंस इंडस्ट्रीज को लोन देने के लिए कतर में खड़े हैं। देश की सबसे मूल्यवान कंपनी ने 3 अरब डॉलर का कर्ज लेने के लिए दिसंबर में 11 बैंकों के एक कंसोर्टियम के साथ डील साइन की थी। सूत्रों के मुताबिक अब दुनियाभर के करीब 10 और बैंक सिंडिकेट में शामिल होना चाहते हैं। इसमें ऑस्ट्रेलिया से लेकर उत्तरी अमेरिका तक के कई दिग्गज बैंक शामिल हैं। अगले हफ्ते से कर्ज के लिए रोड शो शुरू होगा। कंपनी और मुख्य बैंक यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि ज्यादा से ज्यादा बैंक इसमें शामिल हों। कंपनी के एक सूत्र ने बताया कि आरआईएल ने इन बैंकों को पहले ही चुन लिया है। आरआईएल अपने कर्जदाताओं का दायरा बढ़ाना चाहती है। वे मुख्य बैंकों से भविष्य में और ज्यादा कर्ज लेने की गुंजाइश भी रखना चाहती है। मुख्य बैंकों के लिए आरआईएल भारत में सबसे अच्छा क्रेडिट है। नए बैंक हमेशा इसतरह के अच्छे क्रेडिट में शामिल होना चाहते हैं। मुख्य बैंकों को इससे फीस मिलती है और भविष्य में कंपनी को और कर्ज देने का मौका भी मिलता है। बैंक कम मार्जिन पर भी मुकेश अंबानी की कंपनी आरआईएल को कर्ज देने को तैयार हैं क्योंकि यह भारत की सबसे अच्छी रेटिंग वाली कंपनी है।

आरआईएल ने इस बारे में सवाल का जवाब नहीं दिया। रिलायंस रेवेन्यू और मार्केट कैप के हिसाब से भारत की सबसे बड़ी कंपनी है। कंपनी ने 11 बैंकों से तीन अरब डॉलर जुटाए हैं जो दो साल में उसका सबसे बड़ा कर्ज है। यह पांच साल का कर्ज है। इसकी ब्याज दर तीन महीने के एसओएफआर से 120 बेसिस पॉइंट ज्यादा है।

इस कर्ज में 450 मिलियन डॉलर जापानी येन में भी हैं। रिलायंस इस पैसे का इस्तेमाल इस साल मैच्योर होने वाले कर्ज के भुगतान के लिए कर सकती है। 11 बैंकों ने आरआईएल को करीब 3 अरब डॉलर देने का वादा किया था। एक सूत्र ने बताया कि दूसरे दौर में आने वाले नए बैंक अपनी क्षमता के हिसाब से पैसे देने वाले हैं। हर बैंक की हर कंपनी के लिए एक सीमा होती है।

भारत एक अहम एआई बाजार, इस क्षेत्र में बन सकता है लीडर- सैम ऑल्टमैन

नई दिल्ली । भारत में तकनीकी उत्थान की दिशा में एक और कदम उठाते हुए, ओपनएआई के सह-संस्थापक और सीईओ सैम ऑल्टमैन ने एक आकर्षण कार्यक्रम में भारत को एआई मॉडल की रेस में लीडर बनने के लिए पुनरावृत्ति की। उन्होंने कहा कि भारत एआई के लिए आगे बढ़ने के लिए तैयार है और देश के लीडर बनने के लिए उत्साहित कर रहा है। ऑल्टमैन ने इस उत्सव के दौरान कहा कि भारत एआई मॉडल की रेस में लीडर होना चाहिए। मॉडल अभी भी सस्ते नहीं हैं और हमें इस क्षेत्र में अभियान करना चाहिए। ओपनएआई के नेतृत्व में एक नया प्रोजेक्ट स्टारगेट शुरू किया जाएगा, जिसका हिस्सा होगी सॉफ्टबैंक, ओरेकल और एमजीएक्स। यह प्रोजेक्ट अमेरिका में एआई इंफ्रास्ट्रक्चर नियमित करने के लिए 500 अरब डॉलर के निवेश की घोषणा की गई। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने भारतीय युवाओं को इनोवेशन में उत्साहित करने के लिए कहा और यहां तक कहा कि छह महीने के भीतर हम देश में एक सुरक्षित स्वदेशी एआई मॉडल लॉन्च कर सकते हैं। वैष्णव आगे भी उम्मीद जताते हुए कहा कि भारतीय एआई मॉडल आने वाले दिनों में और ज्यादा उन्नति में मदद करेगा।

पीरपैंती में बनेगा 2400 मेगावाट का नया थर्मल पावर प्लांट

2030 तक बिजली उत्पादन शुरू होने की उम्मीद

भागलपुर। जिले के पीरपैंती में एक बड़ा थर्मल पावर प्लांट बनने जा रहा है। इस परियोजना को राज्य मंत्रिमंडल की मंजूरी मिल चुकी है। यह प्लांट 2400 मेगावाट की क्षमता वाला होगा, जो बिहार में बिजली उत्पादन को बढ़ावा देने में मदद करेगा। यह भागलपुर जिले का दूसरा थर्मल पावर प्लांट होगा। इससे पहले, जिले के कहलगांव में एनटीपीसी का 2300 मेगावाट का एक थर्मल पावर प्लांट पहले से मौजूद है। हालांकि, पीरपैंती थर्मल पावर प्लांट के निर्माण और संचालन में अभी समय लगेगा। मौजूदा योजना के अनुसार, 2030 तक इस प्लांट से बिजली उत्पादन शुरू हो सकता है। परियोजना से जुड़े सभी आवश्यक कार्यों को तेजी से पूरा करने के लिए राज्य सरकार

और संबंधित एजेंसियां सक्रिय रूप से काम कर रही हैं।1- 2006: पहली बार पीरपैंती में थर्मल पावर प्लांट लगाने की योजना बनाई गई थी। 2- 2014: राज्य मंत्रिमंडल ने इस परियोजना को सैद्धांतिक मंजूरी दी। 3- 2008: सरकार ने इस प्रोजेक्ट को थर्मल से बदलकर सौर ऊर्जा आधारित बनाने की योजना बनाई, लेकिन उपयुक्त भूभाग न मिलने के कारण यह संभव नहीं हो सका। 4- 2023: सरकार ने फिर से पीरपैंती में थर्मल पावर प्लांट लगाने का निर्णय लिया। 5- 2024: इस परियोजना को केंद्रीय बजट में 21,400 करोड़ रुपये की मंजूरी मिली। परियोजना की वर्तमान स्थितिः इस परियोजना के लिए जरूरी जमीन का अधिग्रहण पूरा हो चुका है। कुल 1020.60 एकड़ जमीन को विभिन्न गांवों हरिणकौल, श्रीमतपुर, रायपुरा, सुंदरपुर, और टुंडवा-मुडवा से लिया गया है। महत्वपूर्ण प्रगति 1- पर्यावरणीय स्वीकृति झ इस समय पर्यावरणीय मंजूरी लेने की प्रक्रिया जारी है, ताकि परियोजना को कानूनी बाधाओं से बचाया जा सके। 2- कोयला आपूर्ति की व्यवस्था : इस प्लांट को झारखंड के राजमहल कोल ब्लॉक से कोयला मिलेगा। यहां से 2029 तक कोयले की आपूर्ति शुरू हो जाएगी। इस पावर 3- प्लांट को सालाना करीब 12 मीट्रिक टन कोयले की जरूरत होगी। 4- निर्माण एजेंसी का चयन झ अभी तक पावर प्लांट के निर्माण के लिए किसी एजेंसी का चयन नहीं किया गया है। जल्द ही इस संबंध में टेंडर निकाला जाएगा। 5- सरकारी निरीक्षणः बिहार स्टेट पावर होल्डिंग कंपनी लिमिटेड (बीएसपीएचसीएल) इस प्रोजेक्ट पर नजर रख रही है। हाल ही में कंपनी के एमडी ने इलाके का निरीक्षण किया था। पीरपैंती थर्मल पावर प्लांट के बनने से स्थानीय लोगों को रोजगार के नए अवसर मिलेंगे। इस पावर प्लांट से न केवल बिजली उत्पादन बढ़ेगा, बल्कि इससे क्षेत्र के आर्थिक और औद्योगिक विकास को भी गति मिलेगी। हालांकि, कुछ लोगों को पर्यावरणीय प्रभावों को लेकर चिंता है। कोयला आधारित पावर प्लांट से प्रदूषण बढ़ सकता है, जिससे आसपास के इलाकों में हवा और पानी की गुणवत्ता प्रभावित हो सकती है। इसलिए, सरकार को यह सुनिश्चित करना होगा कि पर्यावरण संरक्षण से जुड़े सभी नियमों का

ऑपरेशन के 9 दिन बाद परीक्षा देने पहुंचा छात्र

बांका । एक इंटरमीडिएट छात्र ने अपने हौसले और दृढ़ इच्छाशक्ति से सबको प्रेरित किया। आकाश कुमार, जो 27 जनवरी को एक गंभीर ऑपरेशन के बाद स्वास्थ्य लाभ कर रहा था, ने महज 9 दिनों बाद परीक्षा में शामिल होकर अपनी मेहनत और संकल्प का परिचय दिया। आकाश के पिता राजकुमार ने बताया कि ऑपरेशन के बाद परिवार ने उसे परीक्षा स्थगित करने की सलाह दी थी। लेकिन आकाश ने यह कहकर मना कर दिया कि एक साल की पढ़ाई और मेहनत को वह बर्बाद नहीं होने देगा। परीक्षा देने के लिए पिता ने उसे अपने कंधे का सहारा देकर आरएमके परीक्षा केंद्र पहुंचाया। आकाश की स्थिति को देखते हुए परीक्षा केंद्र प्रशासन ने उसके लिए विशेष व्यवस्था की। परीक्षा के दौरान शरीर में लगे

कैथेटर और अन्य मेडिकल उपकरणों के बावजूद आकाश ने तीन घंटे तक परीक्षा दी। उसने बताया, ₹शुरूआत में डर था कि इतनी शारीरिक परेशानी के बीच परीक्षा कैसे दूंगा, लेकिन परिवार के समर्थन और अपने संकल्प ने मुझे कमजोर नहीं पड़ने दिया। परीक्षा केंद्र में मौजूद लोगों ने आकाश के साहस की सराहना की और उसके उज्जवल भविष्य की कामना की। इस घटना ने युवा पीढ़ी के लिए यह संदेश दिया कि जीवन में चाहे जितनी भी मुश्किलें आएं, यदि लक्ष्य के प्रति समर्पण और आत्मविश्वास हो, तो उन्हें पार किया जा सकता है।

खेलते-खेलते शौचालय की टंकी में गिरी मासूम

डूबने से हुई दर्दनाक मौत, परिजन बेसुध

नवादा। जिले के रजौली थाना क्षेत्र स्थित सती स्थान मोहल्ले में एक दुखद घटना सामने आई है। गुरुवार को एक तीन वर्षीय बच्ची, मीठी, निमार्णाधीन शौचालय की पानी से भरी टंकी में गिर गई और डूबने से उसकी मौत हो गई। यह घटना उस समय हुई जब मीठी खेलते-खेलते घर के पास बन रहे शौचालय की टंकी में गिर गई। शौचालय की टंकी पर उपर की प्लेट नहीं डाली गई थी, जिससे बच्ची टंकी में गिर गई। घरवालों को जब उसकी तलाश शुरू की तो बच्ची शौचालय की टंकी में डूबी मिली। बच्ची के परिवारवाले उसे तुरंत अनुमंडलीय अस्पताल लेकर गए, लेकिन डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया। अस्पताल में ड्यूटी पर तैनात चिकित्सक, अमरेश कुमार गुप्ता ने

बताया कि बच्ची को मृत अवस्था में अस्पताल लाया गया था। बच्ची की मौत के बाद परिवार में शोक की लहर दौड़ गई। बच्ची के पिता, कुंदन पंडित, ने बताया कि उनकी छोटी बेटी मीठी की मौत पानी की टंकी में गिरने के कारण हो गई। घरवालों का कहना है कि शौचालय की टंकी में पानी भरने के बाद भी ऊपर प्लेट नहीं डाली गई, जिससे यह हादसा हुआ। इस घटना की जानकारी मिलते ही अंचलाधिकारी मो. गुफरान मजहरी ने बताया कि पोस्टमार्टम की प्रक्रिया पूरी करने और प्राथमिकी दर्ज करने के बाद कानूनी कार्रवाई की जाएगी। इसके साथ ही उन्होंने यह भी बताया कि पानी में डूबने के कारण हुई मौत के मामले में परिजनों को आपदा राहत के तहत मुआवजा दिया जाएगा। वहीं, प्रभारी थानाध्यक्ष और एसआई अजय कुमार ने कहा कि घटना की जानकारी मिलते ही पुलिस बल के साथ वे पीड़ित परिवार से मिले। हालांकि, परिजनों ने बच्ची का पोस्टमार्टम कराने की सहमति नहीं दी। इस घटना के बाद परिवार में गहरी दुख और शोक का माहौल है। बच्ची की मौत ने सभी को गमगीन कर दिया है।

लखीसराय में 450 करोड़ की विकास योजनाओं का शिलान्यास

सीएम बोले- ऐतिहासिक धरोहर और पर्यटन को मिलेगा बढ़ावा

लखीसराय । मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की प्रगति यात्रा के दौरान जिले के विकास को नई दिशा देने वाली योजनाओं की झड़ी लगाई गई। मुख्यमंत्री ने करीब 450 करोड़ रुपये की विकास परियोजनाओं की घोषणा की, जिसमें ऐतिहासिक धरोहरों के संरक्षण, जल संरक्षण, और बुनियादी ढांचे के विकास पर विशेष ध्यान दिया गया। मुख्यमंत्री ने बालगुदर गांव में एक ऐतिहासिक म्यूजियम का लोकार्पण किया, जिससे जिले की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत को संरक्षित करने में मदद मिलेगी। इसके अलावा, उन्होंने शिवगंगा तालाब के पुनरुद्धार और शिलान्यास का कार्य किया, जो न केवल जल संरक्षण को बढ़ावा देगा, बल्कि क्षेत्र में पर्यटन को भी गति देगा। इस यात्रा में 49 करोड़ रुपये की लागत

से किऊल नदी पर पुल बनाने की योजना का शिलान्यास किया गया। यह पुल क्षेत्र के लोगों के लिए बेहतर परिवहन सुविधा सुनिश्चित करेगा और स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूती देगा। मुख्यमंत्री ने जल-जीवन-हरियाली योजना के तहत बने तालाब और खेल मैदान का भी उद्घाटन किया। मुख्यमंत्री ने कार्यक्रम के दौरान जीविका दीदियों से मुलाकात की और उनके कार्यों के बारे में जानकारी ली। उन्होंने उनकी समस्याओं को ध्यानपूर्वक सुना और हरसंभव सहायता का आश्वासन दिया। मुख्यमंत्री ने समाहरणालय स्थित मंत्रणा कक्ष में जिला अधिकारियों के साथ विकास योजनाओं की समीक्षा बैठक की। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि सभी परियोजनाएं तय समय सीमा में पूरी की जाएं और सुनिश्चित किया जाए कि उनका लाभ सीधे जनता तक पहुंचे। लखीसराय के विधायक और डिप्टी सीएम विजय कुमार सिन्हा ने इस प्रगति यात्रा को ऐतिहासिक बताते हुए मुख्यमंत्री के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा कि इन योजनाओं से जिले के विकास को नई दिशा मिलेगी और जनता को बेहतर सुविधाएं मिलेंगी। इस प्रगति यात्रा ने जिले के विकास में एक नई ऊर्जा का संचार किया है।

मुख्यमंत्री की घोषणाओं और परियोजनाओं से लखीसराय के लोगों को बड़ी उम्मीदें हैं, जो आने वाले समय में क्षेत्र के विकास को नई ऊंचाई पर ले जा सकती हैं।

ट्रैक्टर ने बाइक में मारी टक्कर, महिला की मौत

दरभंगा । ट्रैक्टर ने बाइक सवारों को रौंद दिया। हादसे में महिला की मौत हो गई है। इसके महिला के बच्चे का हाथ टूट गया और ससुर घायल हो गए। महिला अपने ससुर के साथ बच्चे को लेकर डॉक्टर के पास ले जा रही थी। तीनों बाइक से अपने गांव पलवा से बिरौल जा रहे थे। इसी दौरान बिरौल के कोठी-पघारी मुख्य सड़क पर ईंट लदे ट्रैक्टर ने टक्कर मार दी। स्थानीय लोगों ने तीनों को बिरौल सीएचसी में भर्ती कराया। जहां इलाज के दौरान महिला ने दम तोड़ दिया। मृतका वड़गांव थाना क्षेत्र के मानसरा पलवा गांव निवासी राजेश यादव की 25 वर्षीय पत्नी बबीता देवी है। स्थानीय मनोज यादव ने कहा कि महिला अपने डेढ़ साल के बच्चे को इलाज के लिए सुपौल बाजार लेकर जा रही थी। इसी दौरान बिरौल में अनियंत्रित ट्रैक्टर ने ठोकर मार दी। इसमें महिला सहित उसका ससुर और डेढ़ साल का बच्चा जख्मी हो गया। महिला की मौत हो चुकी है। परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। बिरौल पुलिस भी मौके पर पहुंची और जांच-पड़ताल किया। थाना अध्यक्ष ने बताया कि मृतका के शव को पोस्टमॉर्टम के लिए डीएमसीएच भेजा जा रहा है। ईंट लदे ट्रैक्टर को जब्त कर लिया गया है। चालक फरार है।

संक्षिप्त डायरी

29.82 करोड़ की लागत से बनेगा आधुनिक बजट होटल, सासाराम में पर्यटन को मिलेगा बढ़ावा

सासाराम । पर्यटन उद्योग को बढ़ावा देने और स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के अवसर बढ़ाने के उद्देश्य से बिहार सरकार 29.82 करोड़ रुपये की लागत से एक नया छह-मंजिला बजट होटल बनाने जा रही है। शेरशाह सूरी होटल को हटाकर इस अत्याधुनिक होटल का निर्माण किया जाएगा, जिसमें 27 सामान्य कमरे, 9 डीलक्स कमरे, 3 सुइट, बैंक्वेट हॉल, रेस्तरां, कॉफी शॉप, पार्किंग, सीसीटीवी, फायर फाइटिंग सिस्टम, एयर कंडीशनिंग जैसी कई सुविधाएं होंगी। उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने बताया कि सासाराम का ऐतिहासिक महत्व है और यहां रोहतासगढ़ किला, मां ताराचंडी मंदिर, मंझार कुंड, कशिश झरना, तुतला भवानी मंदिर जैसे कई दर्शनीय स्थल हैं, जो पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। नया होटल पर्यटकों के लिए एक किफायती लेकिन उच्च स्तरीय सुविधा प्रदान करेगा। होटल निर्माण की जिम्मेदारी बिहार राज्य पर्यटन विकास निगम को दी गई है। सरकार की योजना है कि यह होटल निजी होटलों की तुलना में किफायती हो लेकिन उसमें आधुनिक सुविधाओं की कोई कमी न हो। इससे पर्यटन और रोजगार दोनों को बढ़ावा मिलेगा।

बंद घर में लाखों की हुई चोरी, पुलिस ने दर्ज की प्राथमिकी, जानें कैसे हुआ हादसा

गया। कोंच थाना क्षेत्र के परसावां पंचायत के जैतीया गांव में एक बंद मकान से लाखों रुपये के गहने और अन्य सामान चोरी होने का मामला सामने आया है। यह घटना मंगलवार और बुधवार की दरमियानी रात की है, जब चोरों ने घर का ताला तोड़कर अंदर घुसकर चोरी की। गांव के निवासी राजेश कुमार, जो पेशे से शिक्षक हैं, अपने परिवार के साथ घर से बाहर थे। इस दौरान उनके घर में ताला लगा हुआ था। मंगलवार-बुधवार की रात चोरों ने मुख्य दरवाजे का ताला तोड़ दिया और घर में रखे कीमती गहने, नकदी, कपड़े और अन्य सामान लेकर फरार हो गए। अनुमान के मुताबिक, चोरी गए सामानों की कुल कीमत दस लाख रुपये से अधिक है।बुधवार की सुबह जब ग्रामीणों ने घर का ताला टूटा हुआ देखा, तो उन्हें शक हुआ। तुरंत ही उन्होंने इसकी सूचना पुलिस को दी। सूचना मिलने के बाद कोंच थाना के एसआई राम कुमार मुर्मू मौके पर पहुंचे और जांच-पड़ताल की। जब घर के सदस्य गांव लौटे, तो उन्होंने चोरी की पूरी जानकारी पुलिस को दी और कोंच थाने में लिखित शिकायत दर्ज कराई। इसके बाद गुरुवार को पुलिस ने प्राथमिकी दर्ज कर ली। ग्रामीणों के अनुसार, घटना वाली रात गांव में सरस्वती पूजा का कार्यक्रम चल रहा था। इस दौरान डीजे की तेज आवाज के कारण किसी को भी चोरी की भनक नहीं लगी। फिलहाल, पुलिस मामले की जांच कर रही है और चोरों का पता लगाने की कोशिश में जुटी है।

मूर्ति विसर्जन के बाद 10 से ज्यादा राउंड फायरिंग

समस्तीपुर । करीब 20 दबंगों ने गांव में 10 से अधिक राउंड फायरिंग की। एक निमार्णाधीन मुर्गी फार्म में आग भी लगा दी। फायरिंग के दौरान गांव के लोगों से मारपीट भी की। 3 लोग घायल हुए हैं। एक का पैर तोड़ा और दूसरे का सिर फोड़ा। घायलों में अजय कुमार महतो सहित अन्य 2 लोग हैं। मौके पर पहुंची पुलिस ने 10 खोखे बरामद किए हैं। घायलों का पुलिस ने बयान दर्ज कर लिया है। बताया जा रहा कि बुधवार को मां सरस्वती की मूर्ति विसर्जन में मारपीट हुई थी। असमाजिक तत्वों ने छेड़खानी की थी। रात के ही विवाद को लेकर आज गुरुवार दोपहर दबंगों ने करीब आधे घंटे तक फायरिंग की। गोलीबारी करने वाले सभी लोग अभी फरार हैं। घटना हसनपुर थाना क्षेत्र के भटवन की खोरी गांव की है। गांव की एक युवती ने कहा कि कल मूर्ति विसर्जन के लिए हमलोग जा रहे थे, इसी दौरान नदी घाट के पास कुछ लोगों ने छेड़खानी की थी। सभी लड़के भटवन पंचायत के ही बेलौन और भटवन के रहने वाले हैं। रात में भी इन लोगों ने मारपीट की थी। आज 20 बदमाशों ने गांव में पहले फायरिंग करना शुरू किया।

बिहार की जनता मोदी-नीतीश की जोड़ी से खुश: अनिल सिंह

पटना। बिहार में आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर एनडीए कार्यकर्ता सम्मेलन आयोजित किया गया। यह सम्मेलन किशनगंज और अररिया जिलों में हुआ, जहां एनडीए के सभी घटक दलों के प्रदेश अध्यक्ष और कार्यकर्ता बड़ी संख्या में मौजूद रहे। सम्मेलन में कार्यकताओं का जबरदस्त उत्साह देखने को मिला। एनडीए के नेताओं ने कार्यकताओं को संबोधित करते हुए कहा कि यह चुनाव केवल एक राजनीतिक मुकाबला नहीं, बल्कि बिहार के विकास और सुशासन का चुनाव है। उन्होंने कार्यकताओं से पूरे जोश और ऊर्जा के साथ घर-घर जाकर जनता को एनडीए सरकार की उपलब्धियों से अवगत कराने की अपील की। कार्यक्रम के दौरान सभी प्रदेश अध्यक्षों ने कार्यकताओं को आगामी विधानसभा चुनाव में 225 से अधिक सीटें जीतने का संकल्प दिलाया। उन्होंने कहा कि एनडीए का लक्ष्य सिर्फ सत्ता में आना नहीं, बल्कि जनसेवा करना है। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष और बिहार सरकार में राजस्व एवं भूमि सुधार मंत्री डॉ. दिलीप जायसवाल ने सम्मेलन में कहा कि बिहार में होने वाला विधानसभा चुनाव केवल एक राजनीतिक लड़ाई नहीं, बल्कि विकास और सुशासन का संकल्प है। उन्होंने कहा कि एनडीए के कार्यकर्ता पूरी मेहनत और लगन के साथ चुनाव की तैयारियों में जुट जाएं। डॉ. जायसवाल ने कहा, कि ₹हम सबकी मेहनत से एनडीए की जीत निश्चित है। कार्यकताओं को चाहिए कि वे घर-घर जाकर सरकार की उपलब्धियों की जानकारी दें और जनता को मतदान के लिए प्रेरित करें। उन्होंने आगे कहा कि बिहार की जनता मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की नीतियों पर विश्वास करती है। इसी वजह से लोकसभा चुनावों और हाल के उपचुनावों में एनडीए को भारी सफलता मिली है। उन्होंने कार्यकताओं से अपील की कि वे विपक्ष के झूठे प्रचार का जवाब जनता के बीच जाकर दें। डॉ. दिलीप जायसवाल ने जोश भरते हुए कहा, ₹हम न केवल चुनाव जीतेंगे, बल्कि बिहार में फिर से नीतीश कुमार के नेतृत्व में एनडीए की सरकार बनाएंगे। उन्होंने कहा कि यह केवल एक आमसभा नहीं, बल्कि संघर्षशील कार्यकताओं का जुटान है, जो एनडीए के विचारों के साथ बूथ स्तर पर मजबूती से चुनाव लड़ते हैं। जदयू के प्रदेश अध्यक्ष उमेश सिंह कुशवाहा ने कार्यकताओं को संबोधित करते हुए कहा कि जिस तरह सम्मेलन में भारी भीड़ उमड़ी है, उससे साफ है कि बिहार की जनता ने आगामी चुनाव में एनडीए के पक्ष में फैसला कर लिया है। उन्होंने कहा कि एनडीए कार्यकताओं की एकता से गठबंधन लगातार मजबूत हो रहा है, जबकि विपक्षी दलों का गठबंधन कमजोर पड़ता जा रहा है। उन्होंने विपक्षी दलों पर हमला

बोलते हुए कहा, इन दलों को बिहार के विकास की कोई चिंता नहीं है। ये केवल अपने परिवार की राजनीति कर रहे हैं।₹ उन्होंने महागठबंधन पर तंज कसते हुए कहा कि विपक्ष के कुछ नेता अपने बेटे को मुख्यमंत्री बनाने के लिए जनता को गुमराह कर रहे हैं। लेकिन बिहार की जनता अब समझदार हो गई है और वह विकास के पक्ष में मतदान करेगी। लोजपा (रामविलास) के प्रदेश अध्यक्ष राजू तिवारी ने राजद और विपक्षी दलों पर निशाना साधते हुए कहा कि ₹राजद के नेता झूठ, भ्रम और अफवाह फैलाने में लगे हैं, लेकिन जनता उनके झूठ को समझ चुकी है।₹ उन्होंने कहा कि राजद के नेता चुनाव से पहले बड़े-बड़े वादे कर रहे हैं, लेकिन वे खुद जानते हैं कि उनकी सरकार बनने वाली नहीं है। उन्होंने कार्यकताओं से आह्वान किया कि वे जनता के बीच जाएं और उन्हें विपक्ष के झूठे वादों से सावधान करें। राजू तिवारी ने कहा कि यह चुनाव बिहार के भविष्य का चुनाव है। उन्होंने कार्यकताओं से अपील की कि वे अभी से चुनाव की तैयारियों में जुट जाएं और बूथ स्तर तक एनडीए की जीत सुनिश्चित करें। हम पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष अनिल सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की जोड़ी से बिहार की जनता खुश है। उन्होंने कहा कि हाल ही में केंद्र सरकार द्वारा पेश किए गए बजट में बिहार को कई बड़ी सौगातें दी गई हैं, जिससे साफ है कि एनडीए की सरकार बिहार के विकास के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि बिहार के लोग एनडीए सरकार की विकास योजनाओं का समर्थन कर रहे हैं। हाल में हुए उपचुनावों में जनता ने एनडीए को जो समर्थन दिया, वह इस बात का प्रमाण है कि बिहार की जनता एक बार फिर एनडीए सरकार चाहती है। रालोमो के प्रदेश अध्यक्ष मदन चौधरी ने कहा कि बिहार की जनता अब राजद की सच्चाई जान चुकी है और उन्हें कभी भी दोबारा मौका नहीं देगी। उन्होंने कहा, ₹राजद की पहचान केवल भ्रष्टाचार और अपराध से जुड़ी रही है। जब भी इनकी सरकार बनी, बिहार में अपराध और भ्रष्टाचार बढ़ा। लेकिन एनडीए सरकार ने बिहार को विकास की राह पर आगे बढ़ाया है।₹ उन्होंने दावा किया कि आगामी चुनाव में एनडीए भारी बहुमत से जीत दर्ज करेगा और बिहार में फिर से एनडीए सरकार बनेगी। एनडीए के सभी प्रदेश अध्यक्षों ने कार्यकताओं से 225 से ज्यादा सीटों पर जीत दर्ज करने का संकल्प लिया। उन्होंने कहा कि एनडीए सरकार हमेशा जनता की सेवा के लिए काम करती है और यह सिलसिला आगे भी जारी रहेगा। उन्होंने कहा कि एनडीए सरकार ने बिहार में कानून व्यवस्था मजबूत की है, शिक्षा, स्वास्थ्य और बुनियादी ढांचे का विकास किया है और गरीबों के लिए कई कल्याणकारी योजनाएं चलाई हैं। जनता इन उपलब्धियों से खुश है और आगामी चुनाव में एनडीए को फिर से सत्ता में लाने का मन बना चुकी है। सम्मेलन के अंत में एनडीए के सभी प्रदेश अध्यक्षों ने कार्यकताओं को चुनाव जीतने के गुर सिखाए। उन्होंने कहा कि हर कार्यकर्ता को अपने बूथ पर मेहनत करनी होगी, मतदाताओं से व्यक्तिगत संपर्क करना होगा और सरकार की योजनाओं की जानकारी देनी होगी। कार्यकताओं ने भी पूरे जोश के साथ संकल्प लिया कि वे आगामी चुनाव में एनडीए की जीत सुनिश्चित करेंगे। सम्मेलन में उपस्थित हजारों कार्यकताओं ने एक स्वर में ₹फिर एक बार, एनडीए सरकार₹ का नारा लगाया और आगामी विधानसभा चुनाव में एनडीए की जीत का विश्वास जताया।

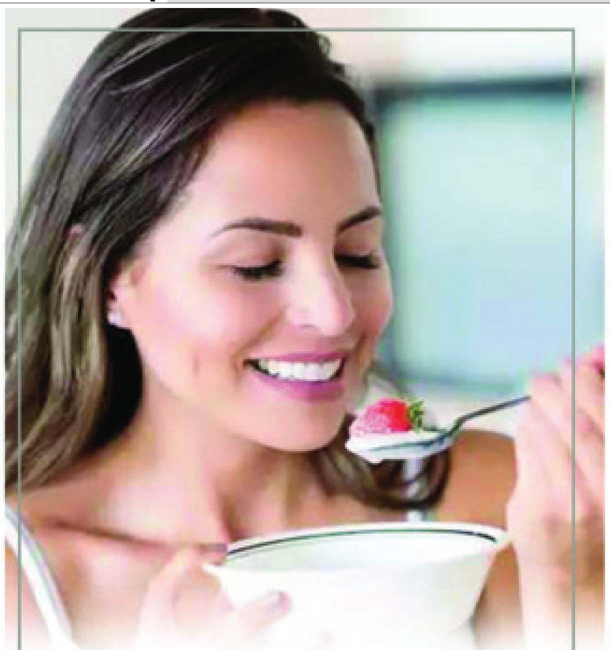

कितना सही है नाश्ते में दही लेना

नाश्ते में हम सभी कुछ ऐसा खाना पसंद करते हैं, जो खाने में टेस्टी हो और हमारे शरीर को पूरा दिन काम करने की एनर्जी देता रहे। ऐसे में ज्यादातर लोग किसी ना किसी रूप में नाश्ते में दही खाना पसंद करते हैं। लेकिन क्या नाश्ते में दही लेना एक स्वस्थ विकल्प है?

पाचक होती है लेकिन नींद दिलाती है

- यदि आपके दिन शुरुआत ही दही के साथ हो रही है तो यह आपको एनर्जी देने के स्थान पर नींद दिला सकती है और शरीर में सुस्ती बढ़ा सकती है। इसलिए दही कभी भी आपके फर्स्ट फूड का भाग नहीं होना चाहिए। हालांकि दही नाश्ते का एक शानदार हिस्सा है। यदि आप इसे खाते समय कुछ खास बातों का ध्यान रखते हैं तब.

समझे विरोधी बातों का अर्थ

- एक तरफ तो हम कह रहे हैं कि दही नाश्ते में खाना अच्छा है। वहीं दूसरी तरफ यह भी कह रहे हैं कि इसे खाने से सुस्ती बढ़ सकती है। दरअसल, ये दोनों ही बातें सही हैं। दही खाने पर आपको एनर्जी मिलेगी या सुस्ती आएगी, यह इस बात पर निर्भर करता है कि दही खाने का आपका तरीका क्या है।

इस तरह खाएं और इस तरह ना खाएं दही

- आप नाश्ते में चपाती, पराठा, चिल्ला आदि के साथ दही खा सकते हैं। एक कटोरी दही का सेवन नाश्ते में करना शरीर के लाभकारी होता है और पाचनतंत्र को सही करता है। साथ ही शरीर को दिनभर के लिए ऊर्जा देने में लाभकारी होता है।
- लेकिन नाश्ते में दही का सेवन तभी करना चाहिए जब आप सुबह के समय नाश्ते से पहले कुछ खा या पी चुके हों। जैसे, सुबह की शुरुआत आपने पानी के साथ की हो और फिर चाय-टोस्ट, स्प्राउट्स या ड्राईफ्रूट्स आदि खाए हों। इसके एक घंटे बाद यदि आप नाश्ते में दही का सेवन करते हैं तो आपको नींद नहीं आएगी। आपको गैस बनने की समस्या है तो इन 5 सब्जियों से बचना चाहिए

खाली पेट नहीं खानी चाहिए दही

- सुबह के समय आप नाश्ते में केवल मीठी दही का उपयोग कर सकते हैं। खट्टी दही खाने से परहेज करें। साथ ही नाश्ते में दही खाते समय आप इसमें एक चम्मच शक्कर मिला सकते हैं। यदि आपको शुगर की समस्या नहीं है तब।
- दिन की शुरुआत यदि किसी भी कारण देरी से हुई हो और आपके पास नाश्ता करने का समय ना हो तो भूलकर भी खाली दही ना खाएं। यदि आप खाली पेट दही खाते हैं तो आपको जबदस्त नींद आएगी और आप खुद को बहुत थका हुआ अनुभव करेंगे।
- ऐसा इसलिए होता है क्योंकि खाली पेट दही खाने से कुछ लोगों को ब्लड प्रेशर कम होने की समस्या हो जाती है। इससे शरीर में ब्लड का फ्लो कम होता है और ऑक्सीजन का स्तर घटने लगता है। यही कारण है कि बहुत तेज नींद आती है और बेहोशी जैसा अनुभव होता है।

आप चाहे मानसिक काम अधिक करते हैं या शारीरिक काम। यदि आपको काम करते समय बहुत जल्दी थकान होने लगती है तो इसका एक अर्थ यह होता है कि आपके शरीर में डिहाइड्रेशन की समस्या है। जी हां, केवल पोषण की कमी के कारण ही नहीं बल्कि शरीर में पानी की कमी के कारण भी जल्दी थकान होती है। जो लोग नियमित रूप से जरूरी पानी नहीं पीते हैं, उन्हें काम करते समय अधिक थकान होना और अन्य लोगों की तुलना में जल्दी थकान होने जैसी समस्याएं होती हैं। जानें, जल्दी थकान होने के अन्य कारण और उनके निवारण के तरीके

लगातार बनी रहती है थकान तो ऐसे रखें अपना ध्यान

जल्दी थकने की वजह

- आमतौर पर जो लोग बहुत जल्दी थकान होने की समस्या से पीड़ित होते हैं, उनके शरीर में कुछ खास तत्वों की कमी देखने को मिलती है.
- पानी की कमी
- खून की कमी
- विटमिन-बी12 की कमी
- फोलेट या फॉलिक एसिड की कमी देखने को मिलती है।

जल्दी थकान से बचने के तरीकों में ना केवल अपने खान-पान पर ध्यान देना है बल्कि यह भी ध्यान देना है कि जिस डायट का सेवन आप कर रहे हैं और जिन ड्रिंक्स को आप ले रहे हैं, क्या वे आपके शरीर की जरूरतों को पूरा कर रही हैं। यहां जानें कैसे रखा जाएगा इस बात का ध्यान.

तरल पदार्थों का सेवन

- जल्दी-जल्दी होने वाली थकान की समस्या से बचने के लिए जरूरी है कि आप तरल पदार्थों का सेवन बढ़ा दें। इनमें जूस, सूप, छांछ, दाल इत्यादि शामिल हैं। इसके साथ ही समय-समय सादा पानी पीते रहें। वयस्कों को हर दिन कम से कम 8 गिलास पानी पीना चाहिए।

तनाव को नियंत्रित करना सीखें

- जल्दी थकने की एक बड़ी वजह लगातार बना रहनेवाला तनाव भी होता है। तनाव का कारण चाहे जो भी लेकिन यह व्यक्ति को शारीरिक और मानसिक दोनों तरह से जल्द थका देता है। इसलिए तनाव से बचने के लिए हर दिन कुछ समय के लिए मेडिटेशन यानी ध्यान जरूर करें। यह आपको मानसिक रूप से फिट रखने का काम करेगा।

फलियों का सेवन करें

- हरी फलियां कई तरह की वरायटी में आती हैं। खास बात यह है कि मौसम की प्रकृति और उस दौरान शरीर की जरूरत के अनुसार हर सीजन में आनेवाली फलियां पोषक तत्वों से भरपूर होती हैं।
- हरी फलियां फाइबर युक्त होती हैं और इनका पाचन धीमी गति से होता है। इसलिए ये शरीर को लंबे समय तक ऊर्जा देने का काम करती हैं, जिससे शरीर पर थकान कम हावी होती है।

ड्राईफ्रूट्स

- ऐसा नही है कि ड्राईफ्रूट्स का सेवन केवल सर्दियों में ही करना चाहिए। बल्कि सीमित मात्रा में और दूध के साथ ड्राईफ्रूट्स का सेवन गर्मियों में भी हर दिन किया जा सकता है।
- क्योंकि ड्राईफ्रूट्स केवल हमारे शरीर को गर्माहट देने का ही काम नहीं करते हैं बल्कि पोषण देने का काम भी करते हैं। शरीर की कमजोरी को दूर करने में मीट भी अच्छी भूमिका निभाता है। लेकिन कोरोना संक्रमण के दौर में हम आपको मीट खाने की सलाह नहीं देना चाहते हैं। इस समय में आप थकान से बचने के लिए ड्राईफ्रूट्स यानी सूखे मेवों का सेवन कर सकते हैं।

शरीर में ऑक्सीजन की कमी के लक्षण और कारण

शरीर में ऑक्सीजन की कमी हो जाना कई रोगों का कारण बनता है। ऑक्सीजन का स्तर कम होने पर सबसे जल्दी और सबसे बुरा असर हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता पर पड़ता है। इस स्थिति में कोई भी वायरस और बैक्टीरिया हमारे शरीर पर हावी हो सकता है। शरीर में ऑक्सीजन की कमी के लक्षण और कारण क्या होते हैं.

शरीर में ऑक्सीजन की कमी के लक्षण

- शरीर में ऑक्सीजन की कमी होने से अर्थ है कि शरीर को अपनी नियमित क्रियाओं को सुचारू रूप से चलाने के लिए जितनी मात्रा में ऑक्सीजन चाहिए, उतनी मात्रा में ऑक्सीजन ना मिल पाना।
- जब शरीर में ऑक्सीजन की कमी होती है तो सबसे पहले व्यक्ति को थकान महसूस होती है, सांस लेने में दिक्कत होने लगती या सांस फूलने लगता है। इसके बाद शरीर में रक्त के प्रवाह की गति धीमी हो जाती है। इससे थकान और घबराहट बढ़ जाती है।

हो सकती हैं ये बीमारियां

- यदि शरीर में ऑक्सीजन की मात्रा बहुत कम हो जाए तो ब्रेन डैमेज और हार्ट अटैक तक की स्थिति बन जाती है। शुगर के रोगियों में यदि ऑक्सीजन की कमी हो जाए तो उनकी शुगर अचानक बहुत अधिक बढ़ सकती है, जो कि एक जानलेवा स्थिति भी बन सकती है।
- ऑक्सीजन का स्तर अचानक से बहुत अधिक घट जाने पर शरीर में थायरॉइड हॉर्मोन का संतुलन गड़बड़ा जाता है। इस स्थिति में थायरॉइड का स्तर या तो बहुत अधिक बढ़ सकता है या बहुत अधिक घट सकता है।

शरीर में ऑक्सीजन की कमी के कारण

- शरीर में ऑक्सीजन की कमी के कई कारण होते हैं, जो व्यक्ति की लाइफस्टाइल पर निर्भर करते हैं। जो लोग बहुत अधिक आलस से भरपूर जीवनशैली जीते हैं यानी फिजिकल ऐक्टिविटी नहीं करते हैं, उनके शरीर में भी ऑक्सीजन की कमी हो जाती है।
- जो लोग बहुत अधिक शारीरिक श्रम करते हैं लेकिन उसके हिसाब से डायट नहीं लेते हैं, उनके शरीर में भी ऑक्सीजन की कमी हो सकती है।
- जिन लोगों के भोजन में आयरन की मात्रा कम होती है अगर वे लंबे समय तक इसी तरह का भोजन लेते रहें तो उनके शरीर में भी ऑक्सीजन की कमी हो सकती है। क्योंकि फेफड़ों सहित पूरे शरीर में ऑक्सीजन का प्रवाह करने में आयरन महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

चैन की नींद सोना है तो जरूर करें यह काम

अगर आप चाहते हैं कि रात में आपको सुकून की नींद आए, पैरों में कुलन और बेचैनी के कारण आपकी नींद में किसी तरह की बाधा ना आए तो आपको सोने से पहले एक खास काम करना होगा। यह काम आपके शरीर को राहत देने के साथ ही दिमाग को भी शांति देगा। आइए, जानते हैं कि आखिर क्या और कैसे करना है.

आपको क्या करना है?

- बिस्तर पर जाने से पहले आपको अपने पैर साफ पानी से धुलकर कॉटन के कपड़े से पोछकर साफ करने हैं। इसके बाद सरसों के तेल से अपने पैरों की मालिश करें। यह मालिश 2 से 3 मिनट की भी हो तो काफी है। यहां जानें इस तरह हर दिन मालिश करने से आपको किस तरह के लाभ होंगे.

पैर के तलुए में होते हैं सभी एक्युप्रेशर पॉइंट्स

- हमारे पैर के तलुओं में पूरे शरीर के एक्यूप्रेशर पॉइंट्स होते हैं। पैर के तलुओं पर मसाज करने से इन पॉइंट्स पर दबाव पड़ता है, जिससे शरीर का तनाव कम होता है और मानसिक शांति बढ़ती है। इसलिए आप अच्छी नींद आती है।

ताउम्र रहेंगे युवा

- अगर आप हर दिन सोने से पहले अपने पैर के तलुओं पर सरसों के तेल से मालिश करेंगे तो आप ताउम्र युवा बने रहेंगे। यहां युवा बने रहने से हमारा आशय है कि आपके दांत, आपकी दृष्टि और आपके शरीर के जोड़ों में किसी तरह का दर्द या समस्या नहीं हो पाएगी।

चश्मा नहीं लगेगा

- यदि आप सोने से पहले हर दिन अपने पैरों पर सरसों तेल से मालिश करते हैं तो आप अपनी कमजोर आइसाइट को भी ठीक कर सकते हैं। लेकिन ऐसा नहीं है कि आपको एक या दो हफ्ते में ही इसका असर देखने को मिल जाएगा।

पाचन को ठीक रखे

- आपको जानकर थोड़ी हैरानी हो सकती है। लेकिन यह सही है कि जो लोग नियमित रूप से अपने पैर के तलुओं पर मालिश करते हैं या किसी और से कराते हैं, उनका पाचनतंत्र अन्य लोगों की तुलना में काफी ठीक रहता है। साथ ही उन्हें पेट संबंधी रोग नहीं घेरते हैं।
- साथ ही ऐसे लोगों के शरीर पर थकान हावी नहीं हो पाती है। पैर के तलुओं की मसाज करने से शरीर के डैमेज सेल यानी क्षतिग्रस्त कोशिकाओं की जल्द मरम्मत होती है। इससे त्वचा भी चमकदार बनी रहती है। तो देर किस बात की, खूबसूरती और सेहत के लिए आज से ही शुरू करें पैर के तलुओं की मालिश।

ड्राई आई सिंड्रोम का संकेत हो सकता है आंखों में पानी आना

आंखे शरीर का सबसे जरूरी, सुंदर और नाजुक अंग है। सर्दी के मौसम में नमी और ठंडक के कारण आंखों में पानी आ जाता है लेकिन यह ड्राई आई सिंड्रोम का संकेत भी हो सकता है। इस बीमारी में आंखों से बहुत ज्यादा पानी आना, धुंधला दिखाई देना और चुभन महसूस होना, सूजन, रैशेज, लालपन जैसे लक्षण दिखाई देते है। इस बीमारी का समय पर इलाज न करने पर आंखों की रोशनी जा भी सकती है। ऐसे में इस समस्या से छुटकारा पाने के लिए आप डॉक्टर की दवाइ के साथ-साथ कुछ घरेलू उपाय भी कर सकते हैं। इन घरेलू नुस्खों की मदद से आप बिना किसी नुकसान के इस परेशानी से छुटकारा पा सकते है।

गीला कपड़ा – आंखों को हाथों से इंफेक्शन का खतरा बढ़ जाता है। आंखों में जलन, दर्द या खुजली होने पर साफ पानी में कपड़े को भिगोकर आंखों की सफाई करें। इससे किसी भी तरह की बीमारी का खतरा कम हो जाता है।

नारियल का तेल – नारियल तेल में मौजूद गुण आखों की गंदगी को साफ करते हैं। रोजाना आंखों के नीचे और आस-पास नारियल के तेल की मालिश करें। आपको इस समस्या से निजात मिल जाएगा।

हर्बल टी – कोमोमाइल या पेपरमिंट चाय की पत्तियों को थोड़ी देर गर्म पानी में भिगो दें। इसके बाद थोड़ी-थोड़ी देर में आंखों की सिकाई करें। ध्यान रहें कि पानी ज्यादा गर्म न हो।

नमक – कई बार आंखो में जलन और खुजली के कारण पानी आने लगता है। ऐसे में आप 1 गिलास गर्म पानी में चुटकीभर नमक डालकर आंखों की सिकांई करें। दिन में 3 बार इसका इस्तेमाल खुजली और जलन की परेशानी को दूर कर देगा।

बेकिंग सोडा – साफ पानी में 1 चम्मच बेकिंग सोडा मिलाकर गर्म करें। पानी थोड़ा रह जाने पर इससे अपनी आंखों को धो लें। इससे आपको आराम मिल जाएगा।

ठंडा दूध – कॉटन बॉल को ठंडे दूध में डिप करके अपनी आंखों के आस-पास रगड़ें। इसके अलावा आप कॉटन बॉल को ठंडे दूध में भिगोकर रख भी सकते है। इन उपायों को सुबह-शाम करने से आपको आराम मिल जाएगा।

एलोवेरा – एलोवेरा जेल में 1 चम्मच शहद और 1/2 कप एल्डरबैरी चाय मिलाएं। रोजाना दिन में 2 बार इस मिश्रण से अपनी आंखों को धोएं। आपकी परेशानी कुछ समय में ही दूर हो जाएगी।

कच्चा आलू – एस्ट्रिंजेंट के गुणों से भरपूर कच्चा आलू आंखों में पानी आने की समस्या से जल्दी राहत देता है। आलू की पतली स्लाइस काट कर कुछ देर फ्रिज में रखें। इसके बाद इस ठंडी स्लाइस को 15 से 20 मिनट के लिए आंखों के उपर रख लें। 2-3 दिन तक इसका इस्तेमाल आपकी इस समस्या को दूर कर देगा।

विंद्र जडेजा ने रचा इतिहास, जेम्स एंडरसन का रिकॉर्ड तोड़कर दिग्गजों को पछाड़ा

नागपुर (एजेंसी)। भारत और इंग्लैंड के बीच पहले वनडे मैच में टीम इंडिया के स्टार ऑलराउंडर रविंद्र जडेजा ने एक बड़ा कीर्तिमान रच डाला है। जडेजा इंटरनेशनल क्रिकेट में 600 विकेट पूरे करने वाले पांचवें भारतीय गेंदबाज बन गए हैं। उन्होंने नागपुर में खेले गए वनडे मैच में कुल 3 विकेट अपने नाम कर ये इतिहास रचा है। इसके अलावा जडेजा ने भारत और इंग्लैंड वनडे मैचों के इतिहास में सबसे ज्यादा विकेट लेने का भी रिकॉर्ड बनाया है। इस मामले में उन्होंने जेम्स एंडरसन के 40 विकेटों के रिकॉर्ड को भी पछाड़ दिया है।

रविंद्र जडेजा से पहले पांच भारतीय गेंदबाजों ने इंटरनेशनल क्रिकेट में 600 या उससे ज्यादा विकेट लिए थे। इस सूची में पहले स्थान पर अनिल कुंबले हैं, जिनके नाम 935 विकेट हैं। इस लिस्ट में रविचंद्रन अश्विन, हरभजन सिंह और कपिल देव भी शामिल हैं।

अनिल कुंबले-953 विकेट
रविचंद्रन अश्विन- 765 विकेट
हरभजन सिंह-703 विकेट
कपिल देव- 687 विकेट

रविंद्र जडेजा 600 विकेट

वहीं जडेजा ने इंग्लैंड के खिलाफ मैच में पहला विकेट जो रूट का लिया। रूट क्रीज पर डट कर बल्लेबाजी कर रहे थे लेकिन 19 रन के स्कोर पर जडेजा ने उन्हें एलबीडब्ल्यू आउट कर दिया। इसके बाद उन्होंने जैकब बैथेल का विकेट लेकर भारत की मैच में वापसी करवाई। बैथेल ने 51 रन की सूझबूझ भरी पारी खेली। उन्होंने मैच में आदिल रशीद को क्लीन बोल्ड करते हुए मैच का तीसरा विकेट भी लिया।

टेनिस में वापसी के लिए सर्जरी करवाने वाली सिमोना हालेप ने अब कहा अलविदा

2008
2014

बुखारेस्ट (रोमानिया) (एजेंसी)। 2 बार की ग्रैंड स्लैम चैंपियन सिमोना हालेप ने मंगलवार को अपने गृह देश रोमानिया में एक टूर्नामेंट के पहले दौर में हार के बाद 33 साल की उम्र में टेनिस से संन्यास की घोषणा की। हालेप ने रोमानिया के क्लुज में ट्रांसिल्वेनिया ओपन में लूसिया ब्रॉन्जेटी से 6-1, 6-1 की हार के बाद दर्शकों को संबोधित करते हुए कहा कि मैं नहीं जानती कि मैं दुख के साथ या खुशी के साथ यह घोषणा कर रही हूं। मुझे लगता है कि मैं दोनों को महसूस कर रही हूं लेकिन इस फैसले से मुझे शांति मिली है। मैं हमेशा यथार्थवादी रही हूं। उन्होंने कहा कि मेरा शरीर अब पहले जैसा नहीं रहा। भले ही मेरा प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा लेकिन मैं आपके सामने खेलकर टेनिस को अलविदा कहना चाहती थी।

हालेप 2018 में अचानक चर्चा में आ गई थी जब उन्होंने घोषणा की थी कि खेल में व्यवधान पड़ने के कारण वह जल्द ही ब्रेस्ट सर्जरी करवाने जा रही है। हालेप ने तब सर्जरी करवाकर अपने सीने के ऊपरी भाग को कम करवा दिया था। लेकिन उसके बाद से उनकी परफार्मेंस से निरंतरता जारती है। हालेप 2017 में पहली बार विश्व रैंकिंग में नंबर एक पर पहुंची थी लेकिन अभी वह 870वें स्थान पर हैं। उन्हें रोमानिया में इस टूर्नामेंट में खेलने के लिए वाइल्ड कार्ड से प्रवेश दिया गया था। अपने करियर में चोटों से जूझने और डोपिंग के कारण निलंबन झेलने वाली हालेप एक समय महिला टेनिस में शीर्ष पर थीं। उन्होंने 2019 में विंबलडन में फाइनल में सेरेना विलियम्स को और 2018 में फ्रेंच ओपन में स्लोएन स्टीफंस को फाइनल में हराकर ग्रैंड स्लैम एकल खिताब जीते थे।

नाथन लियोन ने रचा इतिहास, एशिया में 150 विकेट लेने वाले पहले गैर-एशियाई गेंदबाज बने

स्पोर्ट्स डेस्क। नाथन लियोन ने गुरुवार 6 फरवरी को एक बड़ी उपलब्धि हासिल करते हुए एशिया में टेस्ट मैचों में 150 विकेट लेने वाले पहले गैर-एशियाई गेंदबाज बन गए हैं। लियोन ने गॉले में ऑस्ट्रेलिया और श्रीलंका के बीच दूसरे टेस्ट के पहले दिन तीन विकेट लेकर यह उपलब्धि हासिल की। लियोन से पहले एशिया में 150 विकेट के सबसे करीब पहुंचने वाले महान खिलाड़ी शेन वॉर्न थे। लेग-स्पिन के इस महान खिलाड़ी ने 25 टेस्ट मैचों में 26 की गेंदबाजी औसत से 127 विकेट लिए। लियोन ने एशिया में अपने 30वें मैच में 30 गेंदों पर औसतन 150 टेस्ट विकेट हासिल किए।

एशिया में गैर-एशियाई गेंदबाजों द्वारा सर्वाधिक विकेट

नाथन लियोन - 30 टेस्ट में 150 विकेट
शेन वॉर्न - 25 टेस्ट में 127 विकेट
डैनियल विटोरी - 21 टेस्ट में 98 विकेट
जेम्स एंडरसन - 32 टेस्ट में 92 विकेट

लियोन ने श्रीलंका को उस पिच पर कड़ी मेहनत करवाई जो गॉले में सीरीज के पहले मैच के लिए इस्तेमाल की गई पिच से थोड़ी सूखी थी। श्रीलंका ने टॉस जीतकर बल्लेबाजी करने का फैसला किया लेकिन पहले दिन स्टंप्स तक उनका स्कोर 90 ओवर में 9 विकेट पर 229 रन था। लियोन ने आठवें ओवर में ही पथुम निसांका को बोल्ड कर दिया। हालांकि श्रीलंका के लिए अपना 100वां और अंतिम टेस्ट खेल रहे दिमुथ करुणारत्ने ने दिनेश चांदीमल के साथ 70 रनों की साझेदारी करके पारी को संभाला, जो पहले दिन श्रीलंका के लिए स्कोरिंग चार्ट में शीर्ष पर रहे। लियोन ने फिर से गेंदबाजी करते हुए 33वें ओवर में साझेदारी को तोड़ा और बाएं हाथ के बल्लेबाज को 36 रन पर आउट करके दिमुथ के विदाई टेस्ट के पहले हिस्से को खराब कर दिया। ऑफ स्पिनर ने श्रीलंका के खिलाफ तीन विकेट लिए साथ ही सीनियर बल्लेबाज एंजेलो मैथ्यूज को 1 रन पर आउट किया। लियोन ने पहले दिन के बाद कहा, 'चीजों के इस तरह से होने से बहुत खुश हूं। मैं उसे (टेस्ट में एशिया में 150 विकेट) याद रखूंगा। उप-महाद्वीप में मेरे पास काफी कठिन समय रहा है। इसलिए 150 रन बनाना खास है।' दिनेश चांदीमल ने 74 रन बनाए लेकिन बाएं हाथ के स्पिनर मैथ्यू ने 51वें ओवर में उनकी पारी का अंत कर दिया। कुहनेमन ने 30 ओवर फेंके, जिसमें नौ मेडन शामिल थे। ट्रेविस हेड ने भी अपना प्रभाव छोड़ा, अपने पहले ओवर में ही उन्होंने कामिंडू मेंडिस का बड़ा विकेट लिया जिनका स्कोर 13 था। मिशेल स्टार्क ने 16 ओवर फेंकते हुए तेज गेंदबाजी का भार बड़ी दृढ़ता के साथ उठाया।

वरुण चक्रवर्ती और त्रिशा आईसीसी प्लेयर ऑफ द मंथ की दौड़ में, इनसे मिल रही टक्कर

दुबई (एजेंसी)। रहस्यमयी स्पिनर वरुण चक्रवर्ती को हाल में इंग्लैंड के खिलाफ संपन्न पांच मैच की टी20 अंतरराष्ट्रीय श्रृंखला में शानदार प्रदर्शन के बाद अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) के महीने के सर्वश्रेष्ठ पुरुष क्रिकेटर के पुरस्कार के लिए नामित किया गया।

चक्रवर्ती ने पांच मैच में 9.85 की शानदार औसत और 7.66 की इकोनॉमी रेट से 14 विकेट चटकाए। चक्रवर्ती ने टी20 विश्व चैंपियन भारत को घरेलू श्रृंखला 4-1 से जिताने में अहम योगदान दिया। इंग्लैंड के बल्लेबाज पूरी श्रृंखला के दौरान उनकी स्पिन को समझने के लिए संघर्ष कर रहे थे। वेस्टइंडीज के स्पिनर जोमेल वारिकन को भी पुरुष वर्ग में नामित किया गया है। उन्होंने अपनी टीम को पाकिस्तान के खिलाफ दो मैच की टेस्ट श्रृंखला ड्रॉ कराने में मदद की थी। बाएं हाथ के स्पिनर वारिकन को पाकिस्तान के खिलाफ श्रृंखला का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी चुना गया। वह 19 विकेट लेकर श्रृंखला के सर्वश्रेष्ठ गेंदबाज रहे। पाकिस्तान के नोमान अली भी इस पुरस्कार की दौड़ में हैं। उन्होंने वेस्टइंडीज के खिलाफ श्रृंखला में 16 विकेट लिए थे। हाल में आईसीसी महिला अंडर-19 टी20 विश्व कप के दौरान टूर्नामेंट की सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी रहीं भारतीय सलामी बल्लेबाज गोंगाडी त्रिशा को महिला वर्ग में पुरस्कार के लिए नामित किया गया है। त्रिशा 309 रन के साथ टूर्नामेंट में सबसे ज्यादा रन बनाने वाली खिलाड़ी थीं। वह इस प्रतियोगिता में शतक बनाने वाली पहली खिलाड़ी भी बनीं। उनके शानदार प्रदर्शन की बदौलत भारत ने लगातार दूसरी बार खिताब जीता।

हर्षित राणा ने बनाया यूनीक रिकॉर्ड, बने ऐसा करने वाले पहले भारतीय

नागपुर (एजेंसी)। इंग्लैंड के खिलाफ नागपुर वनडे में भारतीय टीम के लिए हर्षित राणा ने डैब्यू किया। हर्षित ने अपने पहले ही मुकाबले में यूनीक रिकॉर्ड भी अपने नाम कर लिया है। हर्षित ऐसे केवल दूसरे भारतीय प्लेयर हैं जिन्होंने टी20 और वनडे डैब्यू में कम से कम तीन विकेट लिए। इससे पहले बरिंदर सरां ने जिम्बाब्वे के खिलाफ टी-20 और ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ वनडे में 3 विकेट लिए थे। हर्षित राणा तीनों प्रारूपों में यह उपलब्धि हासिल करने वाले एकमात्र खिलाड़ी भी है। उन्होंने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टेस्ट डैब्यू में भी 3 विकेट लिए थे।

हर्षित राणा ने नागपुर वनडे में 53 रन पर तीन विकेट लेने के बाद कहा कि यह मेरा सपना था। मैंने खुद को इसके लिए तैयार किया और कड़ी मेहनत की। मैंने शुरुआत में सही लेंथ पर गेंद नहीं फेंकी लेकिन जैसे ही मैंने उसे सही किया तो मुझे इसका इनाम मिला। वे (बल्लेबाजों) कुछ जगह बनाना चाह रहे थे, यही कारण है कि मैं स्टंप्स पर गेंदबाजी करता रहा। यह थोड़ी दो गति वाली पिच है। उनमें से कुछ अच्छे से आ रहे हैं, कुछ थोड़ा रुक रहे हैं। हमने स्टाइल में वापसी की। यह अच्छा स्कोर है और हम इसका पीछा कर सकते हैं।

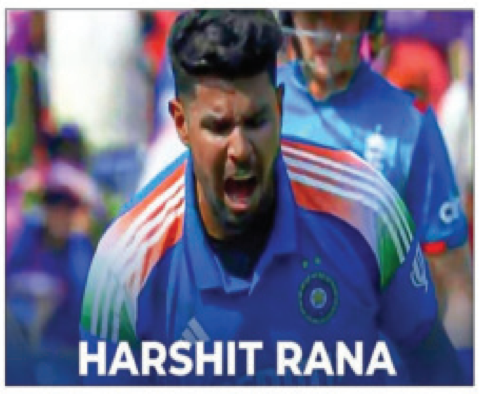

रोहित शर्मा की फ्लॉप फार्म जारी, सिर्फ 2 रन बनाए, फैंस ने किया ट्रोल

नागपुर। नागपुर में इंग्लैंड के खिलाफ पहले वनडे में भारत के कप्तान रोहित शर्मा की खराब फॉर्म जारी रही। वह पहले वनडे में मात्र 2 रन पर आउट हो गए जिससे टीम का स्कोर 19/2 हो गया। रोहित जो सिर्फ 7 गेंदें ही खेल पाए, साकिब महमूद की गेंद पर फ्लिक शॉट खेलने में जल्दी कर गए। गेंद उनके बल्ले के किनारे पर लगे जिससे वह ऊपर उछल गई। मिड-ऑन पर लियाम लिविंगस्टोन ने इसे आसानी से लपक लिया। इस आऊट से रोहित की समस्याएं बढ़ गई हैं। वह सभी प्रारूपों में अपनी पिछली 15 पारियों में केवल 164 रन ही बना पाए हैं।

ऑस्ट्रेलियाई ऑलराउंडर स्टोइनिस ने संन्यास लिया

मेलबर्न। ऑस्ट्रेलियाई ऑलराउंडर मार्कस स्टोइनिस ने एकदिवसीय क्रिकेट से संन्यास की घोषणा कर दी है। आईसीसी चैम्पियंस ट्रॉफी से ठीक पहले स्टोइनिस के इस कदम से ऑस्ट्रेलियाई टीम को करारा झटका लगा है क्योंकि उसके तीन प्रमुख खिलाड़ी चोटिल होने के कारण पहले ही बाहर हो गये हैं। स्टोइनिस ने कहा है कि करियर के अगले दौर पर ध्यान देने के लिए ही वह एकदिवसीय से संन्यास ले रहे हैं। स्टोइनिस को ऑस्ट्रेलिया की चैंपियंस ट्रॉफी टीम में शामिल किया गया था पर अब उनकी इस घोष्णा से क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया सीए की मुश्किलें बढ़ गयी हैं। ऑस्ट्रेलिया के पास चैंपियंस ट्रॉफी के लिए अपनी अंतिम टीम की घोषणा करने के लिए 12 फरवरी तक का समय है क्योंकि चैम्पियंस ट्रॉफी 19 फरवरी से पाकिस्तान और दुबई में आयोजित की जाएगी। स्टोइनिस ने कहा, ऑस्ट्रेलिया के लिए एकदिवसीय क्रिकेट खेलना एक अविश्वसनीय यात्रा रही है, और मैं हरे और सुनहरे रंग के मैदान में बिताए हर पल के लिए आभारी हूं। शीर्ष स्तर पर अपने देश का प्रतिनिधित्व करना कुछ ऐसा है जिसे मैं हमेशा अपनी यादों में संजो कर रखूंगा। यह एक आसान फैसला नहीं था, लेकिन मेरा मानना ??है कि मेरे लिए एकदिवसीय से दूर रहने और अपने करियर के अगले अध्याय पर पूरी तरह से ध्यान केंद्रित करने का यह सही समय है। उन्होंने कहा, मुख्य कोच एंड्रयू मैकडोनाल्ड के साथ मेरे शानदार संबंध हैं और मैं उनके समर्थन की बहुत सराहना करता हूं। मैं आईसीसी टूर्नामेंट अपनी टीम का उत्साहवर्धन करूंगा। वहीं मैकडॉनल्ड ने एकदिवसीय में स्टोइनिस के योगदान प्रदर्शन की सराहना करते हुए कहा, पिछले एक दशक से स्टोइनिस हमारे एकदिवसीय प्रारुप का एक अहम हिस्सा रहे हैं।

लाहौर का गद्दाफी स्टेडियम अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट के लिए तैयार : पीसीबी

लाहौर (एजेंसी)। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने बृहस्पतिवार को घोषणा की कि लाहौर के गद्दाफी स्टेडियम में नवीनीकरण और आधुनिकीकरण का काम 117 दिन के रिकॉर्ड समय में पूरा हो गया है और अब यह आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी सहित अंतरराष्ट्रीय मुकाबलों की मेजबानी के लिए तैयार है।

पीसीबी ने एक बयान में कहा कि स्टेडियम में अब बेहतर सुविधाएं, नई फ्लडलाइट्स, हॉस्पिटैलिटी बॉक्स, अधिक दर्शकों के बैठने की क्षमता, इलेक्ट्रॉनिक स्कोरबोर्ड और शीर्ष स्तर के एलईडी टावर हैं। पीसीबी प्रमुख मोहसिन नकवी ने कहा, 'मैं उन सभी लोगों का आभारी हूं जिन्होंने आशंकाओं और आलोचनाओं के बावजूद स्टेडियम को समय पर तैयार करने के लिए दिन-रात काम किया।'

हाल ही में यह बताया गया था कि पीसीबी काम पूरा करने में कम से कम पांच सप्ताह पीछे चल रहा है। पीसीबी को 12 फरवरी तक स्टेडियम को आईसीसी (अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद) को सौंपना है क्योंकि टूर्नामेंट एक सप्ताह बाद शुरू होगा। प्रधानमंत्री शाहबाज शरीफ शुक्रवार को एक समारोह के दौरान स्टेडियम का आधिकारिक उद्घाटन करेंगे जहां अली जफर, आइमा बेग और आरिफ लोहार जैसे प्रसिद्ध कलाकार प्रस्तुति देंगे। नकवी ने कहा, 'मैं उन लगभग 1000 श्रमिकों का विशेष रूप से आभारी हूं जिन्होंने इस सपने को संभव बनाया है।'

नए स्टेडियम का परीक्षण आठ फरवरी को होगा जब पाकिस्तान और न्यूजीलैंड त्रिकोणीय श्रृंखला का पहला मैच खेलेंगे जिसकी तीसरी टीम दक्षिण अफ्रीका है। पीसीबी 11 फरवरी को कराची में राष्ट्रीय स्टेडियम का उद्घाटन करेगा जिसमें राष्ट्रपति आसिफ जरदारी के शामिल होने की उम्मीद है। नकवी ने स्वीकार किया है कि लाहौर, कराची और रावलपिंडी में तीन स्टेडियमों के आधुनिकीकरण का खर्च शुरुआती आवंटित बजट से अधिक हो गया है लेकिन उन्होंने कहा कि नए अत्याधुनिक स्थल भविष्य में पाकिस्तान क्रिकेट को अच्छी सेवा प्रदान करेंगे। पीसीबी ने शुरू में नवीनीकरण कार्य के लिए 12 अरब 80 लाख रुपये आवंटित किए थे लेकिन बजट 18 अरब रुपये से अधिक बताया जा रहा है। पीसीबी ने कहा कि इस कार्य के लिए सरकार सहित किसी अन्य स्रोत से कोई वित्तीय सहायता नहीं ली गई।

आईसीसी चैम्पियंस ट्रॉफी में भारत–पाक मुकाबले के टिकट कुछ ही मिनटों में बिके, तीन लाख तक पहुंची कीमत

दुबई। भारत और पाकिस्तान के बीच यहां 23 फरवरी को होने वाले आईसीसी चैम्पियंस ट्रॉफी के टिकट कुछ ही मिनटों में बिक गये। इसके ऑनलाइन टिकटों की बिक्री के लिए करीब एक लाख 40 हजार लोग कतार में थे पर कुछ को ही टिकट मिले। इस टूर्नामेंट का आयोजन हाईब्रिड मॉडल के तहत किया जा रहा है जिसका मेजबान तो पाकिस्तान है पर भारतीय टीम के मुकाबले दुबई में खेले जाएंगे। भारतीय टीम इसमें अपना पहला मैच 20 फरवरी को दुबई में बांग्लादेश से खेलेगी। भारतीय टीम अपने अंतिम ग्रुप मैच में 2 मार्च को न्यूजीलैंड का सामना करेगी। दोनो टीमों के बीच होने वाले मुकाबले के लिए टिकटों की भारी मांग थी। सबसे कम कीमत का टिकट 500 एईडी (भारतीय रुपयों में 11 हजार 863) था,जो बाद में बढ़कर 12,500 एईहडी तकरीबन तीन लाख भारतीय रुपयों तक पहुंचा गया। एमिरेट्स क्रिकेट बोर्ड के मुख्य कार्यकारी और पीसीबी के पूर्व सीओओ सुभान अहमद ने क्रिकेट पाकिस्तान से बात करते हुए कहा कि यहां इतने सारे भारतीय और पाकिस्तानी रहते हैं कि ये खेल क्रिकेट से कहीं बढ़कर एक उत्सव बन गया है। उन्होंने कहा कि दोनों टीमों के प्रशंसक अपनी टीमों का समर्थन करने और खेल का आनंद लेने के लिए एक साथ आते हैं जिससे काफी अच्छा माहौल बन जाता है।' दुबई में खेले जाने वाले 4 मैचों के टिकट पाकिस्तान में होने वाले कुछ मैचों के टिकटों के साथ ही उपलब्ध करा दिए गए हैं। जब भारत और पाकिस्तान मुकाबले के टिकट की बिक्री शुरू हुई तो मिनटों में ही टिकट सोल्ड आउट हो गए। इसके बाद, एक घंटे के भीतर ही सारे टिकट बिक गए। चैंपियंस ट्रॉफी के सभी मैच भारतीय समय के मुताबिक दोपहर 2-30 बजे शुरू होंगे। वहीं पाक समय के अनुसार यह दोपहर 2 बजे से होगा। भारतीय टीम ने दो बार चैंपियंस ट्रॉफी जीत चुकी है। अब उसका लक्ष्य एक बार फिर इसपर कब्जा करना रहेगा।

रिकी पोंटिंग ने माना- इन 3 प्लेयर को किसी भी कीमत पर पंजाब किंग्स में चाहता था

नई दिल्ली (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलियाई दिग्गज रिकी पोंटिंग ने खुलासा किया है कि वह इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) की मेगा नीलामी में श्रेयस अय्यर, अर्शदीप सिंह और युजवेंद्र चहल को पंजाब किंग्स में शामिल करना चाहते थे क्योंकि मुख्य कोच पहले खिताब की तलाश में टीम को तैयार करना चाहते थे। कोलकाता नाइट राइडर्स के आईपीएल विजेता कप्तान श्रेयस अय्यर को पंजाब किंग्स ने 26.75 करोड़ रुपये में हासिल किया जिससे वह नीलामी में बिकने वाले दूसरे सबसे महंगे खिलाड़ी बन गए जबकि लेग स्पिनर युजवेंद्र चहल को 18 करोड़ रुपए में खरीदा गया जिससे वह टूर्नामेंट के सबसे महंगे स्पिनर बन गए। बाएं हाथ के तेज गेंदबाज अर्शदीप हाल में चहल को पछाड़कर भारत के सबसे ज्यादा टी20 विकेट लेने वाले गेंदबाज बने।

पंजाब किंग्स ने उन्हें 18 करोड़ रुपये में रिटेन करने के लिए अपने आरटीएम कार्ड का इस्तेमाल किया, इससे वह आईपीएल नीलामी के इतिहास में सबसे महंगे बिकने वाले भारतीय तेज गेंदबाज रहे। पोंटिंग ने 'द हॉबी गेम्स% पॉडकास्ट में अपनी रणनीति के बारे में बात करते हुए कहा कि तीन खिलाड़ी थे जिन्हें मैं लाना चाहता था। इनमें से एक खिलाड़ी अर्शदीप सिंह पंजाब किंग्स के साथ तीन या चार साल से है। उन्होंने कहा कि मैं एक ऐसे कप्तान को भी लाना चाहता था जिसके साथ मैंने पहले काम किया हो और जिसे काफी सफलता मिली हो। इसलिए हमने श्रेयस अय्यर को चुना। मैं युजी को भी लाना चाहता था। इसलिए हमारे पास जो भारतीय खिलाड़ी हैं वे परफेक्ट हैं।

बास्केटबाल स्टार जॉर्डन का बेटा ड्रग्स के साथ गिरफ्तार

फ्लोरिडा। अमेरिका के महान बास्केटबाल खिलाड़ी माइकल जॉर्डन का बेटा मार्कस जॉर्डन कोकीन के साथ गिरफ्तार किया गया है। यह घटना 4 फरवरी की है उस समय मार्कस जॉर्डन की लैम्बर्गिनी एसयूवी कार एक रेलवे ट्रैक के पास फंस गई थी। पुलिस अधिकारियों ने कार की जांच की तो पता लगा कि मार्कस शराब के नशे में थे। पूछताछ में मार्कस ने माना है कि उन्होंने पास के ही एक क्लब में शराब पी थी। इसके बाद पुलिस ने जब उनकी जांच पड़ताल की तो उनकी जेब से एक बैग मिला, जिसमें कोकीन मिली। इसके बाद उन्हें ऑरेंज काउंटी जेल में ले जाया गया जहां उन्हें 4 हजार अमेरिकी डॉलर करीब 3.50 लाख रुपए के बॉन्ड पर जमानत मिल गयी। मार्कस पहली बार ही नहीं पकड़े गये हैं। इससे पहले भी वह साल 2012 में ओमाहा के नेब्रास्का में दो महिलाओं के साथ विवाद को लेकर गिरफ्तार किया गया था। इसके अलावा वह साल 2024 में फ्रांस में छुट्टियां मनाने गए थे। उस दौरान उनकी कुछ तस्वीरें भी सोशल मीडिया पर वायरल हुई थी। इसमें वह सफेद रंग की कुछ चीज को सूंघने में व्यस्त दिखे थे। जॉर्डन एनबीए के स्टार खिलाड़ी रहे हैं। प्लेयर थे। संन्यास के बाद वह कारोबारी बन गये। अब उनकी नेटवर्थ हजारों करोड़ में है। फोबर्स मैग्जीन के अनुसार साल 2024 तक माइकल जॉर्डन का कुल नेटवर्थ 350 करोड़ अमेरिकी डॉलर तकरीबन 3000 हजार करोड़ से भी ज्यादा है। जॉर्डन की कमाई का मुख्य जरिया बिजनेस के अलावा एनबीए की टीम में उनकी हिस्सेदारी से होती है।

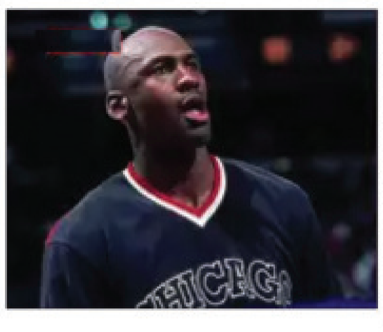

चैम्पियंस ट्रॉफी में बुमराह नहीं खेले तो भारतीय टीम की जीत की संभावनाएं कम होंगी : शास्त्री

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कोच रवि शास्त्री ने कहा है कि अगर तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह नहीं खेले तो आईसीसी चैम्पियंस ट्रॉफी में भारतीय टीम की जीत की संभावनाएं कम हो जाएंगी। बुमराह अभी अपनी पीठ के दर्द से उबरे नहीं और फिटनेसे हासिल करने का प्रयास कर रहे हैं। शास्त्री का मानना है कि बुमराह की संभावित अनुपस्थिति भारत के अभियान को काफी कमजोर कर सकती है, जिससे उनकी जीत की संभावना लगभग 30-35 फीसदी कम हो जाएगी। 2024 में शानदार प्रदर्शन करने वाले बुमराह को हाल ही में आईसीसी पुरस्कारों में आईसीसी पुरुष क्रिकेटर ऑफ द ईयर और आईसीसी पुरुष टेस्ट क्रिकेटर ऑफ द ईयर अवॉर्ड मिला था। बुमराह ने भारत के विजयी पुरुष टी20 विश्व कप अभियान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी में भी बुमराह का प्रदर्शन शानदार रहा। सिडनी में खेले गए आखिरी टेस्ट में वह पीठ में ऐंठन के कारण मैदान से बाहर हो गए। वह चैंपियंस ट्रॉफी टीम में शामिल है लेकिन इंग्लैंड के खिलाफ आगामी तीन मैचों की एकदिवसी सीरीज से बाहर हैं, इससे उनकी फिटनेस पर सवाल उठ रहे हैं। शास्त्री ने आईसीसी समीक्षा में बुमराह को टीम में वापस लाने के खिलाफ दृढ़ता से सलाह दी। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि भारत का अंतरराष्ट्रीय कैलेंडर काफी व्यस्त है और एक टूर्नामेंट के लिए अपने प्रमुख तेज गेंदबाज को जोखिम में डालने से खतरनाक परिणाम हो सकते हैं। शास्त्री ने कहा कि मुझे लगता है कि यह उच्च जोखिम है। भारत के लिए बहुत बड़ा क्रिकेट आने वाला है। अपने करियर के इस पड़ाव पर मुझे लगता है कि ऐसा नहीं होता कि आप उसे अचानक एक गेम के लिए वापस बुलाए और कहें कि अच्छा प्रदर्शन करो लेकिन जब आप चोट से वापसी करते हैं तो यह इतना आसान नहीं होता।

मध्य प्रदेश को जल्द मिलेगा एक नया टाइगर रिजर्व : मोहन यादव

एजेंसी

भोपाल : मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि मध्य प्रदेश को जल्द ही एक नया टाइगर रिजर्व मिलने वाला है। माधव टाइगर अभ्यारण्य जल्द ही राज्य का नौवां टाइगर रिजर्व बनेगा। इसके लिए केंद्र सरकार की स्वीकृति मिल गई है। नए टाइगर रिजर्व की अधिसूचना कभी भी जारी हो सकती है। इसके लिए औपचारिकताएं पूरी करने की प्रक्रिया अंतिम दौर में है। माधव टाइगर अभ्यारण्य के टाइगर रिजर्व बनने से चंबल अंचल में वन्य जीवों की संख्या बढ़ेगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने गुरुवार को सोशल मीडिया के माध्यम से कहा कि मध्य प्रदेश वन्य जीवन संरक्षण में नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है।

कूनो में वीरा के दो नए शावकों को मिलाकर कुल 26 चीते हो गये हैं। इन चीतों की मॉनिटरिंग के लिये दो दल गठित किए गए हैं। बुधवार को कूनो क्षेत्र में पांच चीते छोड़े गए, इनमें से तीन का जन्म तो प्रदेश में ही हुआ है। इस प्रकार अब सात चीते स्वयं को मध्य प्रदेश की आबोहवा में ढाल रहे हैं। पहले छोड़े गए चीते न केवल शिकार कर रहे हैं, अपितु कुशलता से जंगल में विचरण कर रहे हैं। प्रकृति, जीव जगत और मानव जीवन के संतुलन की यह अनमोल झलक राज्य में दिखाई दे रही है। सभी लोग इस आनंद और रोमांच का अनुभव कर रहे हैं। यह वन्य जीवों के संरक्षण के लिए राज्य सरकार की प्रतिबद्धता का प्रतीक है। यह इस बात का प्रमाण है कि मध्य प्रदेश में वन्यजीवों के लिए सबसे अनुकूल वातावरण है। गौरतलब है कि मध्य प्रदेश में फिलहाल आठ टाइगर रिजर्व हैं। इनमें संजय दुबरी टाइगर रिजर्व, नौरादेही टाइगर रिजर्व, पन्ना टाइगर रिजर्व, सतपुड़ा टाइगर रिजर्व, बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व, पेंच टाइगर रिजर्व, कान्हा टाइगर रिजर्व और रातापानी टाइगर रिजर्व शामिल हैं। इनमें रातापानी को हाल ही में आठवां टाइगर रिजर्व घोषित किया है। अब माधव नेशनल पार्क के टाइगर रिजर्व बनने से यह संख्या बढ़कर नौ हो जाएगी, जो प्रदेश में बाघों की बढ़ती संख्या और संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

मध्य प्रदेश में हैं 785 बाघ-
मध्य प्रदेश में 2022 की बाघों की जनगणना के अनुसार 785 बाघ हैं। साल 2018 में यह संख्या 526 थी, जो 2022 में उल्लेखनीय वृद्धि के साथ 785 हो गई थी। इसी के साथ मध्य प्रदेश ने टाइगर स्टेट का तमगा भी पुनः हासिल कर लिया था।

हिन्दू युवाओं में संस्कारों का हो रहा क्षरण : बजरंग लाल बांगड़ा

एजेंसी

महाकुम्भ नगर : विश्व हिन्दू परिषद के प्रन्यासी मण्डल व केन्द्रीय प्रबंध समिति की त्रिदिवसीए बैठक सात फरवरी से झूंसी स्थित महाकुम्भ मेला क्षेत्र में बने विहिप के महाशिविर में होगी। इस बैठक में हिन्दू युवाओं की सामाजिक चुनौतियां जैसे हिन्दू युवाओं में संस्कारों का क्षरण, धार्मिक आस्था के प्रतीकों में कमी आना, विवाह देर से होना व युवाओं में नशे की लत जैसे विषयों पर चर्चा होगी। यह जानकारी विश्व हिन्दू परिषद के अंतर्राष्ट्रीय महामंत्री बजरंग लाल बांगड़ा ने गुरूवार को विहिप के शिविर में आयोजित प्रेसवार्ता में दी। उन्होंने बताया कि बांग्लादेश में राजनैतिक सत्ता का हस्तांरण होने के बाद से लगातार हिन्दुओं का उत्पीड़न हो

रहा है। मंदिरों को ध्वस्त किया गया है। बहनों की इज्जत लूटी गयी है। यह घटनाएं अभी बंद नही हुई हैं। हिन्दू समाज के लिए यह चिंता का विषय है। बैठक में हिन्दू मंदिरों की सरकारी नियंत्रण से मुक्ति, जनसंख्या असंतुलन, वक्फ बोर्ड के निरंकुश व असीमित अधिकार, बांग्लादेश में हिन्दू उत्पीड़न की पराकाष्ठा तथा अयोध्या के बाद काशी और मथुरा जैसे पवित्र धार्मिक स्थलों की मुक्ति के लिए भी चर्चा होगी। इसके अलावा संगठन विस्तार तथा विभिन्न राज्यों में हिन्दू समाज से जुड़े कुछ विशेष मुद्दों के विषय में भी विचार विमर्श होगा। विहिप के महामंत्री ने बताया कि हिन्दू समाज अनेक वर्षों से सामाजिक कुप्रथाओं से जूझ रहा है। छुआछूत की मुक्ति के लिए और सामाजिक समरसता को बढ़ाने के लिए विहिप ने अनेक अभियान अपने हाथ में लिए हैं। हिन्दू परिवार व्यवस्था को मजबूत करना, पर्यावरण की रक्षा करना तथा हिन्दू समाज को स्व बोध कराना आज के समय में एक महती आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि बैठक में संगठनात्मक दृष्टि से देशभर के 47 प्रान्तों के साथ भारत के बाहर से भी अनेक देशों के प्रतिनिधि भाग लेंगे। इसमें विहिप के अध्यक्ष आलोक कुमार, संगठन महामंत्री मिलिंद परांडे, सह संगठन मंत्री विनायक राव देशपांडे, बजरंग दल, मातृशक्ति, दुर्गा वाहिनी के साथ सभी आयामों के अखिल भारतीय प्रमुख तथा क्षेत्रों, प्रान्तों के मंत्री व संगठन मंत्री सहित अनेक पदाधिकारी भाग लेंगे।

विदेशों में छात्रों के कल्याण पर नजर रखती है सरकार : जयशंकर

नई दिल्ली: विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर ने गुरुवार को राज्यसभा में कहा कि सरकार विदेशों में पढ़ने वाले छात्रों के कल्याण पर सावधानीपूर्वक नजर रखती है। किसी तनाव या हिंसा प्रभावित क्षेत्र में किसी भी आपात स्थिति के लिए सरकार हमेशा एक योजना बनाकर रखती है। प्रश्नकाल के दौरान विदेश मंत्री ने कहा कि हम उनके कल्याण पर भी सावधानीपूर्वक नजर रखते हैं। जब भी किसी तनाव या हिंसा की आशंका की स्थिति होती है, उस समय हम छात्रों को सचेत करते हैं। जब भी हमें उड़ाने संचालित करने या उन्हें बचाने जैसे कोई और कदम उठाने की जरूरत होती है, तो हम तैयार रहते हैं।

राष्ट्रपति जरदारी ने बीजिंग में चीन के प्रधानमंत्री कियांग से की मुलाकात

एजेंसी

इस्लामाबाद/बीजिंग : पाकिस्तान के राष्ट्रपति आसिफ अली जरदारी ने आज बीजिंग में चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे और द्विपक्षीय सहयोग को मजबूत करने के तरीकों पर चर्चा करने के लिए चीन के प्रधानमंत्री ली कियांग से मुलाकात की। राष्ट्रपति सचिवालय ने इस्लामाबाद में जारी बयान में कहा गया कि उच्चस्तरीय बैठक ग्रेट हॉल ऑफ द पीपल में हुई। दोनों पक्षों ने नवीकरणीय ऊर्जा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, बुनियादी ढांचे और कृषि में गहन सहयोग पर जोर देते हुए सीपीईसी 2.0 को आगे बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया। चर्चा का उद्देश्य साझा आर्थिक प्रगति में तेजी लाना और दोनों देशों के बीच आम समृद्धि को बढ़ावा देना था। द न्यूज इंटरनेशनल की खबर के अनुसार, जरदारी और कियांग ने द्विपक्षीय व्यवसाय और आर्थिक सहयोग बढ़ाने के अवसरों पर भी चर्चा की। राष्ट्रपति जरदारी ने चीन-पाकिस्तान की स्थायी और गहरी जड़ों वाली ऑल-वेदर स्ट्रैटेजिक को-ऑपरेटिव पार्टनरशिप के महत्व पर चर्चा की। उन्होंने दोनों देशों के बीच संबंधों को और मजबूत करने की पाकिस्तान की प्रतिबद्धता दोहराई। इस उच्चस्तरीय बैठक में राष्ट्रपति जरदारी के अलावा उपप्रधान मंत्री इशाक डार और मुख्यमंत्री मुराद अली शाह भी मौजूद रहे।

सीमेंट मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन ने बजट में देश के इंफ्रास्ट्रक्चर विकास पर फोकस को लेकर जताई संतुष्टि

एजेंसी

नई दिल्ली/मुंबई : सीमेंट निमार्ता संघ (सीएमए) ने आज केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा पेश किए गए 2025-26 के बजट को लेकर अपनी संतुष्टि जताई। इस बजट में भारत की आर्थिक विकास के लिए एक मजबूत और दूरदर्शी योजना पेश की गई है, जिसमें ग्रामीण और शहरी विकास, इंफ्रास्ट्रक्चर निवेश में बढ़ोतरी, रोजगार सृजन और लोगों, अर्थव्यवस्था और नवाचार में रणनीतिक निवेश पर जोर दिया गया है। बजट पर टिप्पणी करते हुए, नीरज अखोरी, प्रेसिडेंट, सीमेंट मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन और मैनेजिंग डायरेक्टर, सीमेंट लिमिटेड, ने कहा, सीएमए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में प्रस्तुत केंद्रीय बजट की सराहना करता है, जो कि समग्र और समावेशी

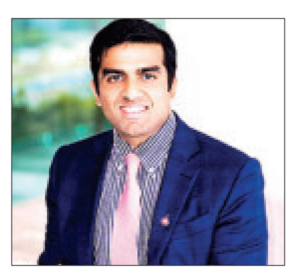

विकास पर ध्यान केंद्रित करता है। बजट भारत के विकास लक्ष्यों को आगे बढ़ाने के लिए एक मजबूत और सुदृढ़ अर्थव्यवस्था बनाने की दिशा में एक परिवर्तनकारी यात्रा को और सशक्त बनाता है। सरकार द्वारा घोषित विभिन्न पहलों ने लोगों की आकांक्षाओं और देश की आर्थिक वृद्धि की भविष्य की जरूरतों के बीच सही संतुलन बनाए रखा है। राज्यों में इंफ्रास्ट्रक्चर में बढ़ी हुई निवेश प्राथमिकता सीमेंट क्षेत्र के विकास के लिए नए अवसर और रास्ते खोलती है। हम इंफ्रास्ट्रक्चर पर निरंतर ध्यान केंद्रित करने की सराहना करते हैं। साथ ही, हम राष्ट्र की प्रगति में साझेदार बनने की अपनी प्रतिबद्धता को जारी रखेंगे। उन्होंने आगे कहा, बड़े पैमाने पर हाउसिंग और इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स पर बढ़ता खर्च निर्माण सामग्री की मांग में भी वृद्धि करेगा, जिससे क्षमता विस्तार और सतत प्रथाओं में नवाचार को बढ़ावा मिलेगा। हमें पूरा यकीन है कि इन चुनौतियों के बावजूद, ये उपाय सीमेंट उद्योग को इस वित्तीय वर्ष में स्थापित सीमेंट क्षमता के 6 प्रतिशत से अधिक की लगातार विकास दर हासिल करने में मदद करेंगे। बजट 2025-26 में किए गए नीतिगत सुधार सरकार के समाजिक और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने की मंशा को जाहिर करते हैं।

विद्या भारती शिक्षा के साथ संस्कार देने का भी करता है कार्य : हेमचन्द्र

एजेंसी

महाकुम्भ नगर : विद्या भारती का मुख्य उद्देश्य शिक्षा के साथ-साथ छात्र-छात्राओं को भारतीय संस्कार भी देना है, जिससे उनके अन्दर राष्ट्रभक्ति का भाव जागृत हो और वह एक अच्छे इन्सान बनकर राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दें सके।

उक्त विचार क्षेत्रीय संगठन मंत्री हेमचन्द्र ने गुरूवार को विद्या भारती पूर्वी उत्तर प्रदेश क्षेत्र द्वारा आयोजित महाकुम्भ दर्शन शिविर में कानपुर प्रान्त संस्कार केन्द्रो के छात्र-छात्राओं के तीन दिवसीय शिविर में व्यक्त किए। उन्होंने संस्कार केन्द्र के छात्र-छात्राओं एवं उनके अभिभावकों को सम्बोधित करते हुये कहा कि प्रत्येक माता पिता अपनी सन्तान

को ज्ञान के साथ-साथ संस्कारवान भी बनाना चाहते हैं। उन्होंने राम-रावण का उदाहरण देते हुये कहा कि रावण अत्यन्त ज्ञानी होने के साथ-साथ बलशाली भी था। किन्तु उनके अन्दर सुसंस्कार न होने के कारण संसार में उनकी छवि एक राक्षस के रुप में विख्यात है। जबकि राम अपने ज्ञान एवं सुसंस्कारों के कारण से संसार में मयार्दा पुरुषोत्तम के रुप में पूजे जाते हैं। इसी प्रकार संस्कारयुक्त शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान ने विद्यालयो की शुरूआत की। इस समय पूरे देश के अन्दर लगभग 12,500 एकल शिक्षा केन्द्र चल रहे हैं। पूर्वी उत्तर प्रदेश क्षेत्र में भी 1000 केन्द्र चल रहे हैं। विद्या भारती के तहत हजारों शिक्षण संस्थान संचालित होते हैं। क्षेत्रीय सेवा प्रमुख योगश ने कार्यक्रम की प्रस्ताविकी रखते हुये कहा कि विद्या भारती द्वारा आज संस्कार केन्द्रों के माध्यम से समाज के वंचित एवं झुग्गी झोपाड़ियों मे निवास करने वाले छात्र-छात्राओं को शिक्षा देने का जो कार्य किया जा रहा है, वह अत्यन्त ही सराहनीय एवं नेक कार्य है। हमारे देश में अनेको अभावग्रस्त क्षेत्र भी हैं, जहाँ विद्या भारती ने विचार किया कि ऐसे क्षेत्र के छात्र-छात्राओं को भी अच्छी शिक्षा एवं संस्कार मिल सकें। इसके लिए इन क्षेत्रों में एकल शिक्षा केन्द्र एवं संस्कार केन्द्र का प्रारम्भ किया जाये।

एक नजर

भूटान आर्मी चीफ ने किया पूर्वी कमान मुख्यालय का दौरा

कोलकाता: रॉयल भूटान आर्मी के चीफ ऑपरेशंस ऑफिसर (सीओओ) लेफ्टिनेंट जनरल बाटू शेरिंग वेस्ट बंगाल के दौरे पर हैं। गुरुवार को उन्होंने कोलकाता स्थित विजय दुर्ग में भारतीय सेना के पूर्वी कमान मुख्यालय का दौरा किया। इस दौरान पूर्वी कमान मुख्यालय के विजय स्मारक पर श्रद्धांजलि अर्पित कर भारतीय सेना के वीर जवानों को नमन किया। साथ ही भारतीय सेना की दृढ़ता, समर्पण और पेशेवर क्षमता की सराहना की। रायल भूटान के आर्मी चीफ पांच फरवरी को दो दिवसीय दौरे पर कोलकाता आए हैं। इस दौरान उन्होंने भारत की पूर्वी कमान के जनरल ऑफिसर कमांडिंग-इन-चीफ लेफ्टिनेंट जनरल राम चंदर तिवारी से मुलाकात की। दोनों सैन्य अधिकारियों ने भूटान और भारत की सुरक्षा को मजबूत करने के लिए रक्षा सहयोग को और बढ़ाने, विशेष रूप से अत्याधुनिक तकनीक के क्षेत्र में सहयोग के उपायों पर चर्चा की। इस दौरान लेफ्टिनेंट जनरल बाटू शेरिंग ने अन्य वरिष्ठ सैन्य अधिकारियों से भी मुलाकात की। यह दौरा भारत और भूटान की सेनाओं के बीच लंबे समय से चले आ रहे मैत्रीपूर्ण संबंधों को और मजबूत करने में सहायक रहा।

यूक्रेन की सेना ने नेपाल के दो युवकों को नौ महीने बाद छोड़ा

काठमांडू: रूस-यूक्रेन युद्ध के दौरान यूक्रेन की सेना के कब्जे में रहे नेपाल के दो युवकों को नौ महीने बाद रिहा कर दिया गया। दोनों को प्रवासी नेपाली संघ यूक्रेन को सौंपा गया। प्रवासी नेपाली संघ यूक्रेन के अध्यक्ष डॉ. बद्री केसी ने टेलीफोन पर बताया कि पिछले नौ महीने से यूक्रेन के डिटेंशन सेंटर में रहे नेपाल के तेह्रथुम जिले के निवासी 29 वर्षीय फुर्वा शेरपा और इसी जिले के 39 वर्षीय सांबो शेरपा को यूक्रेन की सेना ने रिहा कर दिया है। जर्मनी स्थित नेपाली राजदूत डॉ. शैल रूपखेती दोनों युवकों को लेने के लिए कीव पहुंचे। दोनों युवकों को टर्किश एयर से काठमांडू भेज दिया गया है। यह विमान शुक्रवार दोपहर काठमांडू पहुंचेगा। राजदूत रूपखेती ने बताया कि नौकरी के झांसे में करीब 10 महीने पहले ये दोनों युवक यूक्रेन आए थे। नई दिल्ली स्थित एक कंसल्टेंसी के जरिये कीव पहुंचे इन दोनों को रूस के लिए जासूसी करने के आरोप में गिरफ्तार कर डिटेंशन सेंटर में रखा गया। उधर, इन दोनों की रिहाई पर परिवार वालों ने खुशी व्यक्त की है।

गणेश मंदिर की स्थापना को लेकर 108 कुमारी कन्याओं ने निकाली कलश यात्रा

सहरसा: शहर के नया बाजार पीडब्लूडी कॉलोनी में भगवान गणेश की नागर शैली में अद्भुत मंदिर बनाया गया है, जो लोगों के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र बना हुआ है ।शहर के नया बाजार पीडब्लूडी कैम्पस मे नव निर्मित श्री श्री 108 गणेश मंदिर में मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा को लेकर कुमारी कन्याओं द्वारा कलश शोभा यात्रा निकाली गई। यह शोभा यात्रा पीडब्लूडी मनोकामना शिव मंदिर से निकलकर नया बाजार नरियार रोड हनुमान चौक बायपास रोड आईबी हवाई रोड होते हुए कार्यक्रम स्थल पर कलश शोभा यात्रा पहुंची। मंदिर के संस्थापक व मुख्य यजमान घनश्याम चौधरी व रीना चौधरी ने बताया कि अपने पिता चेतन चौधरी एवं माता चंद्रकला देवी की स्मृति में गणेश मंदिर की स्थापना कर मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा धूमधाम से की जा रही है। इसमें पंडित रामदेव कुमर, आनंद कुमार, चंद्र किशोर कुमर, रमन कुमर, सिंघेश्वर स्थान के पंडा जी दीपक कुमार ठाकुर, मंदिर के पुजारी विजय कुमार झा के द्वारा पूरे विधि विधान एवं वैदिक मित्रों के उच्चारण के साथ प्राण प्रतिष्ठा किया जा रहा है।

संक्षिप्त खबरें

दुनिया की आधी से अधिक यात्रा पूरी करने पर नौसेना प्रमुख ने तारिणी टीम से की वर्चुअल वार्ता

नई दिल्ली: आईएनएसवी तारिणी से दुनिया की परिक्रमा करने निकलीं नौसेना की दो महिला अधिकारियों ने अब आधी से अधिक यात्रा पूरी कर ली है। नौसेना प्रमुख एडमिरल दिनेश के त्रिपाठी ने टीम तारिणी से वर्चुअली बातचीत करके अब तक की उनकी प्रगति पर संतोष जताया। टीम तारिणी ने 50 डिग्री दक्षिणी अक्षांश को पार कर लिया है और अब आगे की यात्रा के लिए नौकायन कर रही है। नौकायन पोत तारिणी से नौसेना की दो साहसी महिला अधिकारी लेफ्टिनेंट कमांडर दिलना के और लेफ्टिनेंट कमांडर रूपा ए पिछले साल 02 अक्टूबर को इस चुनौतीपूर्ण अभियान पर गोवा से रवाना हुईं थीं। आठ महीने की अवधि में दोनों महिलाएं बिना किसी बाहरी सहायता के केवल पवन ऊर्जा पर निर्भर करते हुए 21,600 समुद्री मील की यात्रा करने निकली हैं। गोवा से रवाना होने के बाद से 12 हजार से अधिक समुद्री मील की यात्रा करके परिक्रमा अभियान का आधा से अधिक हिस्सा पूरा कर लिया है। टीम तारिणी ने 04 जनवरी को न्यूजीलैंड के लिटलटन से प्रस्थान किया और इस तीसरे चरण में उन्होंने बहुत अधिक कठिन समुद्रों और दो तूफानों को पार किया है। टीम ने पृथ्वी ग्रह पर सबसे दूरस्थ स्थान प्वाइंट निमो को भी पार किया है। सीएनएस ने दोनों महिला नौसेना अधिकारियों से वार्ता के दौरान कहा कि आपके मुस्कुराते चेहरे आपकी दृढ़ता, दृढ़ संकल्प और कभी हार न मानने की भावना को दशार्ते हैं, जो आपको देखने वाले सभी लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। भारतीय नौसेना और राष्ट्र को आप पर गर्व है। उन्होंने लेफ्टिनेंट कमांडर दिलना को उनके जन्मदिन (07 फरवरी) की पूर्व संध्या पर शुभकामनाएं दीं और चालक दल को उसी उत्साह और व्यावसायिकता के साथ अपनी यात्रा जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया।

जैन मुनियों ने सभी लोगों को एक करने का काम किया : अमित शाह

रायपुर: केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने गुरुवार को छत्तीसगढ़ के डोंगरगढ़ चंद्रगिरी में कहा कि सभी लोगों को एक करने का काम जैन मुनियों ने किया है। आचार्य जी का जीवन धर्म, संस्कृति और राष्ट्र को समर्पित है। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री के अलावा वित्त मंत्री ओपी चौधरी, जैन आचार्य और मुनि सहित अन्य जनप्रतिनिधि भी मौजूद हैं। शाह राजनांदगांव जिले के डोंगरगढ़ चंद्रगिरी में आयोजित 'प्रथम समाधि स्मृति महोत्सव को संबोधित कर रहे थे। गृहमंत्री शाह ने आचार्य विद्यासागर महाराज की समाधि स्थल पर पहुंच कर उन्हें नमन करते हुए कहा कि सभी लोगों को एक करने का काम जैन मुनियों ने किया है। आचार्य जी का जीवन धर्म, संस्कृति और राष्ट्र को समर्पित है। महान संत को मैं प्रणाम करने आया हूं, उनके लिखे मूकमाटी महाकाव्य में अनेक लोगों ने पीएचडी की है। आज मैं आचार्य जी की कही बात दोहराना चाहता हूं, भोजन के थाल में जितने व्यंजन होते हैं, वह उतना ही अच्छा होता है। भारत में अलग-अलग धर्म संस्कृति है जो अपने में अलग है। केन्द्रीय गृहमंत्री ने कहा कि मैं भी उनका अनुयायी हूं। इससे पहले रायपुर एयरपोर्ट पर मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय, उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा और उपमुख्यमंत्री अरुण साव ने उनका स्वागत किया। इसके बाद केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह के साथ सीएम साय डोंगरगढ़ गए।

फसल अवशेष जलाने से मृदा एवं पर्यावरण होता है दूषित : डॉ खलील खान

कानपुर: चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अंतर्गत संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर ग्राम रायपुर में फसल अवशेष प्रबंधन के लिए ग्राम स्तरीय जागरूकता कार्यक्रम चलाया गया। जिसमें किसानों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। यह बातें गुरुवार को मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान ने कही। उन्होंने बताया कि फसल अवशेषों को खेतों में जलाने से मृदा एवं पर्यावरण दूषित होता है। साथ ही जमीन में कम हो रहे सूक्ष्म पोषक तत्वों के बारे में भी लाभकारी जानकारी दी। खेतों में मिलने वाली मशीनों के बारे में विस्तार पूर्वक सुझाव दिए। फसल अवशेषों को जलाने से होने वाली हानियों के बारे में भी अन्नदाताओं को समझाया। पशुपालन वैज्ञानिक डॉक्टर शशिकांत ने कृषकों से अपील की अपने खेतों में फसल अवशेष ना जलायें। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि किसानों को बीज उत्पादन कर आमदनी बढ़ाना चाहिए और उसके उपाय भी बताये। पराली नहीं जलाएंगे, खेत में मिलाएंगे ऐसे स्लोगन के जरिये किसानों को जागरूक किया। फसल अवशेषों का सुंदर काम, उपज बढ़ाने में इनका योगदान लेंगे। कार्यक्रम को सफल बनाने में शुभम यादव एवं गौरव शुक्ला का विशेष योगदान रहा। इस अवसर पर गांव के प्रगतिशील कृषक राम सिंह, बच्ची लाल,अशोक कुमार, मोहनलाल, रामेश्वर सहित एक सैकड़ा से अधिक कृषक एवं महिला कृषक उपस्थित रहे।

महाकुम्भ में पहली बार दुनिया के कई देशों के बौद्ध भिक्षुओं ने लगाई संगम में डुबकी

महाकुम्भ नगर : दुनिया के कई देशों के भंते, लामा व बौद्ध भिक्षुओं ने गुरूवार को प्रयागराज संगम में आस्था की डुबकी लगाकर दुनिया को सनातन की एकता का संदेश दिया। बुद्ध शरणं गच्छामि, धम्मं शरणम् गच्छामि, संघं शरणं गच्छामि का उदघोष करते हुए 500 से अधिक बौद्ध भिक्षु संगम तट पर पहुंचकर डुबकी लगाई। भगवान बुद्ध की करूणा हो, सम्राट अशोक अमर रहें के नारे से संगम तट गूंज उठा। संगम में डुबकी लगाने के बाद बौद्ध भिक्षुओं सनातन के प्रति गर्व की अनुभूति कर रहे थे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय कार्यकारिणी के सदस्य इन्द्रेश कुमार की उपस्थित में कई देशों के बौद्ध भिक्षुओं ने सनातन व बौद्ध एकता का संकल्प लिया। इस दौरान निर्वासित तिब्बत की रक्षामंत्री गैरी डोलमाहम ने कहा कि प्रयागराज की पावन धरती पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के मार्गदर्शन में हम सब एक साथ आये हैं। महाकुम्भ में हम बौद्ध व सनातनी एक साथ आए हैं और कदम मिलाकर चल रहे हैं। म्यांमार से आये भदंत नाग वंशा ने कहा कि मैं पहली बार महाकुम्भ में आया हूं। हम बौद्ध व सनातन में बहुत ही समानता है। हम लोग विश्व शांति के लिए काम करते हैं। हम भारत और यहां के लोगों को खुश देखना चाहते हैं। अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध शोध संस्थान के भदंत शील रतन ने कहा कि हम सब एक थे एक हैं एक रहेंगे। हम सब को सुखी करने के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं।

नवबिहार मीडिया प्रा. लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. रामाज्ञा तिवारी द्वारा विश्वेश्वरा पब्लिकेशनंस एलएलपी की ओर से शिवासाईं पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, नियर टेंडर बागीचा पेट्रोल पंप, रातू, रांची (झारखंड)- 835222 से मुद्रित एवं उद्योग भवन मार्ग, 19 A कोकर औद्योगिक क्षेत्र रांची- 834001 (झारखंड) से प्रकाशित। संपादक- डॉ. रामाज्ञा तिवारी, प्रबंध संपादक- पंकज कु. सिंह*, प्रधान संपादक- देवेंद्र सिंह (*पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार), प्रबंधक- नरेंद्र कुमार सिंह. 9334331934, 9386895799, 9507466535, RNI Regn.: JHAHIN/2011/40902